

१॥ नमः श्री ३६ कृष्णाय ॥

कर्मविधि संग्रह भाद ४॥

श्री ३६ कृष्णाय

2587



આશા સરકારી

2587

ASHA ARCHIVES

कवियः॥ वाकः॥ उं सत्त्ववज्ज नत्त्ववज्ज धर्मवज्जि मूडाग (धनसहि नम्यद्वियदस्यवे लावनस्य सुवइ ४ ख विनासक
स्यः नत्त्ववज्ज नत्त्ववज्ज सांनिकलं कवाय्यं॥ ॥ थन यत्त कस्मि उगल सिद्धवस वातया दिगभासं वा १ दिगुदयान
वद्यु सूर्ययान वा १ मवायान वा १॥ थ कालि नं मुवायान नक॥ वाकः॥ उं आ ४ सर्वत आगत यत्त मधुषा
स्य नदं स्यादा॥ ॥ कृमल खनं नावायक॥ उं की स्यादा॥ ॥ स्वपालनक स्वपालनावायक॥ ॥ थन कल
वा १ नम्यं कलं ख वज्ज॥ ॥ थन जाकि कुल नम्यं कय खलात् विकं नम्यं कि ग्वल ५ नम्यं स्व कयक
विकननं नित्यक॥ उं सर्वत आगत काय विमा धन स्वादा॥ ॥ थन मिच्छुलनम जंगुलिचा नम्यं दिगभासं लश
झाय॥ उं सर्ववत्त रुरु खन स्वादा॥ ॥ पुन कृमल ख कवियः॥ उं सर्वत आगत नत्त्ववज्ज धर्मवज्जि मूडाग

१
(गंन सहितस्य द्विपदस्य चेन्नाचनस्य सवद्विनासकस्य नत्तमद्रतं वक्तुं शक्तिं कथयिष्यामि ॥ धनयव
गर्वनं दाय ॥ नामकुर्य ॥ उं अ ॥ वडल निव क हू खन स्वादा ॥ ॥ धन वडल जास्यं पञ्चगंधन नित्यक ॥ उं अ मूक हू
व न थ ग न नाम कुर्य वस्व ॥ ॥ धन मिचु नतदक सं धलिस यन विय ॥ लनं री न क र सि हू लय ॥ वड
नं थिय ॥ उं सु पृष्ठि न वड स्वादा ॥ ॥ धन च कयु जा याय ॥ ॥ म कुल थिल कि न न ॥ आ सि वा द ॥ स
यन नय ॥ चि न यू जा ॥ द रु ना यू जा ॥ चि न नं कि न क ॥ दि गु म द्र य क य ॥ दि दि व लि क य ॥ ॥ दि गु म द्र
य काय ॥ स म या च क ॥ ग ध च क ॥ क लं का य ॥ मा शि क य ॥ स्वां का का य ॥ ॥ छू ति डा न क र्म वि धि स मा य ॥ ॥
॥ ६३ ॥ ॥ उं न म ॥ श्री व ड स स्वाय ॥ ॥ अ न रु ला स न रु ल या स न वि धि ॥ ॥ क र्म वि धि ॥ थं या न मा ॥ ॥

॥ कथं कुतः सखायः लज्जिधनः ॥ ॥ कायनाह्नित्याय ॥ कर्मसमानकं ॥ ॥ सति कुतः ज्ञायां पित्रा लघु
दकायः युजाह्नितः ॥ ५ दयकः ॥ नडाकथागतमा ॥ नडाकथास्य थापनायाय ॥ कृते सयं मनः पक्वगर्वपात्र
॥ सियति नककुजा निमात्रुः कुमालिकुजा ॥ दिदिवलि ॥ गालाय ॥ थायिं ॥ दिगुलिसप्तचरु ॥ कुमा
लियाह्नितः सखायः दक्षः थायिं सप्तचरु दक्षः थुनि
सखायः पक्वगर्वसाधनः पक्वगर्ववियः ॥ सि
थनसयं मनः कृते नडाकथा सकलं युजायाय ॥ थायिं युजा ॥ दशयुजा ॥ कामालियुजायाय ॥ ॥ दिदिवलिवि
यः ॥ ॥ थनमुवाह्नितः सयं हयः ॥ स्वह्नितः सयं हयः ॥ गुनमं कुलदनकः ॥ मनः युजायाय ॥ विमर्जनयायकः ॥ ॥

॥ यत्न म्वायाक स्वान कुरु नमस्यं वाक ॥ उं स्व हा व शुर्वा ह्यादि x ॥ स्व कि वा कं पद पंतय ॥ कय मिला व ड ग
 लवा म न रु नं गाय ॥ य अ ग व्य विय ॥ ॥ यत्न कुरु नमस्यं स्वान या न क ॥ उं श्री व ड ल रु व ल य रु स व ड पा शि
 समु छि ता च सहि न स्य अ मा य सि छि य त्त ग लं दित क लं य ल मा र्थ सि छि न त्त रु ल रु व नु अ नि कं लं त वा यं
 ॥ ॥ यत्न दि ग हा स्यं नि सा रु ल ड फ़ाय ॥ स्व सि वा क नं ॥ ॥ यत्न क उ या न दि ग हा स विय ॥ उं दि र्य वा
 स म्म स्वा दा ॥ ॥ दि ग हा स्यं रु प ल न विय ॥ उं वा र्ध ग ध न क वा स स्य स्वा दा ॥ ॥ यत्न गिय नि न सा ध न
 या य ॥ उं आ ४ स र्व स सा ध नी य स्वा दा ॥ ॥ दि ग हा स क य ॥ ॥ वृ द व हा व ड सूर्य या रु क य ॥ म्वा या न न
 क ॥ वा क ॥ उं आ ४ स मा धि रु ल डिन पु ड पु नि न स्वा दा ॥ स म सि न क ॥ ॥ उं उं स्वा दा ॥ नं स न क ॥ उं स र्व यि

३

मन्त्र
ॐ नमः

ॐ कायस्वाहा ॥ वाक्मधिनक ॥ सियमिनमामयानं लडाकाय ॥ ॥ थन ऊनकाक्रियायाय ॥ हनं ऊन
सखनं स्वान ॥ वाक् ॥ उं ऊमऊलं खादि x ॥ ॥ थन उयेननेहिनक ॥ उं वा धं ऊ धन क वासस्यस्वाहा ॥ ॥ नान
हलननियक ॥ उं सच्चिहलनरुषन स्वाहा ॥ ॥ ॥ थन रुडास्वधनयाय ॥ उं नमासर्ववृक्षनां उडावलं रुडाव
लंददक स्वाहा ॥ धाल ॥ ॥ आगंकुय ॥ ४४
थल साखलनिमं सकमांकासनक ॥ उं पाश
नावायक ॥ ॥ दथुलांनक ॥ उं समानायस्वाहा ॥ नावायक ॥ ॥ चालांनक ॥ उं शानायनमस्वाहा ॥ नावायक ॥ ॥
वलानंनक ॥ उं बानायनमस्वाहा ॥ नावायक ॥ ॥ कालानंनकायचिननकास्यनक ॥ उं दिवानायसमानाधिध्वन

सिन्ननस्त्रादा॥ नकातायादाडा॥ वातागंनय॥ नाचायक॥ उं आश्वमतंयुमिच्छस्त्रादा॥ ॥ वातासकलंवा॥ गस्यंक
 लंकाय॥ ॥ थननास्त्रागमय॥ स्वानमालानकरवायक॥ जनकरवातंकाखायक॥ सिरुंनय॥ वडनधिय॥ ॥
 गवय॥ गालविय॥ ॥ थनवाकयुजायाय॥ ॥ मकुलथिल॥ किगन॥ सताकल॥ क्रमायन॥ आशिवाद॥ ॥
 मकुलधय॥ सयंगय॥ विनयुजा॥ दक्रतायुजा॥ ॥ दिगुसक्रयक्रय॥ दिदिवलिक्कय॥ कमालियुजाक्रय॥ दि
 गुसक्रयकाय॥ कमालियास्त्रां सिधुकाय॥ स्वायदकालदिय॥ समयाचक्र॥ कडला॥ गनचक्रस॥ कमयर्थं नं
 यधूनकाडा॥ मचासामयान॥ जा॥ क॥ ध॥ आस्यं॥ गुखमनं॥ नक्रनं॥ नक॥ नाचायक॥ गुयालनय॥ गुयालनक॥
 ॥ धनधूनकाडा॥ दडापुमुखं॥ गुव्यान॥ कालय॥ नाचाय॥ कलंकाय॥ वय्य॥ मासिक्कय॥ स्वांकाकाय॥ मुखस

कथनाविधिः ॥

धनम् ॥ सहिकुनूकषुडानम् ॥ ॐ मिज्जरुलासनविधिसमायम् ॥ ॐ ॥ ॐ नमः ॥ वृद्धाय ॥ ॥ कथना वि
धानम् ॥ ॥ दामसहिमनं या नमः ॥ ॐ अ मयं मनः ॥ य च गवर्धया ॥ सु कर्मा लिङ्गि ॥ लिङ्गि ॥ ॥ थ नि युजा या यना
या मयं ॥ ॥ ॥ वा मयं गुनू म कुलया य ॥ य च ग वस्त्वधनम् ॥ य च ग रू विय ॥ सिधु नय ॥ म कुले थिल ॥ कि न न
संख वलि ॥ य ॥ मि स मा धिया य ॥ ॐ अ मयं मनः युजा ॥ जग्नि का ये न या य ॥ जग्ना इ मि या य ॥ थ यि युजा
य ॥ युजा या य ॥ य ॥ दामा इ ति ॥ ॥ थ न मूचा न स्व स्य दया ॥ स्व मि क स न या ॥ ॥ गु नू म कुल दन क म न
युजा या य ॥ वि स र्ज न या य ॥ य च ग वर्ध विय ॥ ॥ ॥ व न मय ॥ स्व मि वा क य दयं ॥ ॥ ला स ग्नि ल द्वा व ड
ग म वा स म रू नू मा य ॥ ॥ थ न लि विं चा स ॥ ॐ कुल मय ॥ स लि ख स चि क मय ॥ थं कालिनं दि ग मी स्यं म वा या

लडा क्लाय ॥ ॥ थका लित कितं गाल चा जान कं सा म्य र्या ना डी ला दामा म मा अ क थ क ॥ थन ना थिक या न हा य डाय या य
हा द क ना द २ का य ॥ पु क लं डा द वा च न डा क्लाय ॥ अ र वा य ॥ पु अ क न क ॥ क ल चि कं त सा य क ॥ अ व हा म ल नं मा ल क्लाय
क ॥ अ ल ख नं मा ल वा य क ॥ थ डी २ थ स नं य ॥ य क ग ह वि य ॥ ॥ थन म वा ना थ का डी अ ड कि का म सु को
डु २ १ नि य ड ड ड ड ड ॥ या न क य ना अ ड ड ड ड ल क य ना वि य ॥ वा क ॥ उं व ड संधि वं स्वा हा ॥ क य ना नी वि य क ॥ ॐ
॥ ॥ ना ना क ल न नी मि य क ॥ उं स र्व क ल न श क ल न स्वा हा ॥ ॥ कि क मा न ल डा क्लाय ॥ उं हा ४ स्वा हा ॥ ॥ लि ड डि
क ड कि मि चाल डा क्लाय ॥ उं व ड स र व नं श्री स्वा हा ॥ ॥ शु मि ड नां वि य ॥ उं व ड न त्र उं ॥ ॥ मा ल म स्व मि वा य ॥ ध
लि स र्घ वि य ॥ व ना लितं चि न क ॥ व ड म ड ड ड म नं का र वा य क ॥ द सो क ल क्लाय ॥ ॥ थन व ड ड ड ड व ना चि न ना

५ पाहून २

नायनः धीनगन्धः धूम्रियामयूजायाय ॥ गवः गलः चयः ॥ किमनः ॥ ॥ थनयिमानडाकाडा ॥ वला स्रवकः ॥ मठ
॥ उं सर्वं न थागना नूवागयासि ॥ ० ॥ थनः सिनगनाडाकाया ॥ वलिंयियाडा दुनकाय ॥ कमान वला तुमान क
वा सकेनं गुन्यामलडाकाया ॥ ॥ थडा २ ॥ थसंमयः ॥ कमासिखक वियवाक ॥ उं वाधिविरुकावा ॥ सर्व
वाधिसंमयसंमय स्वकाजिष्याधुनमीतं न
यः वलिविय ॥ ॥ जिष्याधिवसयाय ॥ यम
मलायाक नूनियामक ॥ यूह्याय ॥ मकुलथिलः किमनः सनाकल ॥ जाजिवादः विभर्जनयाय ॥ सचंनय ॥ चित
पूजा दक्रनायूजा ॥ किमः निसलाविय ॥ वाधनक्य ॥ मवाकस्यः दशयु मखनं गुनः रुयिं ॥ थाकालि नकिंयिं ॥

[illegible]

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

मनःयकगङ्गायाः कृत्यकं सिधमपुनिमादिदडाधायनायाय ॥ ॥० वास्यं गुप्तमभुनयाय ॥ यकगवस्वधन
यकगवविय ॥ सिधनय ॥ मभुनथिप्रकिनन ॥ संखवलिकुय ॥ मि समाधियाय ॥ कृअ संयं मनः कृत्यकं सिध
मयूजा ॥ दडायूजा ॥ ॥ थन मुचात धलन दनक ॥ मन यूजा विमर्जन ॥ यकगवविय ॥ ॥ थन ध
नरुसनकचयुनं सूर्यविम्वचाय ॥ ॥ थन स्वानकृदाल मभुल उयकाडा दथुसंनय ॥ उं वडलस्य
सुलखेदं ॥ उं दिवाकन वलाचनाय वडाक विमल सर्वविघ्नानुच्छलदं ॥ दथुसंनय ॥ ॥ थन स्वानवा
य ॥ उं दिवाकन वलाचनाय वडयूष्यं यमिकु स्वाहा ॥ उं जा दिहाय वडयूष्यं यमिकु स्वाहा ॥ उं सूर्याय वडयूष्यं यमि
कु स्वाहा ॥ उं जा ॥ स्कंदाय नमः ॥ उं जा ॥ निलाय नमः ॥ थुमि सधसं ॥ ॥ ॥ उं जा ॥ सकय वडयूष्यं यमिकु स्वाहा ॥ उं जा ॥

लादिनाय वज्रपुष्पं यमिच्छ स्वाहा ॥ उं जा ४ वाचस्य नय वज्रपुष्पं यमिच्छ स्वाहा ॥ उं जा ४ ग र्हाय वज्रपुष्पं यमिच्छ स्वा
हा ॥ उं जा ४ अतिशय वज्रपुष्पं यमिच्छ स्वाहा ॥ उं जा ४ नाद्वं वज्रपुष्पं यमिच्छ स्वाहा ॥ उं जा ४ क रु व वज्रपुष्पं यमिच्छ
स्वाहा ॥ थं यि न ॥ उं क र्त्तिकाय स्वाहा ॥ उं वाहिनी
सूय स्वाहा ॥ उं अश्वत्थाय स्वाहा ॥ थुमिपुर्वस ॥
हा ॥ उं विजाय स्वाहा ॥ उं स्वाक्षिय स्वाहा ॥ उं विमा
य स्वाहा ॥ उं मन्त्राय स्वाहा ॥ उं पूर्वराय स्वाहा ॥ उं उद्गाराय स्वाहा ॥ उं अक्षिचिय स्वाहा ॥ उं अवनय स्वाहा ॥ यकि
मसं ॥ उं धनस्य स्वाहा ॥ उं अक्षिस्वाय स्वाहा ॥ उं पूर्वराय स्वाहा ॥ उं उद्गाराय स्वाहा ॥ उं अवनय स्वाहा ॥ उं अ

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

मुनियस्वाहा ॥ उं रुद्रुनियस्वाहा ॥ उं रुद्रसं ॥ ॥ दशभुक्त्या स्वाहा ॥ उं रुद्रुद्राया स्वाहा ॥ युर्वसं ॥ उं यमाय स्वाहा ॥ दकिं
॥ उं वसुधाय स्वाहा ॥ यधिं ॥ उं कुवलाय स्वाहा ॥ उं गुंसं ॥ उं जगत्स्वाहा ॥ जगत्सं ॥ उं नमो ह्यस्वाहा ॥ ने ॥ उं वा ॥
वस्वाहा ॥ उं रुद्रां नोय स्वाहा ॥ ॐ नमो ॥ ८ ॥ थन दधुसस्वानकालनस्य गावता ॥ उं रुद्रकमलमध्वलं कालं
नस्य विम्वविहावत्रकवर्हदिरुजासकमा यधमावृटविहाव ॥ ॥ यक्षयस्तलयुजायाय ॥ धलिवास्तय ॥
मनविय ॥ उधर्मा दक्षदं ॥ शकाय ॥ ॥ थन अर्यायाय ॥ वागासकसकनस्य ॥ संखसनाय ॥ अरुन अर्य
सि दक्षालस्वां वृत्रकिमस्य अर्यविय ॥ वाक ॥ उं नमो रुद्रावत आदिद्याय कात्यायनायाय ॥ अदिनिगहसंभुताक
लिगदलास्वाय ॥ अरुनसहिताय ॥ कर्कनयप्रतागबंधककुसुमसदभय ॥ रुद्रासत्रकयुष्य ॥ उं रुद्राविनाय ॥ पीया

प्रवापानसिधकायकः दैवदक्षभावाय

यदुच्यते यं समानुधाय दददानव कुम्भ किन्नरसहिनायः सुवमलरुगावन्ममयांशुदिकाथयः सुगुह
मकुलमध्यः सुतयविश्वदंमरुतं ४ गोधयुष्यं धूपदीपावहाल वलिचक्षुसासिः पुमिगृह्णतां नमास्तु नमः ॥ यस्यः
क्रियतकर्म नस्यपीतिकं वा सुवदानयनं आनियुष्टं कृत्वा नित्यं कर्म नमस्ते आदियः दिवा कवचव
वाचनाय वज्रस्वना वज्रयाय मावनाय ऊर्ध्वं पुमिस्तुवाहा ॥ ॥ अथ यजुजायाय ॥ ॥ यतचाकपुजायाय ॥
थाकालितं मकुलथिप्रः ॥ किन्नरः ॥ क्रमायनाः ॥ जिवादा विमर्जुनः सयं नयः विरुयुजा ॥ दक्रनायुजा ॥
थनः ॥ अथ विमर्जुनयाय ॥ ॥ वृयकलकाय ॥ रुद्रसापुसिसः मरुतसाहिनिः पृथ्वीरुथितं यदा ॥ ॥ थुमिधू
नकाडाः कायकं सिद्धमुजानकं ॥ यतगाः ॥ यमः वेद्यः विशालः ॥ थडाकुलदवनाः ॥ जयकलकाय ॥ ० ॥ यतं लिथ

हाडानाडा। कुमालियुजायाय॥ सद्यं मनःकुम्भरुजा। पादु। धारिणं दक्ष। स्वाज। दिगुसमय॥ कुमालिया न स्वाय दक्ष।
 स्रमव। कांड ध धारिणं कांड धाता। लोपिवा। धुमिदयकं। यलिकर्मनं। युजायाय धून काडा॥ मधुल थिल। किमन॥
 क्रमायन। आशिवाद। सद्यं नय॥ विरु युजायाय॥ दक्षना विय॥ मालसा। निष्कमि। युव नम्यं धलिसद्यं न वि
 य॥ ॥ कुमालिया नः। नाम्ना नय। दिगुस
 धकाय॥ समयावक॥ ॥ धन गव सद्यं न का
 कलंकय मुग्धाल॥ मुख सुधि॥ ॥ मित्र उ स नार्थ कर्म विधि समाक॥ ॥ ० ॥ ॥ उ न मा गी व ड स स्वाय॥ ॥
 यानि गृह विधि माह॥ ॥ सामया स्यं यका दया न सा॥ यथ मं अ स न। रु नि सा न॥ आ गं वा न य। धा २ या या ख नः

धग्व नावा स्वना। खाय दक्त आयिं धना ३ स्वना। सयं मन यागु। थुनि थाय नाया स्यं॥ गुनु मधु नयाय॥ सिधु
नया॥ लख वलि कुर्य॥ समाधियाय॥ मद निरुय॥ सयं मन थायिं यूजा॥ रु निवा जा पाय धग्व नावा काय पुडा॥ विधि
थं धून काडा। मधु लथिल। किमन। क्रै मा ये नै। १ थन सुलिं रुति। दायु जायाय। रु निया न धग्व लडा कुर्य॥ सुमिं
नया न। ना लवा कुर्य लडा कुर्य॥ कमाय न। जा ० जिवाद। विमर्जु थ॥ सयं कुर्य मूवा ल॥ कन सिधु लनं व कनिय
॥ दक्र नायु जा॥ दिगु समय काय॥ समया वक्र॥ ० ॥ थुनि रुति स्वन कर्म रु लडा॥ ॥ थन नि किला सग कं कुर्य
ला रु लियाय॥ थनं लि रुति मूवा ल स्वडा न॥ ० ॥ धर्म निकु नू सम सहित नं दन सा॥ विधि थं थाय नायाय॥
जापां अयमं ६० नाय। काय कल अय॥ लख स्यं दू काय॥ ॥ थन रुति मूवा ल स्व स्यं दू काया ॥ ॥ ऊह जादिं थाय

१७ वा संस्कृतः
मन्त्रः

ना अयं ॐ नायायुः सिद्धिः कृष्णः सद्यः मन्त्रः नागया यत्र गर्वयायः क्रायकं सिद्धम् वलिः ॥ ॐ ह्रीं सा नमः चतुर्ध्वजः
स्वायः ॥ कृष्णका च ववियत नं दिनः ॥ अयं मङ्गलः रुयगं यायः ॥ यत्र बलवयायः ॥ ॥ थन दमास अयं उवदि नयः ॥ व्याव
गवयः ॥ ॐ का ॥ सिद्धः यत्र स्वां ॥ क्रायकं ॥ स्थितुः ॥ गवलं ॥ धउ ॥ ॥ थनिद मास न सं थाय नायायः ॥ प्रणिमा दडास्व
नः ॥ ॥ ॐ चामं गुप्तं मङ्गलयायः ॥ यत्र गव्याधः ॥ नः यत्र गव वियः ॥ सिद्धं नयः ॥ मङ्गल थि लो सं व वलि कयः ॥
हिम माधियायः ॥ कृष्णः सद्यः मन्त्रः नागया अयं ॥ ॐ नाय क्रायकं सिद्धम् विधिः थं पूजा ॥ विसर्जनयायः ॥ थनः
अग्निष्ठापनः अग्नौ कृतियायः ॥ चतुर्धा थयः ॥ माम किय पूजा दडा यजा दडा कृतिः ॥ ॥ थन ॐ ह्रीं सा नमः का
वमचा रुलि म्वा सस्व सं इ कायः ॥ दीग मासं स्वस्ति वायायः ॥ आसं वलि लास्यां मचा नमः ॥ गुप्तं मङ्गल द नकः ॥ म

नयुजायाया विमर्द्धनः यकगर्वविषयः ॥ थन दडासु मव नयक मालक यानं विषयः ॥ थन कायमचा रलिम्
 वायो नः स्नानमस्यं तावना ॥ उं म न ४ स्वहृदय च द्रु सु ४ का नं विनाया ॥ यमिदवना वामपाशा मूडाभिका नू धननि
 ष्याय ॥ स्वहृदया मूदुर्ध्वं यमिमादीदवनायाः वामपार्श्वे यमव द्वाहनः निषयः ॥ उं व ऊ म त्व ४ ॥ ॥ माल
 स व ऊ मं थियः ॥ निलां ऊ न व ऊ मचा मकरुनं मायः ॥ ॥ अइ ३ ॥ ल माल म न य ॥ उं दिव्य वा ग ॥ अथ स्वाहा ॥ ॥
 थन नस्वाक यकगधनं द्वाहा ल स्वां थुस्यं दायः ॥ उं सर्व न था ग न काय वि श्व धन दं स्वाहा ॥ ॥ थन च व ल हा
 मलनं कृ ३ ॥ ल ख न स्नानं या म क ॥ उं य ल मं ग लं ह्यादि ॥ ॥ ल श्रि ध ले ४ का क न य र्व मारु गिला क नार्थः ॥ मी म न य र्वि द
 ४ वृद्धा विवृद्धा मूळ य ग न ग ॥ सु मे ल मं ग ल क व कु आ न्ति क र्व न वा य ॥ क ना य दि ष ४ य व न स्त्र क म्या ४ ख्या न शि ला क

20

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय

नमः कवयुक्ता धर्मात्मनः आनिक वंः यजाना नमंगलं वस्तु आनिक वं वाय ॥ सहस्रं च ४३५ नम गता य ४ संघा
नृदवास्तु दक्षिणीय भय ४ श्रीनिवास ४ यवला गता नो नमंगलं वस्तु आनिक वं वाय ॥ यच्च ऊला आवनमात्य
संगीत नृत्त ४ यत्पुष्प धूप वरदीय विविह गध
माहिषक ४ ॥ यन च वा वडां जिह्वा ल कं क
गल उषदि नया गु र्थ कादिनं दिगमास्य ये
यदय ॥ ॥ यव धलि सयन विया वस्तु लडा ज्ञाय ॥ उवा ४ दिव्य वास स्थ सार ॥ ॥ यन पुत्र स्वयान् साव नाना
उं न्य ना क नृत्ता रिन वाधिविह स्ववृत्तं वय न् नम ४ स्व रु दय स्तु न वीडा क रं नाना लोक धातु स्तु लिखा ज्क

निरुद्धवर्गं लोकां समादध्याशीरुल्लूनीतयः ॥ ॥ थनः सादाग्निवक्त्रा यथादियुजा ॥ ॥ थनः सिद्धं यन्मुख्याम्या
 बलडा क्लाय ॥ क्लायकनः प्रडा क्लाय ॥ मिमा योमः सिद्धमूत्रडा क्लाय ॥ यन्मुख्यं प्रियामः सिद्धमूत्रकः यन्मुख्याम
 ग्वच वियकः ॥ ॥ थनः क्लायग्वच वियकः ॥ वमि
 ॥ थनः थाकालिनं हलिमूत्राया प्रदा क्लायडा
 यन्मुख्यामान् नायप्रमकं सनकं मा जानंमि
 नं माचानं सा लु नकानकिनं लखधालथय माहनं दुदुनं दायक निनिमानं कुरुनं वययकः थाकालिनं जूयप्रन
 जानकः ॥ थनः नाना वाय थाककं मिमकुल दूयकः ॥ वाकः ॥ वृयं मथागमा मडा सनलोकयुक्तकवि गृहिवायाति

मां या शिव दृष्टुं यवर्हिनाय नमस्तु नमस्तु नमस्तु कामार्थं यवियुनयम् ॥ ॥ नेमस्तु कामम् ॥ ॐ नमस्तु कामम् ॥ स्वस्तिवा
स्यं कायमवाः हलिमवा नयाडाः निवांजन लाहग्नि लकाः जयमनमोय वाक ॥ ॐ सर्ववृद्धा किं शिवकाष्टीषवत्
मिष्ट २ दूदृष्टाहा ॥ ॐ वज्रदास समयमनूस्मन
रुनल्य ॥ ॥ थन स्वस्तिवाक यदयं ॥ स्ववाक
थनं लि ज्ञादृष्टि विय ॥ वलिविय ॥ वाक युजाया
य ॥ मधुन धिल किनन ॥ शिवादृष्टि ॥ पूर्व दृष्टियाय ॥ ॥ शिवाद ॥ विसर्जनं ॥ मघं नमय ॥ विनयुजा ॥ दक्रया युजा ॥ वाधा
नक्षय ॥ निमला विय ॥ ॥ दिगु समय कय ॥ कुमालियुजा कय ॥ वलिजा वा नय ॥ दशया नक्षय ॥ नडा वा गु ॥ कुवा दृष्टान

नस्यं अधिष्ठानयाय ॥ उँ दिव्या न समाध्या न यित न स्वाहा ॥ ॥ यन्मनः क्रायानयः क्रिया न लियानक ॥ ॥ धनं ग्वलस्यं
 वियः ॥ सहसा जनः थलरु वियन थियकः ॥ मालसायकः ग्रासयामकः ॥ काकदरुः थनाखनाः मूचुः सिसारुः ॥ कमपुङ्गुः
 मयधूनकाडा ॥ कलंकय ॥ ॥ नाम्बुल ग्वयग्न लविय ॥ ॥ ॐ क्रिया शिष्टरुधविधि ॥ ॥ धनं तंति आचूत लहि
 याकः ॥ समयचक्र ॥ ॥ खवाडू निः विसर्जतयाय ॥ कडला वासवान ॥ ॥ धनं सयंधलिह लियाय ॥ धनं यलियं ॥ १२
 बालमाकां साजनयायकः ॥ ॥ धूनि विव्यादा न कर्मपूयाकः ॥ ० ॥ ॐ ॥ ॥ धं सनिकुङ्कु आगमस
 लसिञ्जः ॥ जालयुजायाय ॥ कायमवा रुलिमुवा माहः ॥ धनिसयाः ॥ जानयम खडा ॥ किलासः ॥ गकायामं समयवियः
 ॥ जासाडू सः निकारु लियाय ॥ मामया ऊडा सः कायमवा नयः ॥ खडा सः रुलिमुवा नयः ॥ निक्रायकः रुलिमुवा डानायः

संज्ञायाः कविः ॥

मालकं काकसकमालदियधूनकाडा। सुलिनं ज्यलालनाडा। कायमर्गं माइसं थन॥ वाकुमधिलदियक। मामनं
ज्यलालय। वव् जजा यिसं कयाडान॥ ॥ थुनि निक्का रुलयाक ठरुला ॥ ००॥ ॥ कभवचनविधिमाह॥
क्रमयुजा। विधिथं कयनायाय। कभसयं मत। थायिं युजा॥ दडायुजायाय॥ ॥ थन कायमचा रुलिमचाः
लखस्यं हयाडा। गुनुमभुलदनक। मतयुजायाय। यकगहुविय। विसुर्जनयाय॥ ॥ थन हावना लाहा गिनवका
वड। गावा। मतदुनं नाय॥ कभशिवाक विय॥ ॥ थन तकिननं थकुयिवा दिगमासं लडा जाय॥ ॥ थन पुनुष
नः कडा कानिकानिसं वुआयानं सितरुयक। सकावा थयक॥ कागसययाय क॥ उं सर्वकभं जतवंधयका स्वाहा॥ ॥
सिधलकय॥ कक्रमकानं दादिदिन॥ ॥ कसु क्रयखाया रुठु नठु वुआया। थकसकनानं रुचक॥ सयनविय॥

॥ नमः कलत्राङ्गाय ॥ पुत्रव्याप्तये ॥ मधिरां लडाङ्गाय ॥ दडायातः मालकां नय ॥ गुन्ः मामाः वमाः थाकालि न किंयिं माल
 कयानं विय ॥ ॥ स्त्रियुष्यामसिदुनय ॥ थन गधसः जगं कायावेय थमिदडाङ्गय कलत्राय ॥ ॥ समालसा
 गुन्ः थिं थाकालियिं न स्नाने सिधल विय ॥ पुत्रव्या
 वाङ्गयुजाङ्गाय ॥ मधुसधिल ॥ किमनः क्रमापं
 कुमालिकाय ॥ दिगुसमंयकाय ॥ कुमालिया स्वां
 गधवकु ॥ ० ॥ थन डाङ्गलाङ्गान लिथनाकाडा डाङ्गलायाः गधवकु कुय ॥ ॥ ६० ॥ निःक्रमवधन विधिसमाफ ॥ ॥
 ॥ थं सलिकुङ्ग मालसा ॥ रुनि सुलिं यासा रुनि ॥ काकययिवाल वजिरुति मधिरुति जायूसूरा थुनिया थिथिः

१३

शनिसेवनविधि॥

वादास्यामक॥ॐंलाशतका रुनिधनयलिकर्म(धंयूजाधूनकाश। मधुसथिलक्रमायन। जगिवाद। सचनरु
विमयूजा॥लायास्वनागु। नाविकिधकायाडाकुर्य। फउधडानायलहिय॥स्वायदकलहिय॥ ॥ॐंनायवागुन्याम॥
रुनिवा रुनि सुलियाम॥ ॥समचक॥ ० ॥ ॥धनंलियकुकुनू। यकनाययूजाशन॥ हिंसाकर्मदयकाश
शन॥ सुलिन थाकालियास्यंयूजा॥ ॥भुनि सिलसुलिनयमंडुवियरुल॥ ॥ॐंनि विवाहालकर्म॥ ॥
रुल॥गुरुं॥ ० ॥॥ॐं॥ ॥उंनमःश्रीव रुसत्वाय॥ ॥दभक्रियाविधिःमाह॥ यानि स्वाधनविधान॥
यूजाथयतायाय। मालसा क्रमयूजायाय। यलिकर्म(धंधूनकाश॥ ॥दडादयकगु। सिध रुलसां। सिडल रुलसां॥
गुगुवसुकुरुल। उगुयाम स्वाननस्यंरावता॥ वाक ॥उंनमःश्रीविशीसंकदिकं जटिनिभन्यमाधिमाक्रधद्वीजनिष्यं

त्रं कनिष्ठमानदतमाकारं विचित्रं ॥ नथ गताय न स्वरावं न स्ववमिदं जगत् ॥ ॥ थन यदयाशु बुद्धयाय ॥ नरुसिगथ
 गतं दृष्टं ॥ यथादियुजा ॥ सानिध्वं कृन्तुथ ॥ ॥ थन यच्छास्यं वाकं ॥ खव्यापि सर्वसंबुद्धा वाधिसत्त्वासर्वग ॥ ॥ वृद्धवृद्धा रु
 नावस सानिध्वं कृन्तुमर्थं ॥ ॥ वजां कुशादिः जंडं वंदा ॥ ॥ थन धूयथन ॥ समचादलं दुमाः ख्यादि ॥ ॥ तिलां जनेच्छा
 य ॥ गुग्गुदयकाः उगुयान् स्नान ॥ विधिः थय जायाय ॥ ॥ उं नमः समन वृद्धानां संवाधिनिविधुद्धानां सर्वविप्रदत्तुं द्रुं द्रुं १४
 द्वादां ॥ उं द्रुं जां दीर्घं ॥ थ जायमनु ॥ ॥ थन द यका दयायामनुर्धं वज्रं धिस्यं जाययाय ॥ ॥ थन यक्षपहाल
 युजायाय ॥ ॥ उं वज्रसत्त्वज्ञा ॥ थम कुनं वजां वशमूडानं थियक ॥ ॥ समाक्रयधृदधिक्यार्थं ॥ ॥ थन कर्म कर्म वजी
 स्वरावतं ॥ स्वानं चूचक ॥ वाकं ॥ वजां राजस्वरावमिस्थिक दयसमाययन् अग्नयवस्त्राययन् ॥ ॥ थन विपालिहक

सिद्धयुक्तसिद्धिः

पूजायाय ॥ धनसिद्धिः, सिद्धिः, कायः, गुणः, विष्णुमादयः करुणः, उगुविष्णुकः, चवङ्गाय ॥ ॥ धन, वलिविष्णु, चाक्युजा
मङ्गलथिल ॥ किमनः, क्रमायनः, जिवावद ॥ चिमपूजा ॥ कर्मसाङ्गनयायमालकंयाय ॥ ॥ ॐ नित्यानिर्माधनविधि
समाप्त ॥ ॐ ॥ ॥ सरूचायः, प्रसा ॥ भवयति
जानीनंवाग्जं, ज्ञानाकायं, यन्निधनं विहाव्य ॥ ॥
मसिद्धलसां ॥ स्वाननस्यं गावना ॥ सुवर्णमसिद्धयुक्त
मङ्ग ॥ उं वङ्गधर्मकोस्वादा ॥ ॥ धन, चाक्युजायः, स्वाननस्यं गावना ॥ ॥ सरूचायः, प्रसा ॥ भवयति
यथाक्रमं, वङ्गयन्त्रवङ्गस्य ॥ उं वङ्गधर्मकोस्वादा ॥ ॥ धन, चाक्युजायः, स्वाननस्यं गावना ॥ ॥ सरूचायः, प्रसा ॥ भवयति

पवित्रो नमः ॥

॥ धनिकाधिकानयाय ॥ लासाग्निलक्षा वज्रमावा मगरुनगाय ॥ ॥ धनदस्ययुजा ॥ ॥ रावताम ॥ लखनीयं यमा
यवजं विविच्य ॥ धमकुध माय अकन खान जाययास्य ॥ धाल २१ वा कद्र चक्रक ॥ ३० ॥ ३१ ॥ ३२ ॥ ३३ ॥ ३४ ॥ ३५ ॥ ३६ ॥ ३७ ॥ ३८ ॥ ३९ ॥ ४० ॥ ४१ ॥ ४२ ॥ ४३ ॥ ४४ ॥ ४५ ॥ ४६ ॥ ४७ ॥ ४८ ॥ ४९ ॥ ५० ॥ ५१ ॥ ५२ ॥ ५३ ॥ ५४ ॥ ५५ ॥ ५६ ॥ ५७ ॥ ५८ ॥ ५९ ॥ ६० ॥ ६१ ॥ ६२ ॥ ६३ ॥ ६४ ॥ ६५ ॥ ६६ ॥ ६७ ॥ ६८ ॥ ६९ ॥ ७० ॥ ७१ ॥ ७२ ॥ ७३ ॥ ७४ ॥ ७५ ॥ ७६ ॥ ७७ ॥ ७८ ॥ ७९ ॥ ८० ॥ ८१ ॥ ८२ ॥ ८३ ॥ ८४ ॥ ८५ ॥ ८६ ॥ ८७ ॥ ८८ ॥ ८९ ॥ ९० ॥ ९१ ॥ ९२ ॥ ९३ ॥ ९४ ॥ ९५ ॥ ९६ ॥ ९७ ॥ ९८ ॥ ९९ ॥ १०० ॥
॥ धनमलयमिः मसिमला ॥ नवका
॥ धनं यद्रुला
॥ धनं स्थानं च यथमनं ॥ ३० ॥ ३१ ॥ ३२ ॥ ३३ ॥ ३४ ॥ ३५ ॥ ३६ ॥ ३७ ॥ ३८ ॥ ३९ ॥ ४० ॥ ४१ ॥ ४२ ॥ ४३ ॥ ४४ ॥ ४५ ॥ ४६ ॥ ४७ ॥ ४८ ॥ ४९ ॥ ५० ॥ ५१ ॥ ५२ ॥ ५३ ॥ ५४ ॥ ५५ ॥ ५६ ॥ ५७ ॥ ५८ ॥ ५९ ॥ ६० ॥ ६१ ॥ ६२ ॥ ६३ ॥ ६४ ॥ ६५ ॥ ६६ ॥ ६७ ॥ ६८ ॥ ६९ ॥ ७० ॥ ७१ ॥ ७२ ॥ ७३ ॥ ७४ ॥ ७५ ॥ ७६ ॥ ७७ ॥ ७८ ॥ ७९ ॥ ८० ॥ ८१ ॥ ८२ ॥ ८३ ॥ ८४ ॥ ८५ ॥ ८६ ॥ ८७ ॥ ८८ ॥ ८९ ॥ ९० ॥ ९१ ॥ ९२ ॥ ९३ ॥ ९४ ॥ ९५ ॥ ९६ ॥ ९७ ॥ ९८ ॥ ९९ ॥ १०० ॥
॥ धनस्य का अधिकानयाय ॥ ३० ॥ ३१ ॥ ३२ ॥ ३३ ॥ ३४ ॥ ३५ ॥ ३६ ॥ ३७ ॥ ३८ ॥ ३९ ॥ ४० ॥ ४१ ॥ ४२ ॥ ४३ ॥ ४४ ॥ ४५ ॥ ४६ ॥ ४७ ॥ ४८ ॥ ४९ ॥ ५० ॥ ५१ ॥ ५२ ॥ ५३ ॥ ५४ ॥ ५५ ॥ ५६ ॥ ५७ ॥ ५८ ॥ ५९ ॥ ६० ॥ ६१ ॥ ६२ ॥ ६३ ॥ ६४ ॥ ६५ ॥ ६६ ॥ ६७ ॥ ६८ ॥ ६९ ॥ ७० ॥ ७१ ॥ ७२ ॥ ७३ ॥ ७४ ॥ ७५ ॥ ७६ ॥ ७७ ॥ ७८ ॥ ७९ ॥ ८० ॥ ८१ ॥ ८२ ॥ ८३ ॥ ८४ ॥ ८५ ॥ ८६ ॥ ८७ ॥ ८८ ॥ ८९ ॥ ९० ॥ ९१ ॥ ९२ ॥ ९३ ॥ ९४ ॥ ९५ ॥ ९६ ॥ ९७ ॥ ९८ ॥ ९९ ॥ १०० ॥
॥ धनधुनकाडी ॥ धनसंनयाडी ॥

१०५

वीजाधिष्ठानविधि

॥ स्नानमस्यं सावना ॥ उं वूं औं ईं खं दूं का व ऊं वि नः न था ग न नि य न्ना नि न र सि नि य जि न्ख स्ख दि ग्ग था ग न द्द य ष् डूं का न
दि नि य्वां ता ति स्नान सू ज धि व सि म या नि ड द्वा ॥ ॥ थ न सू द्वा था य ॥ उं म थ न व ऊं म् म य थ क म द्वा म उ ल सू र ना य दूं ॥
उं आ ४ ध र्म व ऊं म् म य थ क म द्वा म उ ल सू र ना य दूं ॥ ॥ आ ४ ध र्म व ऊं म् म य थ क म द्वा म उ ल सू र ना य दूं ॥ या या दि
नी लां ऊ न ॥ पू या दि पू जा ॥ ॥ थ न ऊ ४ का व श जा य व य मि र्वा सा व यं ॥ सू उ का नि य्वा या न वि य जा ॥ य मि स थ य ॥ ऊ ४
ऊ ४ ॥ ध र्म य द या डा का य ॥ उं व ऊं म् म थ दूं ॥ उं दूं आ ४ स्ना दा ॥ थ न द य क द्वा या म क नं जा य या य ॥ यं लां यं म् न
व का व म्ख वि य ॥ थ न वि लि वि य ॥ ॥ थ न सू द्वा वि स ऊं नि या य ॥ उं आ ४ दूं व ऊं दूं ॥ ० ॥ ॥ ॥ नि स र्वा या न न वि धि ॥ ॥ ॥
॥ ॥ म मा वी जा धि स्नान धि वि ॥ ॥ स्नान म् सा व ना ॥ न न ४ व ऊं स त्वा आ त्मा नं नि र्मा य ॥ स्वि द्वा हा जा क र्वा य नि ष्ठ य द व मा वी

जगताः (क्षरं) ॥ ॥ आलसं धूपय न ॥ समं वादं लंघुं मां वृद्धाः ॥ अथादिशु संस्मिताः ॥ जमुकाः श्रमं सदा वजीः दवमा कल्याणाय
दं ॥ शिष्या तो मन कन्याय सत्त्वार्थं य विरुता ॥ वीजरु रुगमं धिस्तानं ॥ अधिस्तानं कर्तुं मर्दं थं ॥ ॥ थनस्तानया न कं ॥
मेयना थय मुखव वत्र वा धिस्ताने ॥ यकी र्तिनं ॥ यद
सवहुत यत्र मा हिषक ॥ ॥ यथ यदा नयूजा ॥
कदवना ॥ गरुय विस्तय दूं रुद्र स्वादा ॥ थ मकुनं
अधिस्तानयाय ॥ उं वजा कृ गवी उ मा कर्षयं उं ॥ उं वज या मवी उं मकु लं यवय दूं ॥ उं वज स्मटय वीज मकु ल व धय वं ॥ उं
वजां व मकु लं मा वयदा ॥ थनयायादि नीलां ऊन ॥ यूजा याय ॥ गुयं कृ नश ॥ अधिस्तानं ॥ यथ यदा लयूजा ॥ ममाकुल ॥

१३

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

॥ ॐ निभीमानानकीया वीजाधिष्ठानविधिः ॥ ॐ ३ ॥ ॥ धनं लि. ज्ञानकर्मविधिः ॥ धनस्नानकृत्वा नमस्कृत्य शिवता ॥
विष्णुपदवताया इत्युक्ता वाक्य ॥ नमो निष्पन्नदत्तानां धर्मधामादवयाः ॥ गवेष्यग ईवत्तु धामु मत्तु लं विहाव्यः ॥ ॥ मवद
वताया इत्युक्ता वाक्य ॥ गवेष्यग सर्वमथागत
यवाहुं दृष्टुः ॥ ॥ धनयः कयः पदानयुजायाय ॥ ध
गमसुत्रलिङ्गविलसतमिह नमामि गवर्कं ॥
धनस्नानयुक्तिकाय ॥ ॥ धनयः ४ धाम् धूपयाय ॥ ॐ गवर्कं जन्मकस्य व विद्यायाः ॐ नमो भगवते ॥ कर्तुं मिह मिह नाथ य
मिह कर्तुं नाथकं ॥ गिवाधामन्कम्याय युष्माकं प्रणिशाय च ॥ नमो भगवते ॥ अदकं दुर्मदसि ॥ यथा हि सर्वसं

११

मविय॥ उं वा ध्वज्जट्टकववयसस्वादा॥ ॥ धनयिवाकायमविय॥ उं आः दिव्यवाससस्वादा॥ ॥ धनचयसजालनः
कुडवाजालं कज्जमदा उगनुमि स्वामो लिब रुग रुगम लासा वृथादिदकांशं दोलय॥ ॥ जिव्यालुजालं विद्यावृत्ता
कृष्णं विपिनं जिह्वा मयस्यो जयप्रतिः वा लविं सिधव गवय आदि चय॥ जातकर्मया मङ्गलमाह
दं चय॥ ॥ गमवाचननं किचक॥ उं आः किचैकरुव (सस्वादा॥ ॥ पं लां यं सुत॥ भनाक्रय धन वजा
विष्टान॥ उं मा उसा आः सुतुस॥ इं नगलस॥ उं क्रसयातस॥ खं कयातस॥ गं कथुस॥ खं सकरिनं थिय
सं नारिस॥ ॥ वृत्तिवीजा विष्टान विधि॥ ॥ ॐ ॥ ॥ धव दिस्तिदानया स्नान॥ वाक॥ अक्राद्यादिविद्राह
मकल (मेश यत्न अल कुलिगपानि सवज्जवाज जीवज्जवाज गववसाधुसंमनः अक्राद्यानाज सुगमस्य मदासस्वस्य

किं किं वा न॥

ॐ (पुष्पक) ग्राहक न॥

* हयमस्तु नः अमूक दवताः समस्तः पाणिपतिः स्वस्य विष्णुयथा नः कर्मादिभिः कृपायाः स्वस्य विष्णुयथा नः हयमस्तु नः अमूक दवता
 नमस्तु नः अमूक दवताः समस्तः पाणिपतिः स्वस्य विष्णुयथा नः कर्मादिभिः कृपायाः स्वस्य विष्णुयथा नः हयमस्तु नः अमूक दवता
 क॥ वाक्यं॥ अज्ञानं यत्तत्त्वं तस्मै अयनां सन्ति नैकवत् । अत्रोक्तं वैय नाङ्गनः यथा ताकस्य निमित्तं॥ उं वक्र २ सम नव
 कृवि (आधन स्वादा॥ ॥ मन्त्रकन॥ उं दिव्य च
 क्रमकनकन॥ उं यज्ञावक्रुषदं॥ उं वज्रवक्र
 वृ२ दं ३॥ ॥ यन धा (सकया अर्थकन॥
 दन्तः आकसिद्धनदीकन॥ द्वास्यां विनिर्गता नमिः सर्वदि (सोकधा उषा दिव्यवृक्ष ४ सत्वा च कृत्वा नागस्य स्मि युव अय
 न॥ एवं नृपं विनय नृप॥ ॥ दशया मिरवानं शिलाक खट्वालय॥ ॥ ०० निदिमिदानं विधि॥ ० ॥ गमापितया अन
 ने (य विमला ना धाया गुः विद्वानसः आकसिद्धः कथा नमः पतिस्तनः स्वस्य विष्णुयथा नः कर्मादिभिः कृपायाः स्वस्य विष्णुयथा नः हयमस्तु नः अमूक दवता
 कदवताः गुणैः कल्पेन तस्मै नः मिता कनोऽविष्णुयथा नः कर्मादिभिः कृपायाः स्वस्य विष्णुयथा नः हयमस्तु नः अमूक दवता

॥ १८ ॥

नामाङ्कविधिः

विधिः॥ ॥ यत्तु डालगमद्वयसः यत्तु सास्व वास्व वागयव द्रसूर्य दिगुलिदडा धनयान कृयकः कुवा दडा यान नके
। नावायकः ॥ उँ कौ ॥ स्वादा ॥ यत्तु यत्तु नका राप्रयाय ॥ उँ ज ॥ ४ सर्वग थगन युन मधूयासन स्वादा ॥ ॥ यं याम नका
राप्रयाय ॥ उँ ज ॥ ४ सर्वग थगन विनाम नध
कर्मविधिः ॥ ॥ ०३ ॥ ॥ नमाना कर्षविधि
यं विनाय ॥ यदीया र्क्ष निप्रस्क (ध्वेच नड मिता ४ स
मनुनिश्चर्यः यवमा रुदयं खवगयन ॥ न (धेव स नध संद नध दिकं रुता ॥ ॥ यत्तु या यो दि निला अत ॥ ॥ उँ कौ नौ खं डः
धमनुनं यं चामनादिनयः नस्वा विकन स दारु लस्वान थूर्यदाय ॥ ॥ उँ सर्वग थगन काय वि (अ धन स्वादा ॥ यत्तु यच

वसवतं स्नानं ॥ उं वेलां चनादि चिक्कां किं कल (मे ४) य ४ स ख न व व य धर्म स क र्म व डीः स डाग न न स हि न स्य वि य अ थ क स्य
 वेलां च न स ख व ड ४ ख वि ना ग क स्य ग ल म ड ल ग व डु न य न मा हि थ क ४ ॥ ॥ थ न ड क न क न ॥ उं व ड स ख ४ ॥ ॥ थ न
 छा रु स ख न ड क (ग ला च न नं मि च क ॥ उं मि ल
 र्मु व स ४ ॥ ॥ थ न य डी या नु ग ल स व ड थ थि
 धि ४ ॥ ॥ ३ ॥ ॥ ग मा रु ल या ग न वि धि ॥ ॥
 (मे ४) श्री व ड न व व य क स व ड या शि स ल्प हि ना र्च स हि न स्य अ मा य सि धि ४ य ल म ड ल हि न क र्म य व मा थ सि धि न स
 ड ल ग व डु अ कि क र्म न वा य ४ ॥ ॥ थ न ड ड या न ग ल वि य ॥ उं ४ ४ दि व्य वा स स ख ४ ॥ उं ४ ४ वा ध ड ड क व व रुः

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय

स्वाहा॥ धनं वरुणं जलं वा मम रुतं माय॥ धनं । मिश्रं रुतं दयकरं कर्मस्यं सिधिमि न साधनयाय॥ उं ज्ञा ४ सर्व (मा ध
निद्रं रुद्रं॥ दिगमाया उ दवनक॥ उं नात्रिकववरु लाय स्वाहा॥ नाचायक॥ उं समाधिरुत सर्व जिन युगुयी न न स्वा
हा॥ जम सि॥ उं उं स्वाहा॥ उं ज्ञा ४ वरुणिय रुका य स्वाहा॥ वाकुमधि॥ ॥ धनं युष्मादियुजायाय॥ ॐ मिद्रुत
याभन विधि॥ ॐ॥ ॥ कमा अन्नयासन विधि॥ जनकाया स्नानं यवम् वाकं यत्नं रुतं स्वादि॥ ॥
धनयमिलत दिगमास्यं विय॥ स्वस्ति वाक्यदयं । लाहागितवक्रा॥ धनं जनक रुजा अविष्टानयाय॥ उं नमः
मन्त्रवृक्षानां उजावलं रुजावलं ददे स्वाहा॥ उं ज्ञा ४ रुद्रं स्वाहा॥ धनं दिगमाया उ दजायामन्त्राय॥ ॥ नाचायक॥ उं
जो स्वाहा॥ ॥ नक॥ उं याथायन मः स्वाहा॥ जगुलां॥ ॥ उं ज्ञा नाय स्वाहा॥ दधुर्त्ता॥ ॥ उं समानायन मः स्वाहा॥ या
नमः॥

कषूजाकायः

कषूजाकायः

॥ॐ॥ ॥ उँ उँ दानाय नमः स्वाहा ॥ चालां ॥ ॥ उँ वानाय नमः स्वाहा ॥ कालां ॥ मण्डपकनकाहाडाय ॥ उँ दिव्यानाय
समाध्यानपीतनस्वाहा ॥ नावायक ॥ ॥ कलंकाय ॥ समयवियमात्र ॥ वयूचक ॥ चमावागय ॥ वाकस्वानमादसः
धय ॥ ग्वय ॥ ग्वाल ॥ दाहालय ॥ ॥ ॐ निजुत्र ॥ यासनविधि ॥ ॥ ॐ ॥ ॥ नमा कषूजाय क्रिया ॥ स्वस्ति वा
कयदयं ॥ कडयानविय ॥ श्रीमं नमिथक ॥ चनांमधिकय ॥ थन ॥ पृथ्यादियुजायाय ॥ भनाक्रन ॥ ॥ ॐ ॥ ॥ ॐ ॥
निकृष्ट ॥ अधनविधि ॥ ॥ ॐ ॥ ॥ नमा कषूजाय क्रिया ॥ थन ॥ स्नानयानक ॥ उँ मेगादिवाउमविज्ञाकि
नकन ॥ गोशाय ॥ मज्जलं कमलयागिसवडनी ॥ चकायुधयवरावितायुगस्य लोक ॥ लोकधनस्य सगनस्य सखात्मक
स्य ॥ मज्जलं वरुणयप्रमागिथके ॥ दूकायधसव ॥ खनं हावयन् ॥ ॥ लखावान सखाहाडाय ॥ उँ सर्वा
॥ ॥ कालिदायमाय ॥

वप्रथविआधनसर्वज्ञानवापान्. इदयश्चैस्वादा॥ ॥ ल. मूत्रघ. क्रसयंखन॥ उं धर्मभ दव्यधिकव (धे) स्वादा॥ ॥
हनंस्वान॥ उं वत्तसम्वादि विक्ता किमकल (मो) ॥ यं स्रलं सरु नस्य जित प्ररुन सत्क ठ नाचमहाससूरा विमनन
गी वत्तसम्वा जितस्य विम विमस्य नत्तमकलं हवठु नयन माहिषके॥ ॥ वज नालवा मट्ट दशमाया॥ य व
गधनं मा उस् न या वाया शावयाय॥ ॥ लू वि वनं मिमक॥ उं मिलकरु ख (ध) स्वादा॥ ॥ नाना नवध दाहा
प्रय॥ उं सर्वाश नृध रू हो ये स्वादा॥ ॥ वा क रु नि नं दिगभास्यं पायक॥ उं का प्रध य वर वृद्ध मकूटं निव्याय॥ ॥ ॐ
दत्त सर्व बुद्धानां कुध रुकनमस्कृतं युष्माकं युज नार्थय मकूटयं व कला रुवां॥ उं सर्ववृद्ध वृज मणिमहा मकूटं प्रमिक्त
स्वादा॥ उं वज वत्त जां॥ क उ हियक॥ वाक॥ उं वज धा न धे वी दू॥ उं वज वडी दू॥ उं वत्त वजि ज्जि विचर जां॥ उं य प्र वडी

कथनापूजाविधिः

अहिषिकर्त्री॥ इति श्रवजि अहिषिकर्त्तव्यं॥ यं लां यं सु. न. ॥ ॥ ॐ निवृत्तकर्म विधिः ॥ ॥ ॐ ॥ ॥ नमावमायं अ
शविधिः ॥ ॥ थन स्वातन्त्र्यं लसतावताम॥ वाक॥ नमः स्वहृदी उचिक्कं निव्यायः सर्वकाशधनुष्यदवता विद्रु
यसूत्रं कृत्वा प्रकीर्तयामास॥ ॥ थंका
सुजायकं नय॥ ग॥ थ॥ ॥ ॐ दं न सर्ववृद्धां न
सत्कार्यं क्रियानिर्वाहं कर्तुं च वसुधैव कुटुम्बकम्॥ यन
उज्जमनं कारवायक॥ आरुया जानावियः स्वविधियः॥ उं वज्रधर्मः ॥ ॥ कथनावियः॥ उं वज्रधर्मः ॥ ॥ केमुकद
कुवियः॥ कमानं वा नावियः॥ उं वज्रधर्मः ॥ ॥ लिङ्गि. रुक्मिणि विधियः॥ उं वज्रधर्मः ॥ ॥ खडावाहावसगयः ॥ ॥

२१

[illegible]

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय

नमस्तथा सोऽहो गच्छ मच्छनां युगवाजाक्रमसमचिह्नं॥ धनं स्वातन्त्र्यं सगर्वनं नृपः॥ सिद्धिमुदयागुनं मित्रक॥ ॥
समयः दुसलरुलियाय॥ कलंकय॥ ॥ ॐ निद्रां लकुट्या क्रियायाय कर्म इल ४ अरु॥ ॥ ॐ ॥ ० ॥
॥ धनं सगर्वनं नृपः स्वातन्त्र्यं सगर्वनं नृपः॥ धनं सगर्वनं नृपः॥ धनं सगर्वनं नृपः॥
नमः सयं मगः नागयाः अत्रां नृपः॥ उरुः॥ उरुः॥ उरुः॥ उरुः॥ उरुः॥ उरुः॥
थायनायाय॥ ॥ ॐ वास्यं गुनु मच्छुलयाय॥ ॥ ॐ वास्यं गुनु मच्छुलयाय॥ ॥ ॐ वास्यं गुनु मच्छुलयाय॥
सहस्रं सगर्वनं नृपः॥ अदिसमयकाय॥ नालकाय॥ मच्छुलयाय॥ जाकिविय॥ नचिनसुव॥ नागमालाकाय॥ विमर्द्धय
॥ अदिसमाधियाय॥ ॥ धनं सगर्वनं नृपः॥ मच्छुलयाय॥ मच्छुलयाय॥ मच्छुलयाय॥ मच्छुलयाय॥ मच्छुलयाय॥

७२

न॥ अगनादु नियाय॥ थन मातसा मास कियुजा॥ युनांदडा युजा॥ दडा मादु मि॥ थन चनुजा थुय॥ ॥ थन छुदि
 मचा मा नख संदयाडा॥ अ संघ लि ला स्यं॥ नया॥ गुनु मंथुल देनक॥ मर युजा या नक॥ यं च ग वी विय॥ विसर्ज
 ण या नक॥ ॥ थन लि स्र व भ ला न कं॥ ॥ हि कि या च्छु संदय॥ ॥ थन स्नान न स्यं रा डाना॥ नर ४ स्त्र ह दय
 च दु स्त्रां आ का नं विहावा ४॥ य मि मा दि द व मा म् डा मि का न्य न नि ष्या य ४ स्त्र ह द या इ स्त्र ४॥ य मि मा दि द वा
 वा म या ध्र य प्रा व आ स न नि ष य ॥ ॥ थन थ का लि नं ड जं म च्छु यु वि॥ ॥ उं व ड स ख जा ४॥ ॥ नि लां ड न
 व ड मा ल वा म न रु नं मा य ॥ थन स्नान मा ला नं द डा या न क र वा कं ये॥ थन सो क य लि विं चा द व मा च कं॥ ला द
 मा स मा भ क ल क॥ म चा मा द न सा लु सि ध्वा न क॥ का ल च क न का य॥ का य क न स न य॥ ॥ उं स र्ध न थ ग न का य वि

॥ अदु स ल स ग व च क ल या वि
 सं या य २

रुनिभाठविश्या॥ भगवत्सिद्धिनिधि

विभाधनस्वादा॥ धानन॥ लक्ष्मलनं॥ स्वस्तिवाकनं॥ लक्ष्मिधन॥ यंचामन॥ यथावधि॥ यथावत्क॥ अस्तदासलनसं
स्नान॥ वाक॥ उल्लाप्यादि॥ अष्टविश्वकिनकल॥ अशायद्वेडल॥ अवलमाससगीनन॥ ये॥ ययुषाधुयववदीयवि
विश्वग॥ ये॥ पुजास्तिर्यंगनिसमं॥ विमलं॥ पुगीन
जिह्वाल॥ कृकंन॥ कर्पूव॥ निहाश॥ असवयन
य॥ द॥ दक्रनाकाय॥ गमध॥ उ॥ दिव्यवाअस
हा॥ ॥ यनमिधुकाय॥ ममाकयन॥ माजानं॥ अय॥ दक्रनाद॥ काय॥ ॥ रुनिभाठकिन॥ वियक॥ वाक॥ अ॥
॥ दंन॥ सर्ववृजाना॥ उ॥ धाठुकनमस्कृनं॥ युष्माकं॥ युडनार्थय॥ मकुटय॥ अ॥ कला॥ रुव॥ ॥ उ॥ वड॥ सत्वड॥ ॥ यन॥ स॥ न॥

२३

विष्णुसहस्रनाम

दिक्कान्तः सारवायक ॥ उं ज्ज्वाया उअस्व वा द्वाष्टि अमानुव्यंजन स्रुगु ष्टिमाना विलं विनस्क (वदं रुट् स्थादा ॥ ॥
 थन वज्र कालवा मगरुनं माय ॥ ॥ थन व्याल सखान कदाल नस्यं सावना ॥ थन माक नृक्ष हि नं बोधि विरु खन
 यं हावथम् ॥ नमा द्वादयम् ४ बीजा क्रयं नाना
 यम् ॥ थन यायादि नीलाजन युष्यादियुजा
 वषधियमनं चिय ॥ गंधा ध्या ॥ ४०० यं माथा गेन
 प्रवर्तुम् ॥ थन सत्वं तसंज्ञानं यज्ञायायात्ममकुल
 य ॥ ॥ थन जगमकुल उल ॥ रुहीनं वपुयर्कं लंख धन्वा थमं जाल हासास अय ० नस्यं सग्वन मगरुन मा
 २ सचा रुस ववदग सा वी वल उद्राय मद नसादा शयिस नकि उ

माय १

श्रीगणेशाय नमः

या॥ नेत्राद्यकाशमः ॐ शानकनमः स्वस्ति वायाडा गुलिसमयाडा ज्यलिनंभाय ॥ उं सर्ववृद्धवृत्तामहिमदावडा
 उषीषवधनिष्ठ २ इंदुस्वादा ॥ कलसाभानभाय ॥ उं वज्रदादमनुस्मयस्वादा ॥ धन वज्र नाचा मगरुनभाय
 मयनंभाय ॥ सरुनसूय ॥ ॥ ॐ शानकनमः ॥ धार्थ्याय इत् ॥ धनं लि दावा ऊडयक ॥ निवाकया वाक
 ॥ ॐ यंभाथगनासां नं द्यादि ॥ ॥ स्ववाकस ॥ स्वस्तिवाक्यदय ॥ ॥ धनं लि धव २ धासंभायडा ॥ अस्वित्तव
 नंदाय ॥ शिवमरुनं ॥ धन वाधनं कुवक ॥ च नृजाक्य ॥ वाकथ ॥ उं दिव्यान्ननसमाधिध्यानपीननस्वादा
 ॥ ॥ यचयसययुजायाय ॥ ॥ ॐ निधानिगुदशविधि ॥ ॥ ॐ ३ ॥ ॥ धन याजाग्रिगावना दामसस्वानकदा
 लनय ॥ वाकथ ॥ नगाजुनाथसमिद्धि ॥ वद्धविम्वं ॥ यमिमां इष्ट ॥ धन यायादि जर्कादि समिदं निलादि
 १ दमसासुवर्धुदनामदकसाकथासगकदकसा लंखन दांविदय विदिदकांइय

२४

मन्त्रसंज्ञावचना॥ यन्त्रसंज्ञावचना॥

विहीकः इत्यान्॥ मन्त्र॥ उँजकामय स्वाहा॥ यथादियुजा॥ अमात्र॥ ॥ॐ॥ निज्जुनि क्रियाविधिः॥ ॐ॥
॥॥ धनमन्त्रलयावना॥ ॥॥ मन्त्रस्वद्विद्वंकोनधवजं॥ मन्त्रिधसुलित्वा॥ ज्जुनिधसुवनंगत्या॥ मन्त्रस्वज्जुना
दिसमिद्धि॥ यथा मन्त्रलं इष्टा॥ ॥॥ धनज्जवा दन्त्र॥ याथादि॥ निलोडन॥ युजायाय॥ मन्त्रलसद्विकसावय॥
उँज्ज॥ १४४॥ वीवद्वं॥ ॥॥ धनमायज्जुनकास्यं हाडालयकं॥ वाक॥ उँसर्वमथागन्त॥ युजायस्वनाय॥ ज्जाला
ननिर्यामि॥ यामि॥ सर्वमथागन्त॥ धिनिष्ठमां॥ वु जानामहि॥ वकस्सु॥ ज्जगतायावर्जि॥ शं॥ गुणा॥ कनाय॥ थदरु
सुथाददध्वं॥ मस्याहीनि॥ जाकि॥ हाल॥ ॥ॐ॥ निमन्त्रल॥ यवअ॥ विधिः॥ ॐ॥ ॥॥ मन्त्रावनिष्ठा॥ लावना॥ स्व
द्विद्वं॥ मन्त्रस्वसंज्ञा॥ मन्त्रागन्त॥ धिसत्त्वविद्यादवमाग॥ शो॥ गगामो॥ धो॥ युविद्वं॥ ॥॥ धनस्त्रानायायकं॥ वजा

येपकेपुत्रामयानके

[illegible]

मकुटनयाय

वजायंदमादिम॥ ॥ **गावना** ॥ आं वत्तसक ववुयिनं झनसत्त्वमकीरुनं नरुक्कनथागनदविशिः ४ कृक्क वसि
विः ॥ क्रमानं नुयवजादिशिः ४ नुयमानं मऊ लगीनं गावयन॥ ॥ **स्नानयागक** ॥ उं विजयकल (अ) ४ यत्तसकलं हिम
करं यवमं यविनं युध्यः ह्यादि ४ ॥ यथादिजा
क ॥ अहिषकं महावडं गुं धाडुकनमस्करं ।
वक ॥ उं वडधामधनी अहिषिकरुं ॥ उं सत्त्व
अहिषिकरुं ॥ उं कर्मवडी अहिषिकरुं ॥ ॥ **थन** ॥ अखलखनसाय ॥ उं अ४ वडमकुनाहिषिकरुं सुनमस्त्व
मरुं ॥ ॥ उं वडधुयाहा ४ ॥ ० ॥ ०० मिमकुटाहिषिकविधिः ४ ॥ ००० ॥ ॥ **थन** ॥ वडधं दवया कयाव कधुनग

ऊसथियकं वडाकाय॥ उँडूँ जाँकीं ज॥ जयासिधिक स्वमसिबुद्धे वडासिधिकं ट॥ ॐ दं न सव वद्व सं गुरु वज
 ससिद्धयन् ॥ ॥ ॐ निवडासिध्याक ॥ ॥ य॥ विय रावना ॥ उँ वडाधिय निस्त्रामसिधिक मिनिवद्वजस
 मयस्त्रं वजय ॥ ॥ ॐ गृहीतासिमयारुगव न मयिमनिदिगारुव ॥ ॥ ॐ निघश्रिधिक ॥ ॥
 थनलवृमनं निनक ॥ उँ वजसस्त्रामसिधिक मि वजनामासिधिक ॥ उँ ॐ ॥ ॐ मुकवजनामन थागन ॥ ॥
 संरुचुवस्त्र ॥ ॥ ॐ निनामासिधिक ॥ ॥ ॥ रावनाम ॥ युनिमादिदवतानां सवज ॥ य ॥ लहृमं शान
 मडायालिङ्गनासिधिविहाय ॥ ॥ चमनं निनक ॥ उँ स्य निधिगवडस्त्राहा ॥ ॥ ॐ निवायासिधिक ॥ ॥
 ॥ ॥ ॥ नदनवकुं गमर्निवजसस्त्र ॥ हृदी ह कि वधाम् सविद्यावेशावनादि न थागन वृद्धं वेशावनादि दायय

२३

वी।अ।इवीरुनंमहासुखमनुरुयं।वज्रयग्राह्यामूलं।वाधिविरुनयं।यमिमादिदवौनायां।मुखयुविहंवि
कथम्॥ ॥ॐनिगुप्तासिधक॥ ० ॥नमस्तुनवज्रसत्त्वतायनीनदव्या॥समायन्नाया॥यमिमादिदवनाया॥
सहजानचमयत्त्वमधिम्।क॥ ॥ॐनि
क॥नद।अस्वस्वयुया॥यमिमादिदवनाय
समाधिमधिम्।क॥ ॥ॐनिवहुथसिध
वपकंनय।य॥थास्यंवाकथ॥जाका।आयादविक्र
सत्यायसिद्धम॥सर्वाहममहासिद्धिर्महेश्वर्यापिदेवम॥सर्ववज्रधंवाजा।सिद्धिमयनमाक्र॥व॥नि

दसिअश्वनअपि सर्वनागानुनागनअनखनसिद्धिमरुगवनू मरुनागमदावनशा ज्ञयनगुरुधर्मागुआदि
 मुकसुथागनअसमकरुडसर्वात्मा वाधिसत्यसिद्धय ॥ सर्वसत्यमनायापिः सर्वसत्यद्विद्विद ॥ सर्वसर्वस
 वयिमाधेव कामागुसमयागिमांयतसत्य नसंज्ञनंयुहायायात्ममकुलं मनसत्यनमनार्थकामा
 स्वयंप्रियुवयन ॥ ॥ यन व्यायालिदायुजा यास्यः अरुव लडा क्ताय ॥ यन सकस्यनं दवधियकंमय ॥
 ॥ सिद्धाय ॥ ॥ यन अकया अर्थकन ॥ ॥ यनयंयमिमानिछन कल्यकल्यसहसुकां नक्रनुदवता
 सर्वः क्रिह्यगिजलवायुवशा यावमनुस्मितादवा यावक्रजामदिनल व अर्कगगहा यावम ताव त्वविड्यी
 रुव ॥ ॥ यन जनाक्रव स्वधालयदयः क्रमायन ॥ ॥ यन यमिडा क्रुमय ॥ माद १ दे ४ दक्रनाक्रय

॥
 ॥
 ॥

॥ सकलानां ॥ थडा ॥ सखा ददना ॥ चय ॥ युक्ति ॥ शाखा ॥ चय ॥ ॥ धनं लि ॥ मर्जान ॥ र्थ ॥ युजा याय ॥ अडा ॥
इमियाय ॥ संख्या ॥ इमियाय ॥ ॥ धनं लि ॥ दभव ॥ निविय ॥ युजा याय ॥ जिष्या ॥ धिवा ॥ मनयाय ॥ जिष्या ॥ इमि ॥ इय ॥
॥ मालसा ॥ कुमात्री ॥ युजा याय ॥ ॥ जगमस ॥ इलसा ॥ मासा ॥ इमियाय ॥ शिकया ॥ नामनं ॥ दय ॥ का ॥ दडा ॥
लसा ॥ दनं ॥ अवकया ॥ दडा ॥ इलसा ॥ अत्रया ॥ चानं ॥ हायक ॥ मदाया ॥ न ॥ इलसा ॥ या ॥ पुनं ॥ हायक ॥ धन ॥
पुष्पयाय ॥ म ॥ गुल ॥ थिल ॥ खानवाय ॥ किन ॥ न ॥ क्रमाय ॥ नयाय ॥ जजिवा ॥ द ॥ विसर्ज ॥ नयाय ॥ सयं
ननय ॥ विनय ॥ युजा ॥ दक ॥ धा ॥ युजा ॥ विननं ॥ मिचक ॥ बाधन ॥ कुर्य ॥ निसला ॥ क ॥ रु ॥ विय ॥ दिगु ॥ कुर्य ॥ कुर्य ॥
मालसा ॥ कुमालि ॥ कुर्य ॥ आवक ॥ इलसा ॥ अया ॥ इमि ॥ विसर्ज ॥ नयाय ॥ क ॥ अल ॥ अ ॥ कुर्य ॥ ॥ विसर्ज ॥ र्व ॥ वाया

ॐ नमः श्रीवज्रसूत्राय ॥ ॥ शिवाय नमः ॥ विधिः मादः ॥ विधिः (यं) दामकलनः ॥ कञ्जस्यं मङ्गलं नागय
कदात्तः ॥ दालः ॥ वास्यलया ॥ द. स्वन. या. स्वन. ॥ वलिरुगल ॥ धनं कृपया यास्यं ॥ ॥ ० वासं गुणमकुलयाय ॥
यकगव्यसुधन ॥ यकगव्यविय ॥ सिधनय ॥ ॥ मिथुलथि ॥ स्वानवाय ॥ किनन ॥ विमर्जन ॥ विममाधिया
य ॥ कञ्जस्यं मङ्गलं युजा ॥ जसिकायन ॥ जग्म
यवायाडनय ॥ थनकलया ॥ यालस ॥ यकगव्य ॥
गुहससाडा ॥ धालधियायाडनय ॥ नायज्जुक्रम ॥ यकवत्सदिकनं ॥ जाययास्यं ॥ यानमनयाव ॥ सिनंकापुय ॥ स्वानकुरु
लनस्यं ॥ शवता ॥ मोशवसूहा सर्वधमाद्यादि ॥ ॥ थनलाहागिलक्रा ॥ वज्रमावा ॥ मङ्गलं नाय ॥ युजायाय ॥ ॥

॥ धनसुखलासः कर्मियावहापूजायाय ॥ लाकलत्रडाह्लास्यं ॥ असमासुयनायाय ॥ श्रयादडानमिसिद्धयायायक ॥ ॥
 धनस्नानकुशालनस्यंभावना ॥ नमोज्ञानयज्ञवसमय ॥ खंकात्रुंविधवज्रयं ॥ हलिनवर्क ॥ शिवादायुकाभिराव्य ॥ ॥
 धनधूयनिलांजनवज्रालवा ॥ मकरुतंभाय ॥ ॥ यंत्रगंधयचक्षुमन ॥ नस्यंस्नानयायक ॥ ॥ धनवास्वत ॥ शानयु
 जायाय ॥ यात्रडाह्लाय ॥ धनकंदाल ॥ असमायात्रा ॥ कायाचिन्मय ॥ आदाल ॥ पालपाचिन्मय ॥ धनवलियान ॥ नय ॥ ॥
 वलिविय ॥ धनकायन ॥ कनासदयकंनयाडा ॥ वा ॥ स्यजनं ॥ असमाया ॥ नाहि ॥ अचक ॥ उंजा ॥ नारि ॥ ॥ माया ॥ अं ॥ दय
 रुदयद्रुंस्वादा ॥ ॥ धुसिद्धाकनवलिसंगस्यं ॥ आनलघुसडाकलकाय ॥ ॥ धनप्रलमधिमाहनं ॥ असमास ॥ काखा
 यक ॥ ॥ हनं ॥ यचगंधादिनस्यंस्नान ॥ वाक ॥ यत्नजलसंजननासुवयुजिनस्य ॥ धर्मधननकथिनस्य ॥ निवृहवस्य ॥ ला

२२

कथयं विदिनस्य नित्यात्मकस्य गन्तव्यं लक्ष्मणं वदुः कथयन्माहिषके ॥ ॥ थन चयायाम दिगन्तास्यं मय ॥ उं वाधुः कट
कवचवस्तु स्वाहा ॥ ॥ यिवाकायमविय ॥ उं ज्ञा ॥ दिवा वासमं स्वाहा ॥ थन थयमासमिधुं शत्रुः सिन्धु यातु कथय
॥ वज्रं थिय ॥ उं ज्ञा ॥ ॥ दिमिदयानया च मालासम युनक ॥ उं चक्र ॥ समन्तचक्र विधन स्वाहा ॥ ॥
थन चमसिधुं लज्जं मन्मथं युजा ॥ मन्त्र ॥ उं पञ्चाक्षी विमलद्वन्द्व ॥ ॥ थन वदिक्रिया रुमियाय ॥ ॥
हावना ॥ गन्तव्यं हृदयं च द्रुतं ॥ ज्ञा ॥ कायं विमल व्य ॥ मित्रिदायुकादवाम्प्राप्तिका नृप न निष्ठा ॥ ॥ थन
वजा ॥ ह्रिः सदा शं थियक ॥ उं वज्रं सत्त्व ज्ञा ॥ ॥ थन नीलांजन लास गिजका ॥ थन सा ॥ अस्ति विंचानं मायक वास्य
वनं सा ॥ अयक ॥ ज्ञा ॥ कथय मा विय ॥ काल चिकनं थयमास वृषक ॥ उं सर्वं थगन्काय वि ॥ अधन स्वाहा ॥

॥ यं वगध्वं मृदा मृगस्यं मान ॥ थन दशं लक सिधुलियमा सिया ज्वाकाल धं नयक ॥ उं ज्वा ४ दिव्य वासस स्वादा ॥
 ॥ थन ॥ ज्यं दन वगमदन मालानका वायक ॥ उं सर्वा रुच राहू व (ध स्वादा ॥ ॥ थन सिधु कय विधे वड विक्र
 माठ माठ किनिनं चियक ॥ वाक ॥ ६० दं ग सर्व वृद्धानां वै धा दुक नमस्कुं ॥ यया कं यड नाथय मकूटयक
 कूला रुवं ॥ उं वड सत्वदं ॥ ॥ थन सगरुदिका नं काखायक ॥ उं ज्वा वा ठ भस्वया छातिं भमान् व्यं ड न स ३०
 उगहि माला विल विनस्क (ध डं रुट स्वादा ॥ ॥ ॥ थन मायसा मगरु नं माय ॥ थन सनाडा स व्याव न याव
 लावता ॥ भुमना क वृध हिन्नं वाधिविरु स्वयं सव यरु ॥ न मा रुद यरु वीजा रुवं नाना लाक धा ड रु ति वा ज्वा
 भिरु रुवनं गला श्रीरु ललीन चिक यरु ॥ ॥ थन नीला जन कय यजा याय ॥ थन व्याव ड डाना लय न स

पठविना आगाथा ॥ ॐ यं गाथा गतमि मडा ज्ञाना लाक यरु कनी । मृदित्वा याति ना याति वृद्ध ह्ययुव रुत ॥ यनम
स्वन संज्ञानं पुष्टाया या सम भुल । मनसु न मनार्थ कामा स्वयं विपुत्र येन ॥ ॥ थन माले सा मम भुल कुय म म्वा
न सा । व्यात्रम । अखिल खलं यः व्यात्र या खिय
॥ उदिव्या नन समाधि ध्यान पीन न स्वाहा ॥ यः
ना ॥ यदा च दत्त दात्रु धां वज्र अत्र जाल स्वहा वः
मनु ध ॥ उवज्र सत्र जाल गां स गां ॥ थन र्था धर्मा पर्य क्रयाय ॥ ॥ थन लि धया चास अठ कामि सः हावता ॥ मि
वा मा नव ४ पुं नाग का ष मयं पु धान ना डी स्वहा वं विहाव्य ॥ थन धूय नीलां जन स्नान पूजा मनु ॥ उवज्र वक्रुं ॥

[illegible]

कौ० ३४॥ अश्विनि विष्णुः सवित्रः वज्रसिद्धिः वज्राश्विनि कटः ॥ वन्द्यं सर्ववृद्धं गुरुवज्रसुसिद्धयः ॥ धनयः धनयः ॥ उँ वज्राधि
पतिस्त्वांमहिषिधूमि वज्रानामाहिषकः ॥ उँ ३४ ॥ मित्राद्यावृनामदेवनात्तुर्वृद्धः ॥ ॥ धनयः पंचसूक्तानं यममा
सु विष्णुं ह्याव यमुका नाय जक्रुः लाकस्वां व
र्हि सर्वयुक्तवधः ॥ उँ ३४ ॥ वनवधवृद्धदवधं ध
मिनि २ मिनि २ इँ २ रुट् स्वाहा ॥ ॥ धनयः पुनदरा
गनाक्रय क्रमायन ॥ वज्रयंथिय ॥ उँ सुप्रनिष्ठन वज्र स्वाहा ॥ ० ॥ नवधन धानसुहृत्साः धकि धाठ (ध) निनकया न
सा ॥ धियदायमानः ॥ मित्रजक इल सा सुमान ॥ कमिहा पूजायाय ॥ स्विहाय ॥ वक्रः ॥ यनयं मित्राद्यावृद्धयः कस्य २

क्रिपयगोविन्दनाम

सहस्रकं चक्रं नुदवमासर्वक्रिनिञ्जितलवायुवः॥ यावमनुस्मिन्नादवायावज्जामदिनयवचार्कगगधयावम
मावमत्वं विजयीतवः॥ ॥ थनयुमिष्ठाकुरुयः ध्वजः यमाय कुरुयः॥ जलमधि। ग्वलमधि। नाय। अक्रन। दारु
स्वां। सिद्धास्वां। दकनं पुयक॥ ० ॥ थन। आद्रुमि। विय॥ सरु। साद्रुमि। इय॥ वल्लिविय॥ वाक्युजायाय॥ मकुल
थिय॥ स्वातवाय॥ किमन॥ युर्हयाय॥ आशिवा। द॥ विमर्जन॥ मयननय॥ विनपूजा॥ दक्रनादान॥ निमना॥ ३२
करुविय॥ अष्याद्रुमि॥ विमर्जन॥ वल्लिकाया॥ ० ॥ थनलि। आगमस॥ थयिंइ॥ मसं॥ वमिडम॥ दालंयुजायाय॥
समयाचक्र॥ गनवक्र॥ गाम्बुलदानं॥ ॥ ॐ॥ मिमि। दादा। दादनविधि समाप्त॥ ॥ ॐ॥ ॥ ॐ॥ ॥ केलन। रावना॥ ॐ॥
मटिनिभुंयमाननननं॥ नंजा नवविस्म॥ दूज॥ विधवजस्मिन्॥ दूकावकिवधं॥ जर्जलवजविभये॥ स॥ वे॥ कवधुगनं

: वज्रपाकालः पञ्चलः भल्लमालविमानः मध्यः जगद्गङ्गासङ्गालविश्वकुलिभमयिरुमिर्विहाव्यः ॥ नमः (ध्वज) टिनिव
 ऊसलत्रुपात्मपत्रावल्याः ऊलाकवियाः पत्रमानाः वज्रदं कालो विधायुस्यसु र्नेववकालीनाद्यालीटवत्रधद्यना
 छिक्कम्यकुध्वनकस्याननयवः ऊलमविचिसव यनः कवललन्निव निखिलजगद्विप्रवृत्त्यानः नीलपीतः
 हविः मूलसर्वगलः वक्रगयाडडुकटललि जिह्वः सुखसुखकुटिलः वक्रवर्तुः जिनः यन्मुद्रामखनाः स
 लाटसु पंचकपात्रगत्रावत्रदः सकशिलः ॥ अथी ह्यधः ॥ १॥ मुकुमवलः खयायायुवर्मावला नीलाननवलपी
 मार्कः ॥ ऊलकपिलकनलः ॥ नक्रकादिनागराजाः कनककुला वक्रयध्वनायाः वज्रमुखिद्ययः एषलमः कनिष्ठाद्ययः ॥
 खलितं नर्कनिद्ययः यस्यमिति ऊलाकविजयमुडया स्वाजय हासमायत्रः सर्वकयायाः अक्रुअया (ओ) वामायाः

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

कपालखट्वाङ्गदधना गङ्गुङ्गकालमुखप्रदिग्धः स्वकृत्तनः ईकात्रानुप्रहृतवर्गिहिः दग्धदिविप्रानाकृष्ण ई
कालसूत्रिदधनाकाधसुसमर्पयन् ॥ ॥ यतः किलनसः आक्रयसः यायादिनीलाङ्गनः लासग्निसका विधि
(यं) पूजायाय ॥ ऊधर्मायुक्तं ॥ यायेहला ॥ ० ॥ यत्किञ्चिदशया विधिसमाय ॥ ॥ ३३ ॥ ॥ उं नमः ॥
इर्जमित्यनिभाधनयाजाय ॥ ॥ नमो अस्मि
कृकृकृकृकृकृकृ ॥ कायां मकुलवाय सुक
अलंकालनयः मकुलयादथुसधर्मवक्रमुद्रायाय ॥ पूजाथपत्रपङ्कजः कञ्जः सयं मत्तः पञ्चगव्यः पाण्डुः म
कुलज्जाम् अस्मिन्निवस्य भः साकृत्कायननं हि स्यं नय ॥ ध्यायदशनः सलिमिनायालखटाशमयः ॥ ध्यायंदन

३३

म
३
७
९
१०
११
१२
१३
१४
१५
१६
१७
१८
१९
२०
२१
२२
२३
२४
२५
२६
२७
२८
२९
३०
३१
३२
३३
३४
३५
३६
३७
३८
३९
४०
४१
४२
४३
४४
४५
४६
४७
४८
४९
५०
५१
५२
५३
५४
५५
५६
५७
५८
५९
६०
६१
६२
६३
६४
६५
६६
६७
६८
६९
७०
७१
७२
७३
७४
७५
७६
७७
७८
७९
८०
८१
८२
८३
८४
८५
८६
८७
८८
८९
९०
९१
९२
९३
९४
९५
९६
९७
९८
९९
१००

नः सिद्धयामु जा निया सा नय ॥ ध्यां दन च य प्र डा ह य प्र न य ॥ पंच व ह न य ॥ ध्या द ड न ॥ ज्ञिया व न य ॥ ॥
दश जा दिनं ॥ ध्या यिं ॥ ॥ य न ना या य ॥ ॥ ज्ञिया सि य न ॥ लं ख ॥ सा इ इ ॥ इ इ ॥ ध ड ॥ क सि ॥ ध ना ॥ ३ गु णा म् ॥
वि ध द क ॥ य क व ला ॥ य क म न ॥ न स्वा वि कं ॥ ॥ ध नि ॥ ॥ १ वा स्यं गु न्म कु ल या य ॥ य क ग वा स ध न
॥ य क ग वा वि य ॥ सि ध न न य ॥ म कु ल यि न ॥ ॥ कि न न ॥ ॥ १ सि मा धि या य ॥ क अ स यं म न ॥ ध्या यिं वृ जा या
य ॥ य नि मा द ड य ड ॥ ॥ ध न लि म कु ल स ॥ खान न य ॥ ॥ रा व ना ॥ ॥ न मा लि खि न म कु ल व ज य अ
ल स्या स्य न व वा यु र्ग ल न न ल वा स म वा य वि कृ टा ग न स्या न ध्या यी न म स्या न व क स्या य वि वि श्व अ ला ऊ र्ग सि हा
य वि ॥ श्री आ क सि हा र ग वा न रा वे वा च न ॥ ४ स्र वा वं ॥ स्र व र्ग व र्ग ध न ध र्म व क म् ॥ डा १ इ र्ग नि ॥ आ ध न म् ॥ डां ध न ॥ ॥

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

वधविशं वक्रिः रुद्राश्च धनं नैवायं नापधनं वायु जायां धसर्वा च वासुवादी मस्य ममक सम्यक्कां वाधिनी
यमानं गगनधनधिमुक्ता ॥ ॥ धनं कापका जक्रम सादावस्वाः धनं जक्रि स मादनयाय ॥ मनु ॥ उं म
नमूनमहामूनडू रूट् स्वादा ॥ ॥ उपायानं ॥ यदय ॥ उं सर्वपायदहनवजडू रूट् ॥ उं सर्वपायविशोधनव
जडू रूट् ॥ उं सर्वकर्मावधानिरुक्षिकुनुडू
धानिडू रूट् ॥ उं कलशधक २ रुन २ दहनववध
विविधधनिडू रूट् ॥ उं डू रूट् २ सर्वावधनिडू रूट् ॥ उं रुन २ सर्वावधनिडू रूट् ॥ उं रुट् २ सर्वावधनिडू रूट्
॥ उं रुट् २ सर्वावधनिडू रूट् ॥ उं रुट् २ सर्वावधनिडू रूट् ॥ उं रुट् २ सर्वावधनिडू रूट् ॥ उं रुट् २ सर्वावधनिडू रूट् ॥

॥ उँ मथ २ सर्वमि र्या गज नि दु दु दूँ दूँ दूँ ॥ उँ सर्वपाय वि (आ ध नि ध म २ धू प य २ दूँ दूँ दूँ ॥ उँ सर्व इ र्ज नि वि (आ ध नि धू य
वि ला कि नी दूँ दूँ दूँ ॥ उँ सर्वपाय वि (आ ध नि स ना व ला क क नि दूँ दूँ दूँ ॥ उँ सर्वपाय ग नि ग ध ना अ नि दूँ दूँ दूँ ॥ उँ न व क
ॐ ग ला क र्ष शि दूँ दूँ दूँ ॥ उँ सर्व न व क ग ला र्ध न धि दूँ दूँ दूँ ॥ उँ सर्वपाय वि (आ ध नि दूँ दूँ दूँ ॥ उँ सर्वपाय ग नि ग द
ॐ न वि ना अ नि दूँ दूँ दूँ ॥ ॥ ध न धू य नि ला ॐ नः । ॐ अ लं ख नं स ना न ॥ वा क ॥ उँ न मी रु ग व र्ज सर्व इ र्ज नि य वि
ॐ (आ ध ना ना जा य न थ ग ना या र्ध न स म्य र्ध व द्वा य न प्र था ॥ उँ (आ ध न २ वि (आ ध न २ सर्वपाय वि (आ ध न मु र्ध
ॐ वि भु र्ध सर्व क र्मा व न ध वि भु र्ध स्वा हा ॥ ॥ ध न ग (आ ध क रा य ॥ उँ न त्र २ व त्र सं र व न त्र कि न त्र व त्र मा ला वि भु र्ध (आ
ॐ ध य सर्वपाय दूँ दूँ दूँ ॥ ॥ स ग नि द र्ज न म रु ॥ पु य्या द क न मा र्ज (आ ध य न् ॥ उँ य प्र २ य प्र रु वं सू र वा व र्ध गं च

ॐ

उखाहा॥ कंअथयसवानगुयचगंधनय॥ उंसर्वनथागनदुर्गति॥ आधनवुंजुंजिंस्वदूंखाहा॥ थनयचगर्वन
साय॥ उंकंकनिश्वाचनिश्वाचनिश्चुमिदुनदुनदुनसर्वकर्मवचनवि॥ आधनखाहा॥ थनसादुदुनय॥
उंजमायवचनवि॥ आधनदुनसर्वपापहंरुट॥ ॥धयिमय॥ उंजमायांयमिदुनदुनसर्वकर्मक्रेयकवि
खाहा॥ थनास्वनांमय॥ उंजमनश्जमनसं
थनसंखलंखनय॥ उंयुस्थश्मदायुस्थजप
स्थखाहा॥ थनलिदुनलि॥ थदकनय॥ वाक्॥ यत्माहुलंसूत्रनयासूत्रयुजिनस्यधर्मस्यजनकथिनस्यनिवृ
ह्यस्यलोकउयंयमिदिनस्यनिरात्मकस्यमत्सङ्गलंरुवउपनसाहिषक॥ १० ॥ थनयविकर्मनंयुजा॥ ॥

कर्मकथादृष्टां सत्त्वानां कर्मभानय ॥ ५ ॥ नमस्कृत्यासीषाय ऊधु कंभवताय नमः सर्वसत्त्ववृत्ताय सत्त्व
इत्येकत्रिंशति ॥ ६ ॥ नमस्कृत्यासीषाय विनामसिधुः शोधननसर्वसत्त्वां सर्वसोऽप्यत्रियुजय ॥ ७ ॥
नमस्कृतीश्वराय कृष्णाय कृष्णकन्दनचतु
षाय आनयतु सत्त्वानां ऊधु कं जगत्सर्वं
व्याचतुस्य धृष्याय व्यादीयाय गन्धदवीन
४३ शायसावनिर्ज्ञानं शाययात्तनमासुक्त ॥ ११ ॥ यदि काये स्मिताय च तत्त्वानि शानया येन ४४ मुदिनाये
दस्मिन्त्वाधि सत्त्वानमासुक्त ॥ १२ ॥ वृक्षचावचुनुजाये साकपात्तव दुर्दिर्ग ४५ अग्निवाक् सवायु च ४६

माधियं न मा सुन ॥ १२ ॥ अन्यन सु दवा डन सं सु स्य न सु ला ग न श व ड य श्र ध वा म न्नी ॥ ६०० दं सु ड मु दा ह व न ॥
॥ ॥ थ नं लि स ना क ल ॥ क्र मा य न ॥ आ शि वा द ॥ वि स र्ज न मा स यं न य ॥ वि न यु डा ॥ द क्र ना दान ॥ कि रू ॥ नि स
वा द व गु नु स क स या नं वि य ॥ द गु लि स क व का य ॥ वि स र्ज न या य ॥ अ स्मि ग व प स स क नां लि का या अ
ग व प स कं नि क ल का य ॥ अ स्मि रू क कृ ग नं र व नं सि वा ड न स्वा चि कं य क ग ध नं य न या रा ड ॥ नृ य न
प न्ने न त्र आ स नं स्यं पा ल वि का ड रि न कं न य ॥ वा नं वृ या ड रा हा सि य ॥ ध रू स्व या न स ड ॥ थ या य
रू ला ॥ ॥ ॥ ॥ थ नं लि व क क कृ ड क यु डा स क नां धु न का रा य य नि वा क ल ॥ अ स्मि सि ला ग व पा षु मि स वृ य क ल का य
॥ थ नं लि कृ य कृ ड वि य ॥ इ व न क ल ड न ॥ इ ड नं दा स्यं इ दा रा य ॥ य न स धि या य ॥ स नि कृ ड रू स धि पि सु थ य ॥ ॥ भु रू ॥

ॐ

॥ दशविंशत्यविधिमाह ॥

ॐ नमो वृक्षाय ॥ ॥ दशविंशत्यविधिमाह ॥ क्रायां वृक्षस्य चानं हलसां कंठा ॥ ह्रीं नं हलसां कंठा ॥ वेद्यरुलां उः
दयक ॥ दशया जडास इडमिनास्वन ॥ रवडास लंस्वमिनास्वन ॥ मालका हिलायक ॥ ॥ क्रायां रवसि ॥ कास्वचकं ॥
माउ द्रुयक ॥ रवाकास्वस्य लाहामिनास्वन ॥ गु
हिसगय ॥ ॐ धर्म धाउग ईस्वाहा ॥ थन वेद्यया
गमाया हं गसम्यकं वृक्षाय नमः ॥ ॐ सु ॥ २ ॥
रामक ॥ निनाकुल ॥ निर्वाह ॥ सर्ववृक्षा धिस्तु धिस्तु नस्वाहा ॥ धाल ॥ ॥ वेद्यरुनिययाय ॥ ॥ थन उडमान गुडम
कुलदनक ॥ वेद्ययुजा ॥ स्नान ॥ पक्वमृग ज्ञानमय ॥ वृ ॥ ज्ञां ज्ञं रवं द्रुं द्रुं स्वाहा ॥ थन चट ॥ सिधल ॥ उडम स्नान

धूप दीपः समारुहः आदिनं थज २ म क नं च य ॥ थन वे स या क स्वात वाय ॥ उँ जा ४ वे ला च नाय व ऊ य व् यं प नी क
 स्वाहा ॥ उँ जा ४ जू क्क पाय व ऊ य व् यं पु नि क्क स्वाहा ॥ उँ जा ४ न त्र स क्क वाय व ऊ य व् यं पु नि क्क स्वाहा ॥ उँ जा ४ जू म्मा य सि द्दिय
 व ऊ य व् यं पु नि क्क स्वाहा ॥ उँ जा ४ जू मा य सि द्दिय व ऊ य व् यं पु नि क्क स्वाहा ॥ थन नाय नं हा य ॥ उँ सर्व न था ग न
 म धि स ग्ग क ल २ ध म्म धा रु ग र्ह स्वाहा ॥ य ध म्म र ह उ य सा वा णा दि x ॥ ॥ थन वे स या क कि न न ॥ उँ म हा
 म्म आ ना धि य नि दु र्ग नि य वि आ ध न वे स रु क्क य क ॥ उँ द मा स पु व् यं न म ४ ॥ ॥ थन गु न्म उ ल वि स र्क
 न या च क्क ॥ ॥ थन क्क आ ग न क्क अ ज्जु म्म लि ज्ज मा न या न वि य ॥ उँ नि नं क्क स्वा य क ॥ ॥ थन क्क अ स म ल य न
 क्क लि स ख पा अ न्ना न कं वा क ॥ अ यं पु म्मा शि धु नो य ॥ अ यं स्वा दि x दि वं ग न यु म्म न्ना म ध्या य न स्य द न
 व

३८

क्रियायि शुभ्य पुथमपि शुभ्यागमार्थं यथागमं यथागमाया निर्णयमनुकुर्यायां सम्यक् कर्त्तव्यं न अहं यद्विशमिर्तं
निर्णयं विधायामिः स्यादि ॥ ॥ हनं वृद्ध्यागमः ३ (थं यत्र कस्मिन् समस्त कृमि लंघयामकनकं वाक ॥
अथ यथागमार्थं विधाय स्यादि ॥ दिवंगतयुक्ता नामध्याय मस्य दश क्रियायि शुभ्य पुथमपि शुभ्या
गमार्थं पादार्थं ज्यैष्ठ्यमीकस्वाहा ॥ ॥ हनं धर्मयाग ॥ ३ (थं यत्र कस्मिन् समस्त कृमि लंघयामकन
कं वाक ॥ अथ यथागमार्थं विधाय स्यादि ॥ ॥ हनं गुणयाग ॥ यत्र कस्मिन् समस्त कृमि लंघयामकन
कं वाक ॥ अथ यथागमार्थं विधाय स्यादि ॥ दिवंगतयुक्ता नामध्याय पुनर्गमार्थं स्यादश क्रियायि शुभ्य
पुथमपि शुभ्यागमार्थं श्रीवदसत्सुखं स्यात् ॥ ॥ हनं दशवक्त्राचार्यगुणवक्त्रं अहं यद्विनिर्णयामि ॥ गुणयागं

वम॥ गुणुयाकस्वाननम॥ उँ नमस्तु सं २ नमानम॥ रुक्मदं त्वा नमस्यामि गुणुनार्थपुसिद्धम॥ ॥ यनं लि
 वेद्यया कृशान॥ योनामनं यादवययवाय॥ ॥ वृत्तलयन कुभ सामल यलकसि लंखया अल ठनकं वाकः
 ॥ अं यं युष्मासि धावसायः स्यादि ॥ ॥ वृत्तम मि यथा नन थागना पूर्ववाधिमस्त्र वर्याव वरि ४ वृद्धे रुग
 हि मातापि रु पूर्वक्रमस्या ४ सकयपुत्रवस्या सुफनी क्रस्य ४ युष्मासि धावसायः काश्चयादि (गा ४ स्य ४ ३२
 दिवंगमयुष्मा युतगमा (र्थस्या युथमयि शु स्य पि शुयार्न दार्थ कुआमनं मयनिष्ठना ॥ ॥ यन कुभ
 ज्ञाननयक ॥ १ मं मवाकं न यता अनमय निष्ठना ॥ यन लपम लायक ॥ लखनं दार्थं अधिमानयाय ॥ उँ
 अस्मन्नं चार्थ पतिय लखध ॥ उँ वसुध विपुपा मद्रू ॥ ॥ यन जावचि नं कुवठचिनक ॥ यल कसि

विष्णुपत्र॥

ज्ञानपत्र॥

सामन्त इदधनि धं कुं अ यं कं स्यं पि कुं जानकं वाक याय ॥ अथ युष्मन्नाहि धव धा न् अथ यादि ॥ यथानन
थगना पूर्वमाधिस सचर्या च न हि वृद्धे रुगवहि ४ मातापि ह्य पूर्वगमस्या सक युवु क्रया सक नीषया ४ युष्म
ना इति धव धा न् काम्यया दि (ग) रु स्य ४ दिवं गन युष्म नामध्याय यन गना (थ) स्या नस्य प्रथमयि कुं
संयुक्ता आदका सलवन सवि चना समात्मा समासा असाका सदधय सधायिक वधसहिता सर्वकृत्ति
न वर्जिता यद्विशने दाम्नामि सपुष्प धूय दीयने वशादि संयुक्ता दिवंगन युष्म नामध्याय काय
सिर्धर्थ प्रथमयि कुं संयुक्तौ मिस्वध इ ॥ खन अगि जानं गय ॥ ॥ स्नान ॥ इत मा रुगे वरु सर्व इर्गर्तिय नि
आधन या जाय नथा गमाया हं न संयुक्तं वृद्धाय नय थ ॥ आधन २ वि (आधन २ सर्व पाय वि (आधन मुद्ध विमु
ल २

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

अदिवंगतः शुभं नाम ध्याय सर्वकर्मविवशवि (आधन स्वध ॥ लंख ॥ उँकं कनिश्यावनिश्यागुवनिश्यामि
हम हवः सर्वकर्म यत्र यत्रादि सर्वसत्त्वानां स्वध ॥ इइ ॥ उँज्मायाप्रतिहम सर्वविवश विनास निरुवः
दूदू ॥ धवि ॥ उँवाधिसत्त्वपीनन स्वध ॥ ॥ यलाकमि ॥ उँनमागुगवम ज्ममकठुवाजाय नथग
प. नायं यार्हमसम्यक् वृद्धाय नमः ॥ उँज्म
वंगतः शुभं कस्य सर्वकर्म कृमकृयं कवीय
प्रमितायुः पुण्य सनंताया पावत्रिका धस्वध ॥ लखनंगमक ॥ ० ॥ उँसर्ववग्वज्रग धस्वध ॥ वट ॥ उँसर्व
विह् मिलककृषन स्वध ॥ सिध ॥ उँसर्वविह् गृधमस्व स्वध ॥ वमात्रासमय ॥ उँसर्वविह् वज्रवागम स्वध ॥

४०

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

॥ जजम ॥ ॐ सर्वविघ्नोपशान्तिनायूजामयः समुद्रसूत्रधसमयद्वै ॥ गंजाय सिंजाय ॥ ॐ सर्वविघ्नवजनेव
यस्वधा ॥ काजा सक्ताय ॥ ॐ सर्वविघ्नजुमकस्वधा ॥ धात्रा ॥ ॐ सर्वविघ्नवज्जदीयस्वधा ॥ मनविय ॥ ॐ सर्वविघ्न
वज्जदीयस्वधा ॥ रु ॥ ॐ सर्वविघ्नवज्जदीयस्वधा ॥ नरुलायस्वधा ॥ ससारुलदकं ॥ ॐ ऊथादिमानः अत्रमं
कल्यासिद्धिप्रसु ॥ धविवाक्य ॥ ॥ यनः स्वाननन ॥ ॐ मूनरमहामूनस्वारा ॥ ॥ यनंलिखववा
सकिनंलंखविय ॥ ॐ नमो भगवते सर्वदुर्ग
नः रुजानः पातासनं चाय ॥ ॥ रुजायाः (१) कुमावयनः यत्नाकस्तिः सामलः कुमः लंखया अलकनां कः वाकयाय ॥
॥ ज्ययुष्मन्नाहिधावशाः ॥ ज्यं ह्यादि ॥ यथा नमः धातां पूर्ववाधिसत्त्वाः ह्यादि ॥ दिवगन्तयुष्मन् प्रथमपिउ

स्य विक्रयस्वानकाक पि कुपान्तार्थ कुआसनमय निदिनां कुमज्जासननय ॥ उं न म वा के न य ता स न म प्र नि
 दिनां ॥ अविद्यानया य ॥ अय क र्थं वा र्थ य नि यु श स्व धा ॥ ॥ धन धन क र्ति इ ड् ध वि दाम ल कुम संख
 नय विक्रय पि कु आ स र्वा र्क ॥ अय युष्मा
 वर्या वरहि वृक्षे र ग व हि ॥ मा मा यि ह पूर्व ग
 का म्भ य म्भ (ग) क र्थ ॥ दि व ग न युष्मा नाम ध्या
 पि कुं ॥ संय ना सा द का स व ल ना स वि य ना स मा सा स मा सा स मा का स द ध य सर्वा य क र्थ स दि ना सर्व क र्ति
 ना य वि य न न द म्भ मि स पुष्प धु य दी य ग च ने व या दि संयु का य वा स न कु ल जा ना अ पु ना य व वा ध वा ज्ञ

४९

गमसुविनिर्मुखाधः साक्षात्कृतं लेखनम् ॥ रुमादकृतं रुपाभायां साधनाति संस्कारहितं विकल्पयितुं सर्वं
 धातुकनिवासिनां सचराचराणां सर्वयुक्तानां रुपाभां विकल्पयितुं मार्गसं ॥ अधनायः प्रथमयितुं स्य वि
 कल्पान् काकयितुं स्य यत्कृमिस्त्वधः ॥ ० ॥ यत्नः साधनासाधनाय ॥ यत्नः साधनायार्थं यत्निकर्मनः ॥
 स्नानं वाकं ॥ उं नमो गवतः सर्वइर्जितिय ॥ वि ॥ अधननाय साधनाय ॥ लंखनयः ॥ उं कंकनि २ सादि
 ॥ इ ॥ इ ॥ उं जमायाय निद्रुग सादि ॥ ॥ धनिकयः ॥ उं वाधिसत्त्वयितुं ॥ सादि ॥ ॥ यत्नकर्मि ॥
 उं नमो गवतः जम्भक जम्भक कुवाजाय सादि ॥ ॥ धनासाधनाय ॥ उं पुष्प २ मदापुष्प सादि ॥ ॥ लंख
 नं गवतः ॥ उं सर्वविभुवज्जितिकरुषः साधनाय ॥ च ॥ उं सर्वविभुवज्जितिकरुषः साधनाय ॥ सिध ॥ उं सर्ववि

वज्रनामसंस्मरण ॥ उज्जम ॥ वज्रनाम ॥ स्वाननेवय धूपदिय सिंहादलदकं थडा २ मनुन क्रापाया (थंरु
 य ॥ उंजथादिमान अत्र संकल्प सिधियस्तु ॥ धविबडि कुर्या ॥ उं वज्रयुक्ताय स्वधा ॥ मधिकुर्या ॥ उं वज्रनाम्बुज
 यस्वधा ॥ गवय ग्वालकुर्या ॥ ॥ धनलरेव नमं लुचुवाक वाय ॥ स्वानवाय ॥ स्वाननन ॥ उं मुने २
 (ॐ) महामुने स्वादा ॥ उं नमो गवय सर्व इर्गमि यविआधन वाजाय स्वादि ॥ उं यथा नमथा गमायां स्वा ४२
 (ॐ) दि ॥ सुमि ॥ उं नमस्तुभ्यं कसिदाय धर्मव कं प्रवर्तन नेधु कं उगत्सवं (आधय सर्व इर्गमि ॥ २ ॥
 ॥ नमस्तु वजाय धर्मव सुखावग १ ॥ सर्वसुखदित्वा नार्थय जाल्मान लपुद अर्कं १ ॥ २ ॥ नमस्तु वजाय धर्मव
 समनाम ल्वावने १ ॥ उं धु कं लि न सर्व जूहि य क पुदायक ॥ ३ ॥ नमस्तु यथाय स्वावय निवक्रु ४ ॥ ज्वा

स्यमिसुखसुधर्मामुयवर्षाक्षे॥ ४ ॥ नमस्तुविश्वेश्वरीषाय स्वरावकमनुष्ठितं॥ विधकर्मकवाक्षुषां सुखा
नां कर्मआनये॥ ५ ॥ नमस्तुमहाश्रीषाय उधुकेमवराययन॥ सर्वसुखसुनाययल्लखइसाकविषयि॥ ६
॥ नमस्तुमहाश्रीषाय चिन्तामसिधुधुधलं॥ नतसर्वसुखीसर्वसंयवियुवयत्॥ ७ ॥ नमस्तुमीश्वरीः
ष. क. आयकुकुचनं॥ चहुर्मावतलंरुगनं॥ सुखानांवाधियायन॥ ८ ॥ नमस्तुमहाश्रीषाय ज्ञानयुग्म
॥ अहनं॥ उधुकेमवराययन॥ सर्वधर्मराजत्वया
यायुष्यादीयाध. ग. अदवीनमासुत॥ १० ॥ दानम. ध. सु. माव. अ. अंकु. अ. पा. अ. स्मृ. ट. के. ॥ शु. द. य. रा. व. नि. ऊ. न. द. व. य. ल.
नमासुत॥ ११ ॥ व. दि. का. दो. रि. मा. य. व. ला. वि. द्वा. व. या. ध. न. ॥ मु. दि. मा. दो. द. अ. रि. ला. वा. धि. सु. त. न. मा. सु. त. ॥ १२ ॥

॥ वृक्ष चाव चन्द्रोये लाकपाल बहुदिर्भ । जग्नि वाक् सवायु धृ रुनाधियं न मासुम् ॥ १२ ॥ ज्वनसुगुवाडन संसुख
 मलु लागुम ॥ वजय अधनामनी ॥ दसुगुमुदाहवम् ॥ ० ॥ अनाकल ॥ उवडसुख समय ॥ ह्यादि ॥ ॥ धनंति
 यलकसि ॥ दामलकुम ॥ लकायदस धूस ॥ लंखयास
 सलसंगुहीमा ॥ अकुजावा ॥ जनायुजावा ॥ संश्वनजा
 ना ॥ नेवसंदिनावा ॥ नामसंदिनावा ॥ सर्वमसलम
 गत ॥ जम् ॥ नामधाय ॥ स्वखावद्यामनगक ॥ दुखधुई ॥ ॥ धनलखकायनया ॥ वनिसियक ॥ वनरुवक ॥ वाकया
 य ॥ ह्यसुमसु मदायावा ॥ ह्यादि ॥ ॥ खानननक ॥ वाक ॥ कंउमहं दु संवुका ॥ दवमासुमाधय ॥ ह्यादि ॥ उंकाव

४३

सर्वसत्त्वार्थः स्यादि ॥ उँउमिषयिषु खधइँ ॥ पिठु विसर्जनयाचक ॥ उँज्जु ४ वज्रमंठु नमः ॥ मंठु नमः विसर्जन ॥
॥ उँखकाव विभुषः ॥ आरुव २ ॥ आगच्छ २ ॥ आकाशधुगर्ह स्वाहा ॥ धर्मधुगर्ह स्वाहा ॥ धनं वै विसर्जनयाये ॥ ॥ धनः
विक्रययिठु ॥ षुसिस्त्रयकलञ्चय ॥ काषया नञ्चवाविय ॥ विद्याया नञ्चवाविय ॥ ॥ धनं लि सक्तनां डी
याडाः षुसिस्त्रयकलञ्चय ॥ ऊजमः कुभजं गुलिकुभत्रयकलञ्चय ॥ धनं लि पिठु थया थसः स्फिनं वि
दिवस्त्रनं हाय ॥ धनं लि सा थसा सं मा ठु क यक ॥ ॥ धनं लि थडा कुभजय नत्रडानमडः कलि संवा
कः निष्क कर्मयायनय ॥ ॥ धनं जिङ्गु मालं याय उ (थं हल ॥ ० ॥ वंद्या इलसाः पथमः १ किमियः १ डिनी
यं १ चतुर्थः १ षष्ठः १ कः कः १ कः सग्वठु स्वाय ॥ कः कः कः कः ग्वठु ३ खूकूकूकू ग्वठु १ कः कः कः कः ग्वठु २ ॥ सडया

७ कादअपि ७ थयविधि॥

यशुहाव. क्तिनंम्बु १ रुला॥ ० ॥ सुमि. वासिस्दअपि ७ थययाविधनरुला॥ २०३०॥ ॥ थनलिस्मिक्
कू. ७ कादअपि ७ थययाविधि॥ ॥ यामवूनं थयकइल॥ वेवरावांठ. यमनंदयक॥ माठइयक॥ रामयाम.
कदवकनवियक॥ थनलि. गुचूमकुलदनक ॥ यामकायक॥ वेव. पिठुअचक॥ वेवपूजा. कायायाथं.
सकमां. थडा२ मंउं. कयक॥ ॥ वेवसस्वा नकायक॥ उंआ४ वेवाचतायवजपुष्यंपमिक् स्वाहा॥ उंआ४अ ४४
कायायवजपुष्यपुमिक् स्वाहा॥ उंआ४ वत्तसं रुवायवजपुष्यंपुमिक् स्वाहा॥ उंआ४अमृमाहायवजपुष्यंपु
मिक् स्वाहा॥ उंआ४अमायसिद्धियवजपुष्यंपुमिक् स्वाहा॥ थन. पंचायदावपूजा॥ स्वानमान॥ सुमि॥ उंनमेशस
वहुयानांउंनधकुलंदक. सर्ववृद्धावयंवेवधर्मधाउनसुमोम॥ ॥ थनगुचूमकुलविसईन॥ ॥

४४

थनंलिः। साम्यान् वरु आदिन सकतां विद्य कच्छय ॥ थन कुभ अंगुनी आगतः उठिलि उऊमकाविय ॥ थन यलककि
कुभ लंख ठानकं वाक ॥ अययुषमाहिध्वन धान् अय्य ह्यादि ॥ दिवंगान् अस्म नाम धयाय उकादमयि युपाम
नार्थ आकमुति रुकायकायः पादार्थ पुनिष्ठ स्वाहा ॥ ॥ थन वृह धर्म संघ नमस्काययावक ॥ थन वेस्ययाः
रुडान् यानासनं चारुययवाय ॥ हनं यय कलि सामल कुभ लंख ठानकं वाक ॥ अययुषमाहिध्वन
धान् अय्य ह्यादि ॥ दिवंगान् अस्मन् उकादम यि युपाम नार्थ कुभागतं मुय निष्ठितां ॥ कुभागतं नय ॥ उ
कादम यि युपाम यज्ञासनं मुय निष्ठितां ॥ नयनं वाय ॥ उं अरुसं वायं पुनिष्ठ स्वाहा ॥ लंखनं दायक ॥ उं वसूध
विपठ पाठं स्वाहा ॥ अधिष्ठान याय ॥ ॥ थन यलककि सामल इध्वनि ध्वं कुभ अंगुनी यि युपाम ठानकं वाक

याय ॥ अयं युष्माकं हि धाम्नाम् अयं, ह्यादि ॥ अस्मन्, उकादभयिषु सं, यिमासादका, ह्यादि ॥ दिवंगम, उकादभयि
शुयान्मार्थ, संप्रयच्छ मिस्वधाइ ॥ ॥ थन स्वान ॥ उं नमो गवतः सर्वदुर्गमिय वि (अधन वाजाय, ह्यादि ॥ थन लंख
मय ॥ उं कंकनिश्वाचन, ह्यादि ॥ इ इ मय ॥ उं अमायापुमिदमा, ह्यादि ॥ ध वि मय ॥ उं वाधिसत्त्वयिन नस्व
ध ॥ यलकस्मि मय ॥ उं नमो गवतः अमनकन वाजाय, ह्यादि ॥ ध, मास्वमां मय ॥ उं पु (स्व २ ह्यादि ॥ लं
स्वनं गाक ॥ उं सर्वविनवजगत्स्वध ॥ थन, वट सिध, उजम, वना वासा, स्वान, नेवय, धूय, दिय, ससा रुल,
धयिव डि, वाकुमधि, ग्वय, ग्वल, थन, थडी शवाकनं चय ॥ स्वान ननक ॥ ॥ ह्यलाम्, ह्यमहायाय, ह्यादि ॥ ॥
थनं लि, पिशुयाकोअ, स्वडालय ॥ कोअ, यानासनं च वाजवाय ॥ ॥ रुनं, कुअ, हामल, यनक लि, लंवायाअन न

कंवाक॥ अथयुष्मन्नाहिधवत्तम् अथं ह्यादि॥ दिवगतं अमूकनामधाय अकादमपि युयात्य विकव स्वा
न काक पि युयात सार्थ कृम अतन्मय निष्ठितां॥ थन कृम अतन्मय॥ उँ वसुध विषय ह्यादि॥ लयक नाय॥ उँ
असुषनं ह्यादि॥ लंघनं होय॥ उँ वसुध विः ह्यादि॥ अविद्यानयाय॥ ॥ थनं लि धनक किः हानल
कृम इह धवि र्थ लास अय कृ स्यं॥ विकनयि
वंगन मस्य पिठ संयिग ह्यादि॥ यवात्म क
उँ नमा रगावत सर्व इर्ज नि यवि (अधन वा जाय ह्यादि॥ थन लंख इह धवि धनक कि धं लंख थव २ वाक
नं कय॥ ॥ उँ सर्व विहू यङ् (धं स्व धा॥ वन सिधव ऊजम स्वात ससादल समरुं थव २ म कुन कयक ॥

॥ धनमकुलधियक ॥ स्वानवायक ॥ उंमून २ महामून स्वध ॥ ह्यक्का मृत्तमहायात्र ॥ धनमुक्ति ॥ उंनममका कसिं
 दायः स्वादि x ॥ ॥ धनभगाकल ॥ उंवजसस समय मूनयात्र ॥ स्वादि x ॥ • ॥ धनधलकसि दामल कुम ल
 स्वपाभ कनक वाक ॥ यास्य गड वियक ॥ अ शंयुक्काहि धात्र धात्र युक्काह्यिना उकादभयि कुपाकधा
 र्थः सखावगिला कध ॥ मवगक कु स्वध इ ॥ ह्यक्का मृत्तमहायात्रः स्वादि x ॥ विसर्जनयाय ॥ उंकगाव
 सर्वसक्तार्थः स्वादि x ॥ ॥ धनयि कुडाय ॥ धु वनं डयक ॥ मजनं डायक ॥ जावभायाय ॥ सनाकल यदयं
 ॥ सुसिसवयकल कय ॥ माठ दूयक ॥ वकनदिय ॥ जिहलसा सयत्रयाचक ॥ सूर्यक अर्थयाय ॥ गुन्यान
 पादार्थयायक ॥ धनं लिगुवनं इडयगिलिविय ॥ इडनं दस्यं कसिहावय ॥ • ॥ ॐ नि उकादभयि कु

४३

थयविधिः॥ - ३३ - ॥ ॥ ममापि हवम ॥ भिक्षया शकास (थया विधन काय ॥ जलसंस्कारः । रुलसंस्कारः ॥
 ॥ थनसिकाया शकास ॥ दिलायक ॥ कुभज्जुनी विय वृत्तलयन कनकं वाक ॥ अथयुष्मात् स्यादि ॥ दिवंग
 मज्ज्स्मयिना पुथमपि शुभान्मार्थं यथा नमथागमायां निरुमनूनाया स्यादि ॥ थन कुभज्या ॥
 लयनमय ॥ थन कायाया (र्थः वृद्ध धर्म संय नमस्कारयाचक ॥ रुनं कुभज्जुनी विय वृत्तलयन कनकं वाक ॥
 वाक ॥ अथ स्यादि ॥ कायाया (र्थः वाक याय ॥ दिवंगमज्ज्स्मयिना पुनगमा (र्थः यथा पुथमपि शुभान्मार्थं
 नार्थः कुभज्जुनी विय वृत्तलयन कनकं वाक ॥ थन कुभज्या ॥ यथागमा (र्थः यथा पुथमपि शुभान्मार्थं
 सुधविषयिणा नमस्कार ॥ ॥ लंखनं सय ॥ उं अथ कनपि हवम स्वध ॥ ॥ थन कुभज्या ॥ जाथुयाडा

पानसमीप, कृत्वा किं कृपाभव कायक, कनकं नय ॥ वाक ॥ अथं ह्यादि x ॥ दिवंगमकमक, नामधाय, पुन
 गमा (र्थ) ह्या, यथनपि सु सप्रय क्ता मिस्वधकं ॥ थन अगिनामं योनकं नय ॥ ॥ स्नान ॥ उत मातृगवक सर्व
 दुर्गति यत्रि (अधनवाजायः ह्यादि x ॥ थनः लंख ३३ धवि, यलकस्तिः थं न सकनाया ल्याखनं सख
 यालंखनयक ॥ थन २ वाक नं नय हल ॥ ॥ थन स्नान ससारुदक या ल्याखनं ॥ कुभ नयः थन २
 वाक नं नयक ॥ थन धूप मग नय, ग्वलया नामनं ॥ कुभ नय ॥ उं यादिय मान अत्र संकल्प सिद्धि
 नरु ॥ थन भिक्क थियक ॥ लंखन मकुल क्ता क्ताय ॥ स्नान यावानं कुभ क्ता नवायक ॥ स्नान गा
 नक ॥ उं म न २ न स मून स्वाहा ॥ क्ता या या (र्थ) कि नन ॥ अग क्ता ॥ थन अथ वा स, कुभ नयः लंख काय न या व,

४०

मयकनकाडा। लंखननकं। शिकानं, पिठुनां स्ववाक्यलक॥ वाक॥ उं जावंन सर्वसत्त्वा सत्त्वसंगदतसंगहि
नाः ह्यादि x॥ उं पप्र २ पप्रस्यगऊ दिवंगनः जूस्मः नामधाय स्वखावतीलाकधु मनुगक दुस्वधु ॥
। थन किमनक॥ उं ह्य क्क म्पु ह्य महा यावः ह्या दि x॥ संवृद्धयुं डनी स्वां ह्यादि x॥ उं वड सत्त्व समय मनुया
लु, ह्यादि x॥ क्रुमद कु संवृद्धा दवता वस् तावयः ह्यादि x॥ कमाव सर्वसत्त्वा थ सिधु उगा यथेन
गागक धं वाधिविषयः उं उ निरु यिं ठ स्वध ॥ कू निविसर्जन॥ थन शिकानं पिठुनां थियक॥ थन
पतां डली व निमि ह्यं लंखयक। लखकायगया व वमरुनक॥ कुम अगुनी मायक॥ थन नि जाथुया यम
व, शिमय ह्यायक॥ ॥ x हा x ॥ थन नि य्या ० लाहाननं ननकं कवाक उलाडी अमिस स्काल यावक॥

[illegible]

七

मसुवाय ॥ दधुसु काथमसुमय टकः रियमिः ठकः किरीः मुखः सुसिंहः दधुः लूयनः अदयननं कायय ॥
अगुक्तथसयुजायाय ॥ अकिया जायमनु ध ॥ अमिजा ॥ धल १०२ ॥ ॥ पूर्वः कान माक मसिलः लिंक
शकीरीः कसुविः लू किमिः नीलः लूयनः अदय
॥ ॥ दकिनभाः युजाः दधुधालः गायरुमिवाः
जायाय जायमनु ध ॥ गुंवांज ॥ धल ॥ १०२
नः लू कसखाः यप्रवागः लूयनः अदयननं कायय ॥ युजायाय जायमनु ध ॥ डीमंडी ॥ धल ॥ १०२ ॥
॥ उरुयसु ॥ मासुलीनाथुमिः अचुः अरुनामिखाः भीलः लू गनुठः मलः लूयनः अदयननं कायय ॥ युजायाय

॥ जायमकु. ध ॥ जूँदूँ जूँ ॥ धाल १०८ ॥ ॥ दनं हाना ॥ शायु साम ॥ वसा जन ॥ अजरु पिस्वां ॥ अगुन ॥ अंख ॥ लयन
॥ अहय नय ॥ पूजा याय ॥ जायमकु. ध ॥ उँवज वजिनी दूँ ॥ धा १०८ ॥ ॥ दक्षिण ॥ मू ॥ वीना थुमि ॥ कृतदा ॥ वा
न ॥ नावन ॥ लयन ॥ अहय नय ॥ पूजा याय ॥ जायमकु ॥ उँवव वजिनि जों ॥ धा १०८ ॥ ॥ पच्छिम ॥ स्ता
नवा ॥ सूनमा कि ॥ लरुना मूल ॥ नकव चन ॥ लस
जी शिजी ॥ धा १०८ ॥ ॥ उरुन स ॥ एका ॥ कंसमा
य ॥ जायमकु ॥ उँकर्म वजी विज ॥ धाल १०८ ॥ ॥ अयिस ॥ कावान ॥ शिव ॥ क्रियमि ॥ जिनी रुल ॥ गठवन ॥ मोठि
॥ नयन ॥ अहय नय ॥ पूजा याय ॥ जायमकु ॥ उँवज ला म्भ दूँ ॥ धा १०८ ॥ ॥ नेसयस ॥ मिमि ॥ पीयगु ॥ रुकी ॥

क्रवः। लीप्यकः। लयनः। अहयनः। नयः॥ पूजायाय॥ जायमनु॥ उँवजमालाजौ॥ धा १०८॥ ॥ वायव्य कथास॥ रामः।
मिधुः। भुकम्यावः। भवयः। वेदुर्यः। लयनः। अहयनः। नयः॥ पूजायाय॥ जायमनु॥ उँवजमीनकी॥ धाल १०८॥ ॥
ॐ मानकथास॥ कयगुनीः। कंभनंठः। लडाठः। का ० पत्यः। रुनथी॥ लयनः। अहयनः। नयः॥ पूजायाय॥ जायमनु
॥ उँवजमालाजौ॥ धाल १०८॥ ॥ धमः। गुयादमः कथास॥ धार्थविहि॥ धातुः। अरवडि॥ गधः॥ लयनः। अहयनः।
सुसिहं॥ आदिनं नयः। दशनः। वलनयः। थडी २ मनुनं। जाययाय॥ धाल १०८॥ ॥ धनं। सियः। रूपहावः। पूजायाय॥
धमधूनडाशः। सिजलपनिनं। कायायावः। धयादशनः। यिवसित्रीकाथनइला॥ ० ॥ ॥ धनः। यिवसित्री
काथनयाविधन॥ पूजाथपना॥ जगः। कभः। नागयः। सयं। मनः। यकगव्यः। पाज॥ ॥ धनः। गुनमः। गुलयाय॥

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

॥ प्रिसमाधियाय ॥ कवसु सयं मन नागया यज्जयाय ॥ थन यिप्रसिस ॥ वत्ता न्यासयाय ॥ यिप्रसि श्रोका थन
॥ थनमजाम (थं) अग्निस्तु यन जग्मदु निदुय ॥ थन यज्जयं वयू जायाय ॥ दवनादु निदु निदुय ॥ थन गुनू या
मकुटनं थाय ॥ वज्र य नृ जास्यं ॥ उयादस कथा स नत्त न्या भयाय ॥ यविक र्म नं जाययाय ॥ यूजायाय ध
नकाडा मिजल यनि नं काया सं गय ॥ थन यि प्रसि श्रोकाया सस ॥ उथा सखा सर्व रूप निनं मोलाडा यि
प्रसि श्रोका थन इल ॥ ॥ थनं लि स्नान करु ल न्त्यं सावना ॥ उं ऊ का प्रश मुका शाल चकं नदुय वि आ ॥
कायजं विश्व दलय प्रं गय श्री उं का थन च द्रम तुलं नदुय श्री आ कायजा यप्रमार्थ स्वतावा यशिका विहाव्य ॥
नत्समं स्नान सत्त स्व छदी उ किन शा नी न नजा नरा व्यं ॥ स्व रु दि उ मयू खानी नं गथा गना दिक ल भज ले नरि वि

ॐ

॥ थन याथादिनीलाऊन। कृअनंस्वनंस्वान। पंचगव। पंचगव। नस्वान॥ वट। सिधल। डा। जम। जूड
अल। स्वानमाया। डीवंगम। यिर्यगुमाला। कृठ। पताय। आदिन। यूजायावक॥ धूय। दिय। यय्यंनंइल॥ ॥
थनेलि। पंचभुजकानं। दिखडा। स्वानमाला। व। जमदिमनं। कडाडी। गुचूनं। अधिस्वनयाय। मरु। ध॥ डंम
मारुगवम। वेभावन। यवमवाजाय। स्वादि॥ धल२१। जाययाय॥ डंधर्मधुगईस्वाहा॥ धल१०८॥
जाययाय॥ थनस्वानकय। वडसंथिय॥ म। यंचूय॥ यामधि। ग्वनधि। सिहास्वां धननंइय॥ ॥
यधर्मा। युनिहयाय॥ ॥ थन। जाडू। निविय। मरु। ध॥ डंजूमता। ग्नस्वाहा॥ ॥ थन। मानसायय। धावासा
यक॥ दभवलिविय॥ वाकयूजायाय॥ मरुलथिय। स्वानवाय॥ यूनीयाय॥ आशिवाद। विसर्जन॥ सय॥

२४ दमि तु यद्यदि क्षेपः॥

नमः॥ विष्णुयूजा॥ दक्षायूजा॥ अष्टाङ्गनिर्याय॥ ॥ॐ निबोकासिदकयाकर्मविधिः॥ ॥ शुभ॥
॥ ॐ३॥ ॥ उँ नमः श्रीशिवजसत्त्वयः उँ नमावृद्धायः ॥ उँ नमः श्रीलाकनांथायः ॥ ॥ नमो वाठभयितुथ
यविधिः ॥ ॥ यथमंरिलायः ॥ मालक्यामं इल्लवेद्यः गालायः मनः काकपितुः खानपितुः यमपि
यामनं स्वस्तिवाय १४ था वायः ॥ ॥ श्रिया कसः वादभक थाम स्वस्तिवाय १५ ॥ ॥ धील स्वयुक्ता
याम स्वस्तिवाय ३ ॥ ॥ थनयामं रिलायः ॥ ॥ ॥ थनऊलयाउरूपतायायः ॥ लख साइड मड्ड धड
धनकास्ति धन ३ थनरूपतायायः ॥ ॥ थनलि विसर्वं केशस्यं मन पकरगेच याप्र पुनिमादिस्तय
नायायः ॥ ॥ प्रचास्या गुप्त्रमकुलयायः ॥ यकगवासाधनः ॥ यकगवावियः ॥ सिधलनयः ॥ मकुलथिनः ॥ कि

٦٦

कन। विसर्जित। तं ख वलि कय॥ तिस मा धिया य॥ कुअ। सयं मर यूजा या य॥ दडा यूजा श्वन धून काडा॥ यि कु थ
यक म्क या त॥ गुप् म्क ल दन क॥ विसर्जित या चक॥ ॥ थन जल या ज सयं वाप वा ल य जा या य॥ सु नि॥ उँ वज
मर्ज न्यां स्वयं जल या जं मिदं यूष्यां न क य न म २ ॥ १ ॥ उँ दग्ध या जं मिदं यूष्यां दग्ध या जं न म ४ म ४ ॥ २ ॥
॥ उँ दधिया जं मिदं यूष्यां दधिया जं न म ४ न म ४ ॥ ३ ॥ उँ मधू य न या जं मिदं यूष्यां घन या जं न म ४ न म ४ ॥
॥ ४ ॥ उँ मयं या जं मिदं यूष्यां मयं या जं न म ४ न म ४ ॥ ५ ॥ थन कय वा म् कु म्क ल न क यं ज्ञ य म हा मा
न वा क य द य॥ ॥ थन य द क्रा य क॥ ज्ञ या वा न वृ य क॥ कु म्क विय॥ हा ग थ य क वा क॥ उँ ख लु २ ख ध
हिं लु २ ख धा॥ ॥ थन ऊडा कु न का या डा॥ ये ह्य वि म्बू द य क॥ या ल म् मा य ज्ञ क उ ख क थ न॥ वा क॥

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय

॥ उँ धर्म धातु गहं स्वाहा ॥ ॥ खान राखन वास्यं वाक ॥ उँ वेला वनाय स्वाहा ॥ ख्यादि x ॥ ॥ ॐ धि स्ते नै यो यै ॥
वाक ॥ उँ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ उँ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ख्यादि x ॥ ॥ ॐ नै नै ॥ ॥ थन वेला ॥ गंधाय नमै ॥ खानस्यं रा
वना ॥ उँ नमो सर्वदुर्गजि यत्रि ॥ अधन वेला रुहा वाक वडादिकं स्वाहा ॥ ॥ थन लंखन दाय ॥ उँ सर्वदुर्गजि
यत्रि ॥ अधन वेला रुहा वक वडादिकं स्वाहा ॥ ॥ ॥ थन वेला रुहा वक वडादिकं स्वाहा ॥ ॥ उँ नमो भगवते वासुदेवाय ॥
कडुवा जाय ॥ नथ गनायार्दन ॥ सम्यं संवृत्ताय ॥ नथथा ॥ उँ मुख ॥ २ समय ॥ २ आक ॥ २ दान ॥ २ जस्मा थाप ॥ नि
वायं ॥ निर्वचन ॥ उँ आव कि ॥ मरुत ॥ उँ सर्ववृक्षानां धिष्ठानां धिष्ठिं स्वाहा ॥ धान ॥ ॥ थन धल कलि साइड
न संस्ताना वाक ॥ उँ य संग लं ॥ ख्यादि x ॥ ॥ उँ वृ ॥ ज्वा ॥ डि ॥ खंडं ॥ ॥ लंखनय ॥ उँ जथादि ॥ कामा कन ॥ ख्यादि x ॥ ॥

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय

॥ थन वन सिधन ऊऊ म स्वास नेविश मन थन २ वाकनं कय ॥ ॥ वेसयात अर्ययाय ॥ वाक ॥ उं उमद
कुनिरुन्यन ऊर्म छाव विनिर्मकं गदिमां अवन उयं सर्वदुर्गमि पवि (आधन वेस न ल ग मा च का य अर्यं पु मि
कृ स्वाहा ॥ ॥ कि न गो ॥ कु नि ॥ उं मून २ मदा मुदो न्य स्वाहा ॥ उं न मा रु ग व न सर्व दुर्ग मि प वि (आ ध
न वा जा य म था ग मा या र्ह न स म्य सं व द्वा य न य थ ॥ उं (आ ध न २ वि (आ ध न सर्व पा य वि श्व ध न ॥ उं
गु रु वि गु रु दि वं ग न अ म क न म ध्या य सर्व क र्मा न व न श वि (आ ध न ॥ उं न मा ध र्म वा जा य गु र्वै सृ टि क
सं का सं म हा न उं पु रा स्त वं सर्व पा य रा यं गार्ग मा च या मि स न ध उ य ४ द कि (१ म दि स्वा सै नुं धं कृ व नु
ति वि क र्मी द कु रू कं म हा ध्या नं पु ना धि प म ह र्दिकं रा व य स म नि र्यं ध र्म वा जी न म सु न ॥ कि न नं न म रु

यनकाकविभुयय

लयाय॥ ॥ यमंलि दशयाहडानमिंयकथम सुवाचयमजनकंवाकयाय॥ अश्रुत्यादि॥ ॥ उथासुम
थागमायां चर्याचलहि रिमातायवि पुर्वगमनस्य सर्वपुष्यस्य युष्मन्विना अमुकनामध्याय पुथमसि
लसं द्वादभंउडिहिर्धु काकयिभुयस्वा नपिभुय कुशमनमूय निधिनां॥ कुभनयक॥ ॥ उंम
म्यवाकनयडासन संयक्रामिस्वदा॥ लयमया य॥ ॥ उंजुस्याक्रशंवार्ययिहयाउंनस्वधा॥ अधिस्व
न॥ ॥ उंवभुंदलि पिहयाउंनस्वधा॥ लखनंदाय॥ ॥ यमंलि पुथमयिभुथय॥ यनककिंनराजिसवस्य
यिभुम्वठजानकंवाकयाय॥ ॥ अश्रुत्यादि॥ यथागतथागमायां त्यादी॥ युष्मन्विना अमुकनामध्याय
पुथमसिल मुद्रिसं द्वादभंउडिहिर्धु काकयिभुस्वधा॥ दनवास जजसंनय॥ विधिर्यपूजायाय धूप

जं३

दियगधनेविश्रुतमन्त्रादिसमन्तकृतयक॥ थडावाकनं॥ १ ॥ थनलिखानयिंथय॥ ॥ दयवासा
ववखदमय॥ वाकसकमांड(धं)यायइत॥ १ ॥ थनलिमासयिंथयक॥ थलककितं जादामिसवृष्यं
यिंथुम्वज्जानकं कुअदामल गस्यंवाकयाय॥ ॥ अयसादि x युष्मन् अमुकनामध्वाय पुथमसिद्धमा
द्विसं सिद्धर्थं पुथमयिंथुं स्वधा॥ १ ॥ अ
सिद्धर्थं द्वितीययिंथुं स्वधा॥ २ ॥ अयं x
हृत्तिययिंथुं स्वधा॥ ३ ॥ अयं x युष्मन् पिना अमुनामध्वाय वदुर्थं (आमसं सिद्धर्थं वदुर्थं यिंथुं स्वधा॥
॥ ४ ॥ अयं x युष्मन् पिना अमुकनामध्वाय पक्कमद्वयसं सिद्धर्थं पक्कमयिंथुं स्वधा॥ ५ ॥ अयं x

۵۸

विभुषणायाय॥

॥ उं नमो गवतः सर्वदुर्गमि यत्रि (आ धन न जा जाय न था ग ना या र्ह न संम्य क्त्वं वृद्धाय न यथां । उं । आ धन २
वि (आ धन २ सर्वया य वि (आ धनः मुख वि मुख दि वंग न च मु नाम ध्याय सर्व कर्मा वि वर वि (आ धन स्व धा प लं व
नय ॥ ॥ उं कं क नि २ वा च नि २ यो उ च नि २ पु नि रु न द व २ सर्व कर्म य वं य ना हि सर्व सत्त्वानां च स्व धा
॥ दु इ नय ॥ ॥ उं अ मा यां पु नि रु न सर्वा व व र वि ना स नि रु न २ दू र दू ॥ ध वि नय ॥ ॥ उं वा धि
सत्त्वयी न्न त स्व धा ॥ य स क मि नय ॥ ॥ उं नमो गवतः अ म रु क रु वा जाय न था ग ना या र्ह न संम्य
क्त्वं वृद्धाय न यथां । उं अ म रु न २ अ मि ना र्ह व अ मि न रु र व अ म रु वि ज्ञा न ग नि न्य दि वंग न स्य अ म रु क र्म
सर्व कर्म कृ ग कृ यं क री य स्व धा ॥ अ मा रा २ न मि नय ॥ ॥ उं यू र्थ २ म हा यू र्थ ज्य वि मि न यू र्थ ज्य

त्रिमितायूयुष्मन्मन्त्रावायवविष्वा (धस्वधा॥ लखनं गार्क॥ ॥ यवपदाययुजा॥ उँ सर्वविह्वजगा (धस्व
 धा॥ चट॥ ॥ उँ सर्वविह्वमिलकसूयनस्वधा॥ सिध॥ ॥ उँ सर्वविह्वरुडमुखस्वधा॥ चमात्रासमय॥ ॥
 ॥ उँ सर्वविह्ववजवागस्यस्वधा॥ जजम॥ ॥ ॥ उँ सर्वविह्वयसायात्रिमितायूजाभयसमृद्धसूत्रधसमय
 दू॥ मंजाय हिंजाय कय॥ ॥ उँ सर्वविह्व वजनेवयस्वधा॥ हाजा सक कय॥ ॥ उँ सर्वविह्व जँ
 मयस्वधा॥ धालाकय॥ ॥ उँ सर्वविह्व वजदीयस्वधा॥ मर विय॥ ॥ उँ सर्वविह्व वमस्वधा
 ॥ रु कय॥ ॥ उँ सर्वविह्व जाम्बिबरुलोयस्वधा॥ सिमरुनदकं कय॥ ॥ उँ जथममाने जत्रसक
 न्यसिध्वनरु॥ धविवाक्य॥ ० ॥ ॥ यनयनयिथय॥ मास यिथय कस स्वस्तिवाय॥ ॥

[illegible]

दिजानुयाः माउनरुमयादयाः अनायोसर्वगामध जायन वृद्धविर्यवान् ॥ मासयि शुभदानन कायसिद्धिचर
उनाः मिसरुसकृताचव मासयि उं नमा मुन ॥ ॐ ॥ ॥ धर्मसि सिंघु कथासु खलि चाय ॥ कुमलामल

कुमालपक कनकं वाक ॥ अशं x युष्मन् यि नाः अमुक नाम ध्याय वाउमयि शु उधलनाथ के आसनम्
यमि विनां ॥ कुमलामल नय ॥ ॥ उं नम्य वाक नय गोसेन मय निदितां ॥ लयम लाय ॥ ॥ उं अशं क्रयं ॐ
यमियम स्वध ॥ लखनं दाय ॥ ॥ उं वसु उ लिप हया कु स्वध ॥ अ धि रान याय ॥ ॥ धन यल
कसिनं नासा मिसवस्यं यि शु गवद कनकं वाक ॥ अशं x युष्मन् यि नाः अमुक नाम ध्याय युथमं अविचि मला
नवकः उयत्र इः खमाच नार्थः वाउमयि शु संयुक्ता मिस्व धा ॥ १ ॥ अशं x युष्मन् यादि x दिमिय यिवकं

सु
अ
श
म
य
॥

ॐ

हु. इ. इ. र. मा. च. न. अ. र्थ. षा. ठ. अ. पि. ठ. सं. य. क. मि. स्व. ध. ॥ २ ॥ अ. र्थ. य. यु. क्म. न. ह्या. दि. र. ह. नि. य. रि. र्थ. क. स. न. ग. उ. य. न.
मा. च. न. अ. र्थ. षा. ठ. अ. पि. ठ. सं. य. क. मि. स्व. ध. ॥ ३ ॥ अ. र्थ. य. यु. क्म. न. ह्या. दि. र. व. रु. र्थ. प्र. र्थ. न. म. न. व. य. व. उ. य. न. वं. धि. न. म. र्थ. अ. ध. न.
र्थ. षा. ठ. अ. पि. ठ. स्व. ध. ॥ ४ ॥ अ. र्थ. य. यु. क्म. न. ह्या. दि. र. प. क्म. म. व्या. धि. न. का. नि. सा. न. इ. इ. र. मा. च. न. अ. र्थ. षा. ठ. अ. पि. ठ. स्व. ध. ॥ ५ ॥
॥ अ. र्थ. य. यु. क्म. न. ह्या. दि. र. व. क्म. म. क्म. वि. या. न. वि. उ. दा. दि. मा. च. न. अ. र्थ. षा. ठ. अ. पि. ठ. स्व. ध. ॥ ६ ॥ अ. र्थ. य. यु. क्म. न. ह्या.
दि. र. स. क. म. स्त. नि. क. ल. उ. य. न. इ. इ. र. मा. च. न. अ. र्थ. षा. ठ. अ. पि. ठ. स्व. ध. ॥ ७ ॥ अ. र्थ. य. यु. क्म. न. ह्या. दि. र. अ. क्म. म. इ. इ. र. वा. इ.
खा. य. न. म. य. न. ना. ना. क. म. नि. वा. यि. क्म. य. न. इ. इ. र. मा. च. न. अ. र्थ. षा. ठ. अ. पि. ठ. स्व. ध. ॥ ८ ॥ अ. र्थ. य. यु. क्म. न. ह्या. दि. र. न. व. न. अ. ध.
मू. ख. उ. र्थ. य. न. उ. य. न. इ. इ. र. मा. च. न. अ. र्थ. षा. ठ. अ. पि. ठ. स्व. ध. ॥ ९ ॥ अ. र्थ. य. यु. क्म. न. ह्या. दि. र. द. स. म. अ. वि. मू. ख. उ. य. न. इ. इ. र. मा. च. न. अ. र्थ. षा. ठ. अ. पि. ठ. स्व. ध. ॥ १० ॥

४२४ मावना र्थः पाठः अयिर्लुं स्वधः ॥ १० ॥ अर्थः युष्मन्त्यादिः न कादः अदः अनायागर्कः कः नत्या यमावना र्थः पा
 ठः अयिर्लुं स्वधः ॥ ११ ॥ अर्थः युष्मन्त्यादिः कादः अदः मि किं टात्य न दुः ४२४ मावना र्थः पाठः अयिर्लुं स्वधः ॥ १२ ॥
 अर्थः युष्मन्त्यादिः रुदः अदः गमाथे कावः रुमि उत्पन्नः ४२४ मावना र्थः पाठः अयिर्लुं स्वधः ॥ १३ ॥ अर्थः
 युष्मन्त्यादिः चतुदः अदः कुलधः अमिसाला यो र्गमा ४२४ मावना र्थः पाठः अयिर्लुं स्वधः ॥ १४ ॥ अर्थः युष्मन्
 त्यादिः यनः अदः अजियः उवनयुः ४२४ मावना र्थः पाठः अयिर्लुं स्वधः ॥ १५ ॥ अर्थः युष्मन्त्यादिः पा
 दः अमियाटः नवका ४२४ मावना र्थः पाठः अयिर्लुं संपुः मि स्वधः ॥ १६ ॥ धनः पत्रिकर्मनं कायायाः र्थः युजाया
 यः चटः सिधः अजमः खानः हाजाः सप्तचः सप्तारुः लः धविवाः र्थः धर्माः अकालमुखः दक्रनाः पुर्जनं स्वः वाकनं

५१

मज्झिम (पंचक) ॥ ५३ ॥ ॥ थनंति कुअयुठिकायु ३ ठनकं वा कयाय ॥ अयं ॥ युष्मन् विना ज्मना मध्याय वा ठम
विठु उधालना थं कुअसनं सपुमिठिका ॥ थनकुअयुठिका खाय ॥ जाकि कास्यं हाउलयं पापदमनायाय वाक ॥
॥ उं स्वस्वागमाजयं आगमायं सुदिनमासनमा सिमां नमा आकासधुगुसर्वदवतादिहि ॥ रुगवंता गुहव
मिनां कुववमा दवानागा भुवाज्जा गंधर्वचिम हावगम रुतायता पिआ चायां ॥ सर्व आगत युयुजयन् ॥ अशिव
हा २ सावुध कमागम नचक युगक रु अ धम रुदिघायुखाननां मिथ्यादक वृद्धकां नावयं अगतिगतिं प्राकः
उं अया गुगता सर्वधर्मा अमनागता सर्वधर्मा पयस्य नानुपविता सर्वधर्मा दिव्ययमान समययमानं तद्गुवाच कयमानं
वज्रवं वं ॥ ४ कसासनसुप्रमिथिनां मुने रमहासुन साकमुन स्वाहा ॥ ॥ थनकुअयुठिकास निमकना किमन ॥ ॥

अथ यथापुत्रायार
पञ्चमः

अथ यथापुत्रायार
पञ्चमः

॥ धनं कुम्भपुत्रिकाभिमन्त्रणार्थं यत्रिकर्मनं पूजायाय ॥ यथर्मा अकालमुदकनायार्थं ॥ ० ॥ धनं स्वयंपुत्रियार्थं
उत्थाय ॥ कुम्भसामन्त्रं कुम्भानयनं ननकं वाक ॥ अथं येषाम् पुत्रिणा अमृतामध्याय वातुभयिष्ठु उधालनार्थं कुम्भसामन्त्रं
प्रतिष्ठापितं ॥ कुम्भज्जलनय ॥ कुम्भार्थं वाकं सु
कुम्भदहनकं वाक ॥ अथं येषाम् स्यादिदिवं
ध ॥ नया अजा ॥ १ ॥ अथं येषाम् स्यादिदिवं
अथं येषाम् यदिवंगमयिना अमृतामध्याय वातुभयिष्ठु स्वध ॥ ३ ॥ धनं स्वयंपुत्रियार्थं यत्रिकर्म
नं विधिः पूजायाय ॥ अथर्मा अकालमुदकनायार्थं ॥ ० ॥ धनं अथं कास्यं वाकयास्यं स्ववावति कुम्भपुत्रिकापु

ॐ

स्वाय॥ क्रायाया (र्थ) पत्तिकर्मनं वा कया स्य पुजायाय॥ ॥ धन लयन कुभसामन जनकं वाक॥ अयं x युष्मन् पिना अमुक
नामधाय वाकुभयि कुडधालनार्थ कुभसन मुखि पिनां॥ कुभनय लयन जाय अविस्मृतयाय धनेर वाकं नो
॥ ॥ धन पिनुकनकं वाक॥ अयं x युष्मन् x पिना अमुकनामधाय नस्मिदि (धया) उभयि कुडधालनार्थ
सुखमिच्छा॥ ॥ स्नान लयन सिधय उज्जम मंवाय हिंवाय स्नान राजा सक्कच ससादल धूप दिय उधमा
अकालमुख॥ दन कि उअं कं वाय॥ ० ॥ धन मानसा कुभलयन कुभसामन जनकं अयका स्यं वाकया स्यं॥
कुभलयन लाय॥ पिनुधय विधि (र्थ) पत्तिकर्मनं पुजायाय उ (र्थ) इल॥ ० ॥ धनं लि विकन पिनुधयक॥ विधिकर्म
पुजायाय उ (र्थ) इल॥ ॥ धन सुकुल धियक॥ स्नान वाय॥ न धा स्वां जान॥ दक स्यनं किननक॥ ॥ सुनि॥ ॥

[illegible]

ध्वजश्रीष. कृआयकभक्तदक ४१ चतुर्मात्रवत्तर्गसखानावाधियायन॥ ७ ॥ नमस्तुमीकाश्रीष. कृआयकभक्तद
 नं४१ चतुर्मात्रियलंरुर्गसखानांवाधियायन॥ ८ ॥ लाभामाताकथागिना. नृसादवाधकुय्या। धूपापूयादीयाध. गंध
 दवीनमास्तुन॥ ९ ॥ दानमध्यास्तिमावभ. जंक् भयाभस्तुटक४॥ शुद्धाशरावनिर्जोक्त. दानपालनंनमस्तुन॥
 ॥ १० ॥ वदिकाधोस्तिमार्यध. चतुर्दालयाशिनं। मुदिनादोदभस्तिवावाधिसत्यंनमस्तुन॥ ११ ॥ वक्रडाव
 उवउलाकयाचतुर्दिभ. जग्निवाक्रसवायुध. रू नाधियाननमस्तुन॥ १२ ॥ अकालमुख. सर्वधर्मानामाशं
 नृत्यंदला। उं. आ४. दूं. स्वाहा॥ ॥ उं. मुन२. मसामुनभा. क. मुनस्वाहा॥ यन. नखां. रं. कयक॥ ॥ यन. आगंधा. क
 य. ध. मा. ३. दकं. कयक॥ ग्वय. ग्वल. थ. व२. वाकनं. कय॥ ॥ क्रमायनयाय॥ आसिवादविय॥ सनाकलदयद

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय

य॥ विसृज्य नयाय॥ विकन दयानं धय॥ ऊडानं पिबु धय॥ कपलासं आकथन॥ ज्वासा मालानय॥ ॥ थन धूय
नं डयक॥ उं रगवन् श्री जमक भूयादि॥ ॥ सर्वविन वड धूपं निष्काम्या मि वड धूपं उक्ति कृत्वा ॥ कपलासं मय॥
॥ ॥ मरु नं डयक॥ उं वत्त २ वत्त मा हा वत्तः वत्त माया विमुद्ध भुगति मार्गस्य दस्त्याय वड दिये निष्काम
यामि ॥ सर्वविनं वड दियुक्ति कृत्वा ॥ ॥ ॥ ॥ थन सिद्ध माया पसत्तं स्वथ स्यं ऊडं स्वया क स्वडं स्व
वा ऊडयक॥ कक॥ उं याव न सर्व सत्त्वा सत्त्व सं गृहीता जू ऊजावा ऊजायू जावा सं ध्वज जावा जायादू कावा
बुधि नावा बुधि नावा संगि नावा असंगि नावा नेव संगि नावा नाम सं हि नावा सर्व न सत्ता मया महा मूडामं तु
उक्ति स्थापयित्वा ॥ उं प म २ प म स्य ग रु दिव ग म ज्वा ना म ध्याय स्ववा व स्या न व ग रु रु स्व धा ई ॥ ॥ थन

ॐ

हाकय्य॥ किमन॥ उँसखनिधानाय नमः॥ उँयप्रनिधानाय नमः॥ उँजलया नंनमानमः॥ ॥ समाक्रान्त
मायनयाय॥ उँउ विनयि कुभस्वधः॥ स्वस्वदानंग चर्च॥ ॥ वृत्ति सव्य कलकाय॥ धिमाग स्वातयी तुच्य
क॥ वृत्ति दथुस पुनयि कुच्यक॥ ॥ वृत्ति
नदाय॥ वडनेधिय॥ उँमुपे निष्ठ वडखाहा
य॥ किमन॥ क्रमायनं॥ आसिवाद॥ सयं न
॥ मावसा मदायानयूजायाय॥ समयाचकु॥ कडलायाय॥ गनवकयाय॥ ॥ मालसा कलं चैय॥ माम्बूल
दानं॥ ॥ ह्रिषीठसयि कुथयविधानसमायम्॥ ॐ॥ ७० ॥ उँनमः श्रीश्वरहस्याय नमः॥

ॐ नमः वृक्षाय नमः ॥ १ ॥ नमो नानाया विमलाव विमिमाद ॥ ॥ यथमं नावियः पुत्रुहृदि ननं ॥ यनं लिग्म
 कर्त्तुं स पुं धर्मिर्था दारुलस्त्रां स्नानयाय ॥ गुर्वनं वा स्वधनयाय ॥ उपासनं वा कस्यतं न कुरु कदाचन ॥ ॥
 यनं गुर्वमं तुलयाय ॥ मम युजायाय ॥ येत्यया न अर्चयाय ॥ यकयद्वा न युजायाय ॥ यमिमादशयुजा ॥ ॥
 गुर्वयान विमयुजा दकना दं २ क्रमिं विय ॥ नि सवा किं कृ क्रमिं विय ॥ धर्मि क्रीथं याय ॥ ॥ ॥ धिमियं ॥ ॥ ॥
 गुर्वस्ववि ॥ सा किं मिर्था ॥ धनय किं स्त्रां ॥ स्नान ॥ ॥ २ ॥ हनिय ॥ संख माठ ॥ सन्धव मिर्था ॥ अकन दारु स्वा
 नं स्नान ॥ ३ ॥ चर्तुर्थ ॥ मसु ह विनाम निमिर्था ॥ सय उषदि नं स्त्रा यथा ॥ ४ ॥ यकन ॥ विशा स्ववका ॥ निमि वमि
 र्था ॥ कर्त्तु विन स्नानं ॥ स्नान ॥ ५ ॥ ॥ यत स्वगि दस ॥ जगा सा नोदय कं ॥ कृम सयं मरु यक गवा पाउ धूमि ॥

नागया १

ॐ

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

।यदिदडा॥अपिइ॥दिगुसकचइ॥धूमि॥ ॥विस्वखंनोकथासंयकगवाथायवया॥ग्वमु॥ग्वमयः
माना॥साइइयु॥साधयि॥यु॥सायल॥यु॥कमलखंयु॥॥किर्थयालंख॥यकवला॥संख॥॥गंजाय॥॥अमं
स्तयतायाय॥ ॥अचखंमुनमकुतयाय॥ कर्मगु॥यंरगवास्वधय॥यवगवाविय॥सिध॥नय॥ ॥
मकुतयिल॥स्तानवाय॥किरुन॥विसर्जनं॥पि समाधियाय॥कमस्तयं॥सम॥नागया॥युजा॥अग्निस्तयन
याय॥अग्नादूतियाय॥सामकियुजा॥दडापु जा॥दवताइ॥मि॥आइ॥मिविय॥दसवलि॥विय॥ ॥थन
उपासं॥कखंनंदडा॥थायक॥लाइ॥अथि॥धलंदनक॥मनयुजा॥विसर्जनयाय॥ ॥वेखयाम॥सावनानय॥
उंखसावमुध॥ ॥धूपनय॥अर्य॥नाय॥अर्य॥चुचकि॥दाइ॥स्ताननय॥ ॥उंनमावुदाय॥कवुदावहासाववि॥

वहिदयाय। युवात्मा समविलयि ते धातुकं मनूनाय सत्त्वानां दुःखलूनाय दियोगधे प्रसाधनाय उयउज्जमांस
 र्वसत्त्वानां नूनाया सम्यक्वाधे प्रतिष्ठयनाय ॥ उं ज्ञाः सुगम धे सर्वदुःखदाः ॥ वा नयति ज्जमानस्य सर्वयाचि
 हमाचनार्थं लूकवेद्यरुकात्रकस्य अयं प्रति
 कृत्वा हा ॥ ॥ यश्च यहा लयूजा दकना कय ॥ रुमि ॥ उं नम
 रु सर्वदुपात्तं जिन धातुकलंदक। सर्ववृक्षाव
 यचे स धर्मका तु नम रुम ॥ ॥ यतं लिखक न ॥ अथ न
 संयुवक्रामि उमपात्रा जिका कर्थः माचनं सर्व
 यायानां सर्व किलिबना सनं ॥ ॥ रुमि यय नि गी आ वरु मुनि
 नथ गननं आ ह्यदयका गुरवः समस्तं क कर्म या कौयः रुवया काः पाटकया धे स कर्मा या य माचक या नः उया स
 कर्म वरु याय। यतलि इयुग (थ धा न सा ॥ ॥ यथ मदि वस माभी सः वला हा व स माच लरु रुप विम्वं य कि

श्रीकृष्णसंगकृष्णभक्तनंदनं उच्यते ॥ ॥ इति विष्णुपनिग्रहक्रमव्याप्यनिस्तनं धर्मयाकायाय विरुमात्रधयाय धक
 म्क्रायाकयनिस्तनं क्रायोडयाभनचानः पाषधवुनयायः प्रिनत्रयाभनधयायः वेहविम्बुयुदक्रिष्णयायः
 रुक्मः धनंलि नरात्रधुयकं पावनयाय इत्या ॥ ॥ इति विष्णुपनिग्रहक्रमव्याप्यनिस्तनं धर्मयाकायाय विरुमात्रधयाय धक
 सुधर्मयार्थं रुक्मः पापादियुनिधमने ॥ ॥ इति विष्णुपनिग्रहक्रमव्याप्यनिस्तनं धर्मयाकायाय विरुमात्रधयाय धक
 धूनकाडा धमनं रुक्मः सुधर्मयाथयायः ॥ ॥ इति विष्णुपनिग्रहक्रमव्याप्यनिस्तनं धर्मयाकायाय विरुमात्रधयाय धक
 नावाधवनाधनयाडा पावनयाय इत्या ॥ ॥ इति विष्णुपनिग्रहक्रमव्याप्यनिस्तनं धर्मयाकायाय विरुमात्रधयाय धक
 नसर्वपापं ॥ ॥ इति विष्णुपनिग्रहक्रमव्याप्यनिस्तनं धर्मयाकायाय विरुमात्रधयाय धक

याय वेत्यविमृष्टदक्षिणायाय धमनं रुकाजय नय ध्यानयाय ॥ मवया ज्ञाहिनं वियकाडी रुचमवादि या
 वक्षयाय धमनं धमनं या दागुपाय सकवयुश ॥ ॥ वउर्थदिवसमाभिरु निवादाव समावयम् । स्त्रानदा
 नादिकं सर्ववेत्यपुजा नुकावयम् ॥ ॥ हभि व्यपनि यद्गुक्कूयाप्रमान गधधवसा श्वकूयावनया
 यमनडा उपासक वर्ककर्मयाय धूनकाडी निवदावयास्य वाकाडी गुत्रयाक धर्म व्याख्यातकन
 धमनं धमनं या दायाय सकनारु चिडाहना ॥ ॥ वेत्यादिनाहनं कूर्यादिदावनुवि (अषटश वा
 यिकूपप्रतापीव गूच्छदुमप्रवाहना शरुस्य स्व खवगमवापुयातवदनदानकं रुमिठी स्ववर्णनत्ताति ७
 न्रयानारुया निव । उमनसस्वय कूकर्म विद्याकयाककंदनम् ॥ ॥ हभि व्यपनि धमयाकावनं सदानं धिथ

ॐ ३

समानं स्नानयाता। वेद्यविम्व्यामप्यायाता। विधिकर्ममालममम, विस्तारवेद्यदवात्रय। हिमि, मुधि, अ
धि, अन्यग। दर्म, किहि, दयक, शिनक, माल॥ रुतं दान धर्मीग। धधलसा, अनग, लथ, किमि, सा, मस, वि
मान, रुयाल, खाना, निव, अदिपनं, अन्य
नपर्यन्तं विय॥ रुतं वरुं धर्मी, पूर्णयोय
थ। थयायमरुत, सफ, थवित्रवान, थ। थ
विस्तारस, निस्तानचयक, लक्ष्य॥ ॥ मूठुनी, लवर्ष्या, कदाया, गमय, रुवम, यय, थमा, मुवर्ष्या
या, थनाया, ग, अम, दधि, कयि, नाया, यमं, ग, अ, म, हाया, न, कना, सनं, अ, हा, व, सर्व, व, र्ष्या, वि, अ, व, ट, श॥ ॥

॥ इति यावन्ति धय च गव्य धय गु गयि गु धल सा दाना वर्ध सा क साया ग र्त्तं उत्तरिया डा वा क गु च
 क धल सा डा व क साया वा सा क क साया खि सा क क साया उड मोयु क साया गु धवि सियु क साया
 यल ॥ धन व लुफ सा का स र्त्तं रु स्यं काया डा ध सा मा व लु क र्त्तं म हा या य ना स या मं द नं सा क साया
 काय म र्त्तं सा सियु क क क या क कायानं म हा या य लु क ल ना स र्त्तं ॥ ॥ ग म सु र्त्तं य य र्त्तं द या न
 अ गु सा च न म यं क्री ले स क य लं द या न द धि य क य ना नि ध सा र्त्तं शो क य र्त्तं द या न य र्त्तं म कं क सा द कं
 ॥ ॥ इति यावन्ति धय च गव्य धय गु गयि गु धल सा दाना वर्ध सा क साया ग र्त्तं उत्तरिया डा वा क गु च
 न य ॥ इड ७ ७ ७ मान ॥ यल ७ ७ न य ॥ क म लं स्व ७ ७ ध न य मान नं य क र्त्तं ग र्त्तं मान मा ल ७ ७ ध न नं या य स क

५६

लंतासहयिडा ॥ ॥ सार्थि (गमय दध्वर्यथक मि (अथमिगुयन दयात्क (आदकं कीर्तं उरुमिठुकावयम्
 मकुं वधिभिर्गंकु र्यान्क ल्याक विधिनायथा ॥ ॥ रुमिष्ययनि ध्वय करगव्य सममावयायग (धधालसा
 यलडा (गमयनडा धविडा धस्वमा नायका
 धयालिडा कुमलरेव निर्यया लरेव नायकाय
 वरगव्यस्व धनयाय मकु ॥ उं अमायपविभु
 धनर समकन धिनिर गुरु महाय प्रदं २रुद २स्वाहा ॥ ॥ रवकन ॥ लुषावभट्टस गंरवक (आदक हि (थीपूनि
 मास्मिमा ॥ म्हाक गमि विधा अर्थमी (आदक उदाहि म ॥ ॥ गिषवचं ॥ रुनाथरुगुनु जियनिलकायाय का

सनस विद्वन् जमा दमात्रया वाका स चानगु चाप (थं निर्मल इयाडा चानगु नडाधरु अरिवस कु (आद
 क मिथि दक संख पूर्वया दडा नयागु जियनिरु विद्वन् दगुनु ॥ कन धालसा जिमिसलिस दयाडा चान ज
 नग ननायु कावनया पायदयाडा चारु अयां गविमुक थप्रियाय सकल रुठकया कावनं दगुनु क
 लयालपनिस्यनं साधनया दडा नयागु अम अरिवदक जिमिसलिदपपिठया येया कालस विद्वन् ॥
 ॥ सर्वयायनिना अर्थ युजार्थ पविनाय च मरुका नुलिकानार्थ ददीमगव्यपचक ॥ ॥ हमरा
 कानुनीक नार्थ जियनिरवनाडा दयाकिर्यादस्य पवगव्य विद्वन् ॥ क धालसा जियनिस्यनं मिममसि
 स नडा मयडा कर्मया दयाय सकलं रुठकया कालस ॥ ॥ कायवाक्कीरु मुखा र्थ दुर्जीनि स्वधनाय

३७

व॥ महाकाव्यशिकानाथयदहिमगव्यगयचकं॥ ॥ ह॥ महाकाव्यशिकानाथयदहिमगव्यगयचकं॥
या॥ अ॥ निमग्ननाडानयागु॥ य॥ च॥ ग॥ व॥ मि॥ जि॥ न॥ वि॥ दू॥ न॥ च॥ या॥ का॥ व॥ न॥ धे॥ ल॥ सा॥ डि॥ मि॥ स्थि॥ तं॥ का॥ ये॥ स॥ सि॥ द॥ न॥ या॥ का॥ पा॥ य॥
वा॥ क॥ व॥ न॥ दं॥ या॥ का॥ पा॥ य॥ वि॥ र्हु॥ नू॥ ग॥ न॥ श॥ या॥ दा॥ या॥ य॥ धे॥ या॥ य॥ सु॥ क॥ न॥ रू॥ क॥ या॥ का॥ न॥ न॥ ॥ अ॥ अ॥ व॥ जि॥ न॥ म॥ रू॥ म॥
सर्व॥ धे॥ उ॥ वि॥ धे॥ धे॥ कं॥ महाकाव्यशिकानाथयदहिमगव्यगयचकं॥ ॥ ह॥ महाकाव्यशिकानाथयदहिमगव्यगयचकं॥
ह॥ या॥ अ॥ निमग्ननाडानयागु॥ य॥ च॥ ग॥ व॥ दू॥ या॥ का॥ ल॥ न॥ स॥ धे॥ ल॥ सा॥ स॥ म॥ रू॥ द॥ क॥ क॥ रू॥ स॥ न॥ ड॥ म॥ रू॥ ड॥ का॥ न॥ स॥ न॥ या॥ ना॥
ना॥ द॥ यि॥ ड॥ म॥ रू॥ ड॥ या॥ का॥ द॥ यि॥ धे॥ धि॥ गु॥ पा॥ य॥ स॥ क॥ ल॥ रू॥ क॥ का॥ ड॥ स॥ म॥ रू॥ ड॥ या॥ न॥ धा॥ ग॥ न॥ यि॥ वि॥ य॥ धि॥ जी॥ शि॥ वि॥
धे॥ रू॥ क॥ क॥ रू॥ ड॥ क॥ न॥ क॥ म॥ धी॥ का॥ स॥ य॥ श्री॥ आ॥ क॥ सि॥ द॥ धे॥ धि॥ धि॥ न॥ धा॥ ग॥ न॥ य॥ नि॥ स्थि॥ न॥ धे॥ न॥ र॥ यू॥ ग॥ स॥ धा॥ ड॥ गु॥ रू॥ या॥ य॥ रू॥

थयकगवदयकाश संसालनकायामं । थर्थकलयालयनिस्यनं । थनिडियकनकायाययाकालनस्य
कगवदिवदुनदगुन ॥ ॥ थनयकगवदिवय ॥ ॥ कानांलकायिखासवृसं पानकलकय ॥ ॥ थनका
मालियुजायाय ॥ सिखाधिवाभनयाय ॥ सिखाद्रुति ॥ युर्द्रुतियाय ॥ मकुलथिल ॥ किनभ्यासि
वाद ॥ विसर्जनयाय ॥ सचंनय ॥ विनयुजा ॥ दक्रपायुजा ॥ वाधाक्य ॥ निस्त्राविय ॥ पृवयदक्रनाका
य ॥ दभयाकनर्थ ॥ ॥ थनकुभाहिषक ॥ विय ॥ थन, नि, नयाकनं, कूलश्रय, कूलखाविनस्यं दुधिम
थिस्यं लखसालाशय ॥ रुकदशायाम् आगंकय ॥ गुनसहिमनदक्रसयामं जानक ॥ दिगुमक्रयकय ॥ कामावि
कय ॥ दिगुसमयकाय ॥ ॥ समयाचक्र ॥ कडलावातय ॥ गनयकक्य ॥ कलंकय ॥ मासुनदानं ॥ ॥ रुकिभु ॥

२ अथ नक्षत्राविधिः ॥ ४॥

[illegible]

हिमवथ

॥ गुरुमकुल थापनायाय ॥ मधुसूत चारुलपलवाय ॥ थापनकिमत्र वृत्रकिडाहवकिमय ॥ मकुलवायागुनय ॥ धं
सि नडागुदयागुविदिनाय ॥ गुरुपनिमय ॥ वरूहितं वरू कर्षयका धजा धर्मनय ॥ कुम्भशुकायसूकानंदिन
॥ • ॥ हनं पुनिषादवयान जालः उगलसि
या आदाः सिडाकु झीवा सि कुमान् रुमिनु
पक्षवसुव पक्षरुत पक्षगंध नखाचिक
न सनहादिका माकि धनहायनायाय ॥ • ॥ धनं लि शवायं गुरुमकुलयाय ॥ पक्षगर्व स्वधन पक्षगव्य
विय ॥ सिधुनय ॥ मकुलथिल स्वानवाय ॥ किमन विसर्जन संखवलिकय ॥ तिसनाधियाय ॥ ॥ धनउपाधम

ॐ

या विधिः (र्थः) किलनयुजायाय ॥ पूर्वदिशानि स्थितिः दिगसं किलनमाय ॥ विधिः (र्थः) पक्षपचालयुजा ॥ सुनि ॥ ॥
 थनंलि मूलाचार्याया सेयं कभ मेम नागय क्रोकं सिधम गंकभ थुमि मजान (थं) युजायाय ॥ ॥ पूर्वदिशायुजायाय
 मठुलपुजायाय विधिः (र्थः) इल ॥ • ॥ आवाहं ॥ यायादिः निलांजल लादाग्निरुक्ता मा चामन रुत नाम्नां युजा ॥
 ॥ थनंलि कूलदश क्रथ जिधि क्दिम्वाना ल स्वस्यंदयः कमांकनं नस्यं गुनुमठुलदनक ॥ मठुपुजा
 यायक ॥ यक ग बविय विसर्जनयातक ॥ ॥ ॥ थनंलि कूलदशायाम यनिकर्मनं इसुलक्रियाय इल ॥ ॥
 ॥ थनंलि उयाध्मलनं नडागुहमठुलसपुजा कर्मयाय ॥ क्रथ जिथिनं युजारुल जायकं यलिकर्मनं नज
 मठुलसपुजा ॥ आयां ला यंलां यं कु न ॥ थनंलि यंचलकाया गु दानयुजायाय ॥ आकर्षनसक्त ॥ उं मधिधति

॥ कर्णवधूय ॥ उं यक्षमन रुकं प्रतिकृत्वा ॥ किल जातु जा ॥ यामधि वनामधि कृय ॥ रुक् कयसि ॥ उं न्मात्रजः
यटिन प्रमि विम्बु वज्र विद्रु दकिष्ठा संयु रोक यामिदं ॥ वज्र विं काय ॥ यत्र मन ॥ जाय मनु ॥ उं मलिध शिवर्जिनी
महाप्रतिस्वयं वक्र रं रुरुत्वा ॥ ॥ सुनि ॥ उं प्रमिस्वयं नमस्तुभ्य सर्वसुप्रमिदायकं अंबकृत्तु च वक्ष्मन् सर्वसत्त्वा
मकाययान् ॥ मध्यम ॥ १ ॥ साहसु यमनि ॥ या अर्थानि व अथ ह्यादि ॥ उं क्रीयवसका नाय श्रीमन् श्रीमह
सुयमर्द्धनीह दानकस्य विनचवधकमनाय अर्थप्रतिकृत्वा ॥ युजा ॥ उं कृत्तु च यनंतमशा चट ॥ उं कृत्तु जह
प्रविनायनमभा ऊजम ॥ उं कृत्तु पूष्यं प्रतिकृत्वा ॥ दाकृ आनालाहि स्वां उरा स्वां ॥ उं गुंघुलि धूयंति मंजु यामिदं ॥
॥ सुगुलि धूयं ॥ उं यक्षमन रुकं प्रतिकृत्वा ॥ कलि रुजा कय ॥ वनामधि ॥ गुममसि ॥ उं न्मात्रज यटिनः

पुष्पाकनी. मायुजीवनमस्तु. संविद्यानागीनमस्तु. ३ ॥ श्रीगवनीया ॥ अर्घ्य. वत्स. मय ॥ अर्घ्य. त्यादि ॥ ॐ क्री. पुवस
कावाय. श्रीमन्. श्रीग्री. श्रीगवनिदवी. रुचयकाय. विरुचय. शकमवाय. अर्घ्य. प्रतिकु. स्ताहा ॥ पूजा ॥ ॐ हवी. गवचनं. न.
म ॥ चम ॥ ॐ हवी. रुज. हा. प्रविन. कायनम ॥ जजम ॥ ॐ हवी. रुयु. यं. नम ॥ मू. स्तां. मधू. स्तां ॥ ॐ भाव. धूपं. निमं. उ. याम
हं ॥ गी. ल. धूप ॥ ॐ य. क्श. म. रु. कं. प्रतिकु. स्ताहा ॥ ॥ रु. जामं. वृ. जा ॥ या. ज. म. धि ॥ रु. ल. रु. रु. ना. ति ॥ पु. का. धि. कं.
म. रु. वि. ॥ ॥ रु. मां. रु. जा. न. घ. टि. न. य. नि. वि. म्बु. वि. ॥ धे. व. ज. द. क्रि. ॥ सं. प्र. रा. व. या. म्ब. हं ॥ ॥ जा. य. म. रु. ॥ ॐ हवी. रु. स.
रु. व. रु. रु. टि. यं. वि. वा. कि. नी. य. डू. रु. ट. स्ताहा ॥ ॥ रु. नि. ॥ वे. द्य. रु. रु. वि. रु. सां. म. द. ना. रु. क. वि. रु. मां. का. रु. वा. रु. क. द. नी. रु.
नि. रु. मा. मि. दि. वा. रु. यि. नि. ॥ ४ ॥ ॥ म. रु. जा. न. सा. वि. शी ॥ अर्घ्य. वत्स. य. म. ना. ग ॥ अर्घ्य. त्यादि ॥ ॐ क्री. पुवस. का. वा. य. श्री. म. रु. श्री

हिम

श्रीमज्जान्मदशीदवी, रुद्रायकस, विरुवध, कर्मत्राय, अर्घ्यप्रतिकुस्वाहा॥ पूजा॥ उं वक्रव तु नमः॥ वट॥ उं वक्र
जहायवीतकानमः॥ जजंम॥ उं वक्रयुष्यं नमः॥ कां उं वक्रां कल स्वां॥ उं कलु विधुपं निमं जया मरुं॥ धूय॥ उं य
अमरु कं पुनिकु स्वाहा॥ कां उं तुजा॥ गवम धि॥ रुद्र, ये वेसि॥ कां हानविकं, मनविय॥ जायमनु॥ उं
जमरुवय, विलाकिनी, गरुसं वक्रशीय कूदट् स्वाहा॥ ॥१॥ मां वं जायनिन, यमचिं क, दक्रध सं प्र टा
वयामरुं॥ नूयायमक्राय॥ ॥ सुनि॥ ॥ वानुव कविभवाक्री, विकलाहा, नृहासिमी, यमनागप्रहादवी, नम
कूजगलमानत्री॥ ॥ ॥ ॥ थनं लि उ क दि वि दि ग व लि वि य॥ उं कालिय स्वाहा॥ अग्र॥ उं कलालिय स्वाहा
॥ नेशम॥ उं कं कालिय स्वाहा॥ वायुव॥ उं उं वे ध्वयीय स्वाहा॥ ॥ ॥ ॥ यर वमयवालेयूजा॥ सुनि॥ उं पुनिमत्र॥

१०

४

नमस्तुभ्यं सर्वसंयतिनायत्री संखकु (कुचुव कृष्ण वासनामकायला ॥ १ ॥ कृष्णवर्त्ममहायाना संक धरि महीखशी ।
 दयानुक्तुमसदकि जाधवर्जिनमा न्यहं ॥ २ ॥ महासामापुरादवी देव कृष्णकवी मायुवीयनमस्तु कृष्ण विद्या
 लागीनमस्तु ॥ ३ ॥ चालवकु विसावया विक वाहावृ सासन यमयागभूषादवी नमस्तु गगनमानवि ॥ ४ ॥
 वेदय्यसूकशीलासा मदनासूत विरमा काका दकयमिहकि नमामि दिव्यवृषीशी ॥ ५ ॥ यत्रं वि नः
 उग्रहमकुलसः कर्षन ॥ हावनामय ॥ १ नमा मधवलदक भितकमलाय वि कुकुम मकुलक देवहासक
 वं नापसवृषध्वं नकवर्कु सुजायां भितकमलधवं सूर्यका तिसमपुहं जस्यहाजन कीर्ते कुचुवृष्यं विहा
 व्य ॥ पूजायाय ॥ उं नकव उनं नमः ॥ वट ॥ उं नकव लं नमः ॥ वरु ऊजं म ॥ उं नकपुष्यं नमः ॥ स्वा नय ॥ उं

॥
 ॥
 ॥

हिम.

[illegible]

हयकंठय दानवाक ॥ १ ॥ ज्ञादि ह्याय कास्यय मनाय ज्मकस्य ज्ञायना गका मना र्थ सर्व धनुवज घटि न दुखं ज्
दं सयुय कृमि सूर्य धनुय मिष्ठयना य दकना मयुषा याम्यद ॥ विदिसंभालन ॥ १ ॥ सामया लावना ॥ १ ॥ नमः
वस्यां न नकां शाजाप विप्रियंगु गध मरुल कसा माविप्रनय धन मिटज टा मकूठीरू जास्यां ज्मकसूतक मरुल
धन कृमुदयुष्या वभक ज्ञस्य श्रीवा मधुयं युगा दन साजनं विहाव्य ॥ पुजायाय ॥ ३ ॥ धनव दन नमः ॥ वट ॥
॥ ३ ॥ स्वगज हाय वीम नमः ॥ वरु जकं म ॥ ३ ॥ स्वग पुष्यं नमः ॥ स्वाहा ॥ ३ ॥ श्रीवा मधुयं नमः ॥ कर्पूर धूपं
॥ जाय मरु ॥ ३ ॥ व दामर विक माय श्रीवा मधुयं नमः ॥ ॥ ज्योतिषा मादि ॥ ३ ॥ नमो गवत स्वमाय ज्मक मधुयं
हवाय वरु सयुषाय काभ पुष्य सह माय आस्व गरु नाय शुक्र कास पुष्यं धूपं दीप धर्म यहाय वीम पियाय हं समा

नृद्यय दवदानव कुक्कुटसहिनाय ज्वरनर रुगवन् दानयनः दिनार्थय ज्वरग्रह मकुल मध्य ज्वरपवसाब्दम
रुन ध्रुपदीयादीय निगृह्णानं मासुरुयस्य जीयन कन मस्य पीनिक वागवभानिक स्वमाय ज्वरपेनिक स्वाहा॥

॥ धनिजा ॥ जायभासधि ॥ रुचवसि ॥ लाम

चिकंमनवियमादकनोकांस॥ ॥रुमि॥रहिमकु३,हुषावा

॥ निजनाथं नमाम्यहं ॥ ॥ दानवाब्ध ॥ जय

मदां ॥ १ ॥ स्तु मायश्रीशिविसमूहाय ॥ २ ॥ स्तु तदवताराय ॥ ३ ॥ स्तु कृष्णाय ॥ ४ ॥

अथ यथा गच्छामासुः तथैव गच्छामासुः

स्वमहंदक्रणसंप्रदायमिदं॥ विदिसंनय॥ २॥ जंगल

याः शोचनाः कमादक्षिणद्वयमिदं यथा यच्चिदं न गन्धमकुलशिकुनेयमगायकवर्षेन कवरे वत्तमुक्तिवाम

अकिं धनदक्रि (भववदं साऊनं) मत्स्यमाषरुक्कं बुदादतं वा गुणुलिधुयं विहाय ॥ पूजायाय ॥ उं न क व च नः

नमः॥ वट॥ उँ न क ऊ हा य वी रं नमः॥ वरु ऊ ऊ म॥ उँ न क यू वं नमः॥ क रू वी ल स्वां॥ उँ गु गु नू धू यं नमः॥ धू य
॥ जा य म रु॥ उँ न कां ग क मा ना य स्वा हा॥ ॥ वा क जा॥ ख लू मे धि॥ रु ल॥ न मि॥ सा य ल म न॥ द रु धा मि ची॥ ॥
॥ ॥ अ र्घ्य॥ व त्ता वि द्या ला॥ उँ न मा रू ग व न् अं ग ना य॥ पृ थि वी ग रू सं रू ना य॥ इ न व रु य न लि ना य॥ न क वा स पू र्ण
धू य दी य॥ य हा य वी ना य॥ यि या य अ ग स मा पू र॥ य द व दान व क म रु दा कि न्य स दि ना य॥ अ व न २ रु ग व न् दान
य न् दि ना र्थ य॥ उँ दं गु द म रु न म थ्य अ नू य व थ्य॥ उँ दं ग ध धू पू र्ण धू य व लि च ष्ट मि रु क ना न म रु क य स्य की
य न् न स्य यु मि क ना रू व अ कि य र्षि कू रू रु मि रु ना य॥ अ र्घ्य मि रु स्वा हा॥ वी दि र्म नै यै॥ ॥ रु मि॥ १ ध व ध्या ग रू सं
रू न् विं य रू ऊ स म प्र रू क मा न अ कि द रु न् अं ग व य न मा म्य दं॥ ॥ दान वा क॥ अ र्घ्य॥ म दा दान॥ १ अं ग व द व ना अ म्

रिम.

कस्य आयुषा वा गकामूनार्थं वज्रमयमिदं अन्नाद्यन्तुस्यं ज्दं दक्र ॥ संकल्पयाम्यहं ॥ विदिसंनय ॥ ३ ॥ वृद्धया राव
ना ॥ कमाय विमदल वकांशकाय विदुः कृगुवृगधमकुलकवक्रवा विवृद्धस्याहं पीतवर्णसर्वत्र परजास्यां ज्दं
सूक्तमकुवृद्धवृद्धनं मत्स्यमावमृगकभल ध्यागधप्रसविताव्य ॥ ॥ पुजायाय ॥ उं पीतवृद्धनं नमः ॥ व
ठ ॥ गमाय ॥ उं पीतवृद्धाय वीतवृद्धनं नमः ॥ व
मः ॥ ॥ जाय मकु ॥ उं वृद्धाय स्वाहा ॥ ॥ धनजा
हं ॥ ॥ अर्थ ॥ वत्त ॥ वेदुः ॥ उं नमो वृद्धाय सामसूनाय ॥ लादितिष्ठताय रुद्रिण पुष्यं धूपदीपप्रियाय कमना वृ
यदवदानव जाकिनीसहिनाय ॥ अवनव शृगवन्दानयन दिनाय ॥ उं दं गदमे कुलमध्व ॥ अनूपवम्भूदः

१३

पुष्पं धूपं दीपं दिवलि कथयिष्ये कृतां नमो भगवते नमः प्रणिमिक नारु भक्ति पुरिं कुन् वृद्धाय ज्यैष्ठ्य मित्र
स्वादा ॥ **॥ कृति ॥** प्रिय गुण लिकास्यामा सामसामगुणा यन पुनमा मिभ जिनें मं ॥ **॥ दान वाक ॥** उं वृद्धाय सा
मसूमाय वज्र मय दवमाय वद्ध दवमा ज्मकस्य आयुना नागका म्नाथ दक्र क्षा संयुता वया म्यदं ॥ विदिमं न्य
॥ ४ ॥ **॥ वृद्धस्य मिया रावना ॥** नना उरु य जीनां सा जाय विदवदा वृग धम मुल क गुन न य का कर न व र्ण रावक
भभ्रु ज्मसू मं ॥ वृध वं राज नद धिदु ग्ध य न म धू धूपं विहाय ॥ **॥ पूजा याय ॥** उं यी म च द नं नमः ॥ **॥ वट ॥**
मव वाचं ॥ उं यी न ज्ञा पु वी रं नमः ॥ **॥ वरु ज्जम ॥** उं यी न पुष्पं नमः ॥ **॥ वखान ॥** उं म धू धूपं नमः ॥ **॥ धूप ॥** जाय म नु ।
उं रागां सद्यो य स्वादा ॥ **॥ उं क्रि नरु कि मय दार वया म्यदं ॥** उगुनः **॥ कृ भूजा ॥** स्वाजा मधि ॥ रुत किं सि ॥ धल मरु

॥ **अर्घ्यवत्तपुष्पलागा** ॥ उं नमो गवतः वृहस्पतये जंगमसूनाय देवगुणाध्याय अक्रास्य कुलदेवमायपीत
 वसुगन्धयुष्यंधूपं प्रियाय देवदानवयक्रगन्धर्वप्रियाय अवमवशरुगवन् दानयमिदिमाथय ग्रहमकुलमध
 अनुपवम्भदयुष्याक्रमादिप्रमिगृह्णानं नमास्तु नयस्यकीयममस्यप्रिकवाहवभानियुसिंकव अर्घ्यप्रति
 कृत्वादा ॥ **सुमि** ॥ देवानां व अथिनां व गुनुका अनसनिर्गयममूकिमवाका (अथ नमामि वृहस्पतिं ॥ ॥ १४
दानमाक ॥ उं वृहस्पतये रुमिसूनाय देवगुनु याध्याय अमूकस्य शयुवात्राग्यकामनार्थं हृदंस्वरूद
 क्रनासंप्रदायवाम्यदं ॥ **विदिसंनय** ॥ ७ ॥ **शुकया** **रावना** ॥ नमो गिदलवकपाशाय विवचनगन्धमकुलकमु
 क्त्यांशुपतवस्तुधाविशुकवर्ह उदामकूटी अक्रसूत कमकुलधवकीवाहा जनमस्यादयंकर्पुवधपंविशाय ॥ ॥

युजायाय ॥ उं (धमवचन नमः ॥ वट वडसि ॥ उं (धमजहाय विमं नमः ॥ वरु ऊजम ॥ उं (धमपुष्यं नमः ॥ य
वखान ॥ ॥ जायमकु ॥ उं जसुवाकमाय भुक्ताधिपनय स्वादा ॥ उं सुधक्रिन्नराऊनं संघदाय यास्येदं ॥ रुगुन
॥ विवैर्जा ॥ रुधि मधि ॥ रुन नासि ॥ मन मयदा मचिकं ॥ ॥ उं ग वं धूपं सयराय यासिदं ॥ धूप गधं ॥ ॥
ज्य ॥ वत ॥ रुव ॥ उं नमास गवम भुक्ताय रुगु सनाय वेवावन कुलदवनाय भुक्ता वरु पुष्य धूप दीप पी
याय उर्वगात्राय दवदाम वगधर्वा सुवसदिना य अवमवृश गवन् दानय निहिता धयि रुदं गृह म कुल
मध्य अनूपव्यथ पुष्य धूप दिय वलि कयु मि गृह नां नमासुन यस्य कीयन नस्य पीनिक वा रु व भु मिं कुनुभु
क्ताय अर्घ्ययुनिक स्वादा ॥ ॥ रुनि ॥ धारु संघ सत्री वस्य देह्या नां यवमा गुरु सर्व आसु उ वका वं गाग वं यन मा म्यहं ॥
दानवाक ॥ उं भुक्ताय देह्य गुरु व अमक स्य आयु वा ना ग काम नार्थ रुद वज घटिन धनु संघराय यास्येदं ॥ विदिस मय ॥

॥ ३ ॥ अनीचनयाहावना ॥ गमानेअखदल शीमयकजायलिनीलवचन गधमकुनकअनिधुवकषुदिगंवत्तः
 ज्जुसुगुकिविधवर्जुन मत्तमाखरुकांसवगधवसधुयादयविहाव्या ॥ पुजायाय ॥ उंकसुविचचनंन
 म॥ चेटाउासि ॥ उंदविमउाहायविमंनम॥ ॥ वरुज्जम ॥ उंदविमयुष्यंनम॥ ॥ साकूज्जमनिस्वान ॥
 ॥ उंगधवसधुयंनम॥ ॥ ध्यागंधवम ॥ जायम ॥ ॥ उंकववर्जुयस्वाहा ॥ ॥ उंकूचमक्रमराजनसंयरा
 वयामिदं ॥ ॥ मासखिविचिउा ॥ सुगुळ्मधि ॥ ॥ रुतगुममसि ॥ मरुहाकूहामविकं ॥ ॥ अर्थावत्तानीनः
 ॥ उंनमारुगवम गावीधनाय ॥ आदिह्यपुठाय ॥ ज्जुकाखकुलदवनाय ॥ नीववासपुष्यधुपदीय ॥ यियाय ॥ कूर्मवथसमा
 दुराय ॥ दवदानवकुमुसदिनाय ॥ ज्वमवररुगवन्दानयर्गदिनाथयगुदमकुलम ॥ ध्यावंग ॥ उंदयुष्यधुपः

विरुसंनय ॥ ४

दीपवत्तिक्ष्णमिष्टकमानमास्तुनयस्य कियन्मस्यपिमिकलाहवभानिं कृन्मनिधवाय अर्थयुनिकुस्वाहा ॥ ॥
कुमि ॥ १ रिनाजन इमिदहं विपुर्गं महागुहं कथागर्हसंरुनं भनीधवं नमाम्यहं ॥ ॥ दानवाक ॥ १ मनीध
वाय सूर्यासूनाय अक्रोश्यकूलदवनाय अम् कस्या ज्ञायनात्राणकामनार्थं वृद्धं स्वकृदक्रनासंयु
राषयाम्यहं ॥ १ ॥ वाङ्मयातावना ॥ नमो वा युवा दक्षवर्काहाजापविगधमकुलकनाइकायाविक
मजावर्गहा अर्द्धदहाडुकाकनावरुक्कटिक मत्रनाम १ पंचवर्गमघमध्यगमा रुद्रा ह्यात्र दुसूर्यकम
रिनयनसंस्तिन १ अस्यामांसा मिखराजनं विहाव्य ॥ ॥ पूजायाय ॥ उं हविमव दनं नमः ॥ चट अमिगु
॥ उं हविटज क्षापविस्तकायनमः ॥ वस्तु ! जडम ॥ उं हविट पुण्यां युनिकुस्वाहा ॥ हाक् आरावा निस्वान ॥ जाय मरु

रिम

॥ॐ अमृतप्रियाय स्वाहा॥ ॥ॐ माषकसनरुकि संयुता मयाम्बुदं॥ हामजा॥ हाकु मधि॥ रुत कर्वसि मरु नि
सिचिकं॥ ॥ अर्घ्यवत्त विदाल ॥ॐ नमो गवत नादवसिंहि सुनाय अमृतप्रियाय कद्वदामयुष्य धूपदीपवनि
कपुतिग कमानमा सुनयस्य किथिनि कपारुव अक्रियुष्टिंकुपुनादव अर्घ्यप्रतिष्ठ स्वाहा॥ ॥ दक्रनाडाह॥ ।
सुनि॥ अर्घ्यकाय महावीरं च चसूर्याग्रदसकं सि हि कागरु संरुनं पादुगुदं नमाम्बुदं॥ ॥ दानवाक॥ ॐ नमो
दवसिंहि सुनाय कवि सध्वदवनाय अमृतकस्य ज्ञायना गायकामनार्थं नरुनघटितखड्गसंयुता मयाम
दं॥ विदिसंनय॥ ८ ॥ कद्वयाहावना॥ नमो भूभनदल वकयभापविवा कालकमानवत धूमवर्षकमानं जलिनाम कनि
कपूरुनयुनपुनकं राऊनमत्स्यदयसकल धूपं च विहावा॥ ॥ पुजायाय॥ ॐ विविधचन्दे नमः॥ चठः पियं पु॥ ॐ वि

विष्णुहायविमंनमः॥ वसुः ऊरुमः॥ ॐ विविश्रयुष्यंनमः॥ नानावर्गस्वां॥ ॐ सर्वसधुयनमः॥ कस्तुभ॥ ॐ घृणय
नकंराजनसंप्रदाययाम्यदं॥ शिवविशिजा॥ यथेयकुडमधिकाय॥ दत्तयामधिसि॥ मरुदुष्टविकं॥ जायमरु
॥ ॐ अग्निकनवेनमः स्वाहा॥ ॥ अर्घ्यवत्कक
यस्वर्गकुलदवमाय वासपुष्पधूपदीपधिया
रुगवन्दानयनहिनाथयः गृहमरुमध्वयवि
नस्यथीनिकनारुवभानियुष्टिकुक्कनव अर्घ्ययनिकस्वाहा॥ ॥ रुनि॥ यलालधूमसंकास नागगृहनिवासिनी
नुद्रावोद्राकंयावकुरु रुयंनमानमः॥ ॥ दानवाक॥ ॐ कनवकाश्वयभुनाय स्वप्नयागदस्य अमकस्य जाय

रिम

नात्रागकामुनार्थः प्रज्जमयमिह, कृगदकृधसंयुतावयाम्यहं॥ विहितं मय॥ २॥ ऊन्मया गावना॥ उं स्वगावभु
ज्ञा, स्यादि॥ ॥ यजायाय॥ उं (धनवचनं नमः॥ यद, वला॥ उं (धनं ऊहाय विमं वासस्य स्वाहा॥ वस्तु, ऊजम॥
उं (धनं पुष्पां यनिकु स्वाहा॥ पुननखां, यनखां॥ उं कयुनधूपं यनिकु स्वाहा॥ श्रीखरु, कयु॥ उं दधिक्रीवरुकां मु
य (धनं कयाम्यहं॥ धविजा, कलिजा॥ लाधि, मधि॥ रुल, ममसि॥ मन, रुद्रा मविकं॥ ॥ स्वरमकुनजायया नं
य॥ ॥ यन, अर्थ, नत, मत्य॥ उं नमो रुगावत, ऊन्मदवनाय, वेलावनकलदवनाय, सूर्यामनस्मिताथय,
नक्रुदवनाय, भकवासभुजग, भुजयुष्मा, भुजयहाय विम विद्या, दवदानवकु रुददानिनी सहिताय, जवमव
रुगावनमनूयानां हिताथय, रुद्रं गुरुमकुलमध्वरुपविश्व, रुद्रं मरुजयुष्मा धूप, दीपाय हावच, वलिच, यमि,

[illegible]

॥ ॥ थनंलि, रुधूकू कूया कर्म विसर्जनयाय ॥ किंनर, मधुन, दव, विसर्ज, धयाय मड ४॥ ० ॥ धीलि, ऊरू
आदियनं थायनायाय ॥ यू, रू, कू, कू, सयं, मन, यक, गर्व, मिल, वमि, ऊरू, ऊ, नि, द्वायकं, सिधम्, अरु, रू, ना,
दसवल्लि, खालवलि, लादां मावा, लि, विंवा, स, उा, कू, का, वि, कं, ना, ॥ धनि, धाय, नायाय ॥ ॥ ० वा, स्यं, गुन्
मधुलयाय ॥ यक, गर्व, क्राय ॥ यक, गर्व, विय ॥ सिध, व, नय ॥ लि, स, मा, धियाय ॥ ॥ थनंलि, रि, मल, थ, कि
याययिं, रू, दि, याययिं, ल, स्व, रू, दय ॥ थडा, २ अरु, म, स्व, लि, वायाडा, अ, स, ख, लि, वा, स, स्व, न ॥ गुन्, म, उ
लयाय ॥ यक, गर्व, विय ॥ ॥ धीलि, कू, सयं, मन, नागया, द्वायकं, सिधम्, सि, वल, मि, ऊरू, ऊ, नि, अरु, ०, रू,
ना, धनि, यू, ज, म, जान, र्थ, याय ॥ ॥ थन, अग्नि, धाय, ना, अ, ग, ना, दु, नि ॥ ॥ यू, वां, द, डी, यू, जा, द, व, ना, दु, नि, याय

॥ धूमिधुनकाडा. कूलदडायाम. यलिकर्मनं. दसकर्मयाय. यमिष्ठायाय ॥ ॥ धनहिमनयक्रियाय ॥ मिथ्यायाम
 हावनाय ॥ लासोमिलक्रायाय ॥ धनंलि. स्वकलिविंताऊनकं. गारुमास. मासकलक ॥ ॥ नायिकहायुजायाय ॥ वृ
 सिधनं. क. सरवायक ॥ जलकयक ॥ ॥ धन. पिडासमूडयालखनं. यचथावीलकं. गुनू. संखनंलय
 ॥ धविलस्यन. ज्यवानंययं ॥ ॥ दनं. कंसख. लासधनाडनयागु. यक्षमनस्नानयावक ॥ ॥ सिऊरव नं
 लास. धनाडनयागु. यक्षगा. व्यविया ॥ ॥ धन. सि ऊरवलासधनाडनयागु. पंचाडधधिन. सविप्रसयपनया
 चक ॥ ॥ सिऊरवलासधनाडनयागु. पचावलाकनं. लयनयाय ॥ ॥ धन. ज्वरामलनं. मालकूयक ॥ ॥
 धन. आर्वकर्मिक क्लेशनस्नानयावक ॥ कऊरवलासधानगु. यचगधनंलयनयायक ॥ ॥ धूमिधुनकाडा. क्रायाया

मिमञ्जुश्रुत्यकं

॥ धनं लिख्यवाक्यक ॥ स्वस्तिवाक्यदयः ॥ ॥ धनं लिख्यवाक्यक ॥ स्वस्तिवाक्यदयः ॥
 पत्न्यामय ॥ धनं लिख्यवाक्यक ॥ स्वस्तिवाक्यदयः ॥ ॥ धनं लिख्यवाक्यक ॥ स्वस्तिवाक्यदयः ॥
 विमानस्य स्वस्तिवाक्यक ॥ स्वस्तिवाक्यदयः ॥ ॥ धनं लिख्यवाक्यक ॥ स्वस्तिवाक्यदयः ॥
 ॥ ॥ धनं लिख्यवाक्यक ॥ स्वस्तिवाक्यदयः ॥ ॥ धनं लिख्यवाक्यक ॥ स्वस्तिवाक्यदयः ॥
 लिख्यवाक्यक ॥ स्वस्तिवाक्यदयः ॥ ॥ धनं लिख्यवाक्यक ॥ स्वस्तिवाक्यदयः ॥
 लनि धनं १०८ वान ॥ धनं लिख्यवाक्यक ॥ स्वस्तिवाक्यदयः ॥ ॥ धनं लिख्यवाक्यक ॥ स्वस्तिवाक्यदयः ॥
 य यामधि गवमधि सिद्धास्वा माय ज्ञानं धनं नल्य ॥ ॥ धनं लिख्यवाक्यक ॥ स्वस्तिवाक्यदयः ॥

कय. कूँ दकासनं. कूर्याय॥ थडीर सधादकृष्ण कय॥ खमाशन॥ मांभ्याय॥ ॥ थनंलि. काय. कय. कूर्याय. थमि
स्यनं. सलकाश. ऊहमकुल. उयक. स्वचाऊ. नानावाय. थयकं. क्रियाऊजायाय. स्वलिवाकयदयाश॥ ॥ थनंलि. थडीर
थसंनयाश. यक्षहिषकविय॥ ॥ दवयमिष्टाया य॥ मालसा. धिदात्र. आदू. विय॥ दभवलि. विय॥ वाकपूजाया
य. यस्तिनामपूजायाय॥ ॥ थन. शिष्या. धिवाशन. शिष्यादू. नियाय॥ मकुल. धिल. स्वानवाय. पूरुह्याय. किमन.
॥ क्रमायनयाय॥ आशिवाद॥ विसकृष्ण॥ सयंनमय ॥ गुनुइ. मानाइ. वरुदानविय॥ चिनपूजा॥ ग्वयकं. यसूका
विय॥ वाधनकय॥ निमचाविय॥ गुन्यान. दक्रनाविय॥ सषादू. मियाय॥ नागयोधय. कय॥ कभलशक्याय॥ दभवलि
कय॥ ॥ थनंलि. काय. कय. कूँ. यतिह्यनं. विमानसालकं. विमानसजास्यं. दसजाऊजन॥ ॥ थनरस. वलिवि

य॥ ॥ धनंति जातधूनकाज थडा पिखा लघुतः लख जानन नस्यं लमाया डाइन काय ॥ ॥ धनंति थडा कस खा
 ज दक थिं थो दिगु लि समय थनि थाय नायास्यं कामा लि पूजायाय ॥ कमा लि कय ॥ कमा लि या खान सिद्ध ल काय ॥ स
 मया वज ॥ कड ना रु लि याय ॥ मधि रु लि कय ॥ ॥ कलं कय ॥ ० ॥ धनंति वि (भवतं म कूट पूजायाय ॥ य
 लि कर्म धूनकाज ॥ ॥ लम धिनं लि रु न लूय ॥ ॥ धनि सयं गल सयं विय ॥ ॥ गन वज याय ॥ धमां गलि ८१
 माल का क्रिया याय ॥ ॥ धनंति (भव व नि विय ॥ ॥ गीत मान का याय ॥ द भय नि नय ॥ माह १ दं ४ ॥ मन म क ल
 लडा काय ॥ मुख सु धि क खान क काय ॥ मुख सु धि विय ॥ ० ॥ ॥ इति हिम व थ क्रिया विधि समाप्त ॥ ॥ धनंति
 सनि कू कू ज हं व ड थियाय ॥ डाऊ ला डान ॥ यक ना य पूजा डान ॥ ॥ धुनि हिम व थ क्रिया विधि रु ला ॥ ॥ भुग ॥

[illegible]

लियाय॥ कलसन्ध्याभ॥ ग॥ सस्यामहाकाव्याः वसुधाया धलनिया० यानक॥ ॥ धनमधुसूयुजा॥ पुलांदयुजा
 यायधूनका॥ यलिकर्मनः॥ ग्रहमधुसूयुजायाय॥ ॥ कुलदेवयान॥ दुर्गलकर्मयायसकनां हिमत्रथया॥ थं
 उ॥ थंयायक॥ ॥ धनंतिमनिकुं ऊं ऊं जा दियतं॥ ऊंया॥ थं॥ मोलकं विधिकर्मथयनायाय॥ ॥
 ० वास्यं॥ पुजाशय॥ ॥ अश्वदीपनं॥ मालकायुजाः यायं॥ ॥ धनदन्धयुजा॥ दवनादुजियाय॥ ॥ धीलिमधु
 लसपुजाकर्मयाय॥ संखलनं॥ हाय॥ उंखं॥ अ हायदुंरुट्॥ ॥ वजनं॥ अधिष्ठानयाय॥ उंमदनावजीरुवः
 वजवंधुं॥ ॥ धन॥ जाय॥ धूपनिलांजनः॥ लाहामिवका॥ ॥ ध्यानशावना॥ उंवंकायात्यनामूर्वर्हवर्हल्लिमासनः
 स्ववत्तमकुटधाविहीः॥ सर्वलंकालरुविशीद्विद्वद्वर्षाकनिषड्जावत्तम॥ इतिह॥ रुकात्रतविधवीवधन्यमशुलि

विजयीयस्युक्तकपर्यक्तं स्वर्गकृतं भाविनां नवयोवनसंपन्नां वावयन् पवनमध्वरीं ॥ **आ. पां. यु.** ॥ स्वाध्याय ॥ उं वसू
धाय स्वाहा ॥ उं वसू धिया म. वसू धव स्वाहा ॥ उं लक्ष्मीरुमनिवासिन स्वाहा ॥ उं वडधव सागव निर्यायाय न थागनाय
स्वाहा ॥ उं जार्याविना किमनाय स्वाहा ॥ उं वनू शना य स्वाहा ॥ उं विविक् कुत्रीये स्वाहा ॥ उं कवीमावी (त) स्वाहा ॥ उं
मख डाय स्वाहा ॥ उं उवव डाय स्वाहा ॥ उं गुफेदवी य स्वाहा ॥ उं सवधनीदवीय स्वाहा ॥ उं वडकाकादवीय स्वा
हा ॥ उं माशिरु डाय स्वाहा ॥ उं पूरु रु डाय स्वाहा ॥ उं धनंदाय स्वाहा ॥ उं वे श्रवणाय स्वाहा ॥ ॥ **कर्म (थं) पूजाया**
य ॥ सुक्ति ॥ ॥ रुगवति वसू धव शानमूर्ति नमाम्यहं ॥ गनशकुलमना न था ना विधीमद्रु सिद्धि अममगुणनिधानं कांचनं
नत्नवर्षवद्भुज नवहस्ता गवां नत्नकृपां ॥ ॥ **धनवति विय ॥** उं वसू धव नीदा विडडु ॥ खह न वदं वलि गृह २ सर्वध

नधन्यवसूधनमांदहिददापयखाहा ॥ ॥ धनंलिदवयुजा ॥ दवनादु नि ॥ ॥ धनंलिदवयुधक्या यायकन
 स्वस्यंदय ॥ स्वस्तिमनस्यं ॥ गुनुमभुलदनक ॥ मनयुजायाय ॥ विसर्जनयाय ॥ यक्षगव्यविय ॥ लाहाग्निलका ॥
 ॥ ॥ धनस्वक्यलिविवासा ॥ क १ कनविकं ॥ ना ॥ धनिस्यं ॥ धनंजानकाडा ॥ नाहमास ॥ मासेकलकं ॥ द
 लकर्मयाचक ॥ ॥ धंलि सिलपनिनाहस ॥ अथनस्यं ॥ पक्षधविनक्रं ४ सनं ॥ पिउसमुद्रयालंखधना ॥ ६३
 ज्यनंनय ॥ गुनुगं संखनंनय ॥ ॥ धनकंस ॥ रसनासक्यागु ॥ पंचानननंनानयानक ॥ ॥ दनंमिजरवतासथ
 सनयागु ॥ पंचगधनंय ॥ अथदि ॥ यक्षवला ॥ धननस्नानयानक ॥ ॥ दनं ॥ ज्वलामु स्नानयानक ॥ यक्षगधदिनं ॥ क्रम
 यनयाय ॥ आवकमिक ॥ कृगनंनानयानक ॥ ॥ धनंलि ॥ धं ॥ ज्ञासुमसं ॥ नयाडा ॥ धलि ॥ सधं ॥ विय ॥ पीन ॥ वरु ॥ दिगनास्यं ॥ नडा

ज्ञय वस्तुननियक। यद्रूपं सूर्यक ॥ दव वनालिनं वियक ॥ ॥ थन वसात्रास्यं नात्रचानं साधः वंस्वधत्रथयः इड्ड
 नंहास्यः ऊरुमठुल स्ववाकं दूर्यक ॥ स्वस्तिवाकं यदय ॥ काय कय कय रुदि यनिस्यनं नाय अरुद्र दावक ॥ ॥
 X ॐ नकोशसः नेमनकोशसः येन ॥ ॐ नगा यः लाहागिरका सयंन नाय X ॥ ॥ यंकुल वस्वस्यं याकुल
 नंधूनक ॥ थवथ संनय ॥ ॥ थनंति दासास यडा किकुव १ नृणा ना याकाय वनय ॥ नृयालथ नय नृमा ३
 ॥ धयासिमः उदया अरुमद्रव वाय ॥ थन रुमि स स्वस्तिवायाश विमानमान ॥ ऊडा मरुदिनय ॥ सूर्यविम्बु
 वचुविम्बु जानकाडा ॥ स्वस्तिवायास्यं ॥ म्वा नाम अरुमंद्रमजायक ॥ नानावायथय ॥ कुरु धज य नाय कय ॥ या
 मधि ग्वमधि वनांमधि सिद्धास्थान नाय अरुद्र थनं नृय ॥ ॥ थन स्यनं उषीषया धाल नीवानः धाल १०८ ॥

५ गुर्वे

॥ काय. कृय. कृ. रू. नि. धु. नि. स्थनं. उ. द. या. द. का. ल. स्तानं. कृ. न. कं. ॥ ॥ कृ. ल. मु. क. य. ला. स. प. लि. वा. क. स्य. नं. अ. र्घ. या. य. ॥ नृ. ॥
 गृ. ठि. १७ ॥ च. कि. न. स्यं. ॥ थ. डी. २. स. ध. र्ध. द. कृ. श. कृ. य. ॥ र. वे. मा. रू. न. ॥ मा. न्य. या. य. ॥ ॥ थ. नं. लि. ना. ना. वा. य. थ. न. कं. ॥ का. य. कृ. य.
 कृ. ००. ॥ रू. लि. धु. नि. स्थनं. वि. मा. न. मा. ल. का. डी. ॥ ज. रू. म. भु. ल. स्व. वा. कृ. डी. ल. क. ॥ स्व. मि. वा. क. प. द. यी. ॥ ॥ थ. डी. २. थ.
 सं. न. या. डी. ॥ य. थ. ध. नि. स्थ. क. वि. य. ॥ सि. ध्या. पु. नि. ध्या. या. य. ॥ सि. ध्या. दृ. नि. या. य. ॥ द. भ. व. लि. वि. य. ॥ वा. कृ. पु. ज्ञा. या. य. ॥ सि. ध्या. ३४
 धि. वा. स. न. ॥ सि. ध्या. दृ. नि. ॥ म. भु. ल. थि. ल. कि. न. न. ॥ पु. रू. या. य. ॥ स. ना. कृ. ल. ॥ ज्ञा. सि. वा. द. ॥ वि. भ. रू. न. ॥ स. ध. न. न. य. ॥ वि. न. पु. ज्ञ.
 वा. धा. कृ. य. नि. स. ना. वि. य. ॥ ग. व. य. कं. य. स. का. वि. य. ॥ गु. नृ. या. न. व. कृ. द. न. ॥ ॥ स. र. वा. दृ. नि. या. य. ॥ ना. ग. या. कृ. या. ॥ द. भ. व. लि. की.
 ॥ द. भ. ज. डी. डी. न्य. ॥ ॥ थ. नं. लि. पि. र्वा. ल. पु. स. ॥ व. स. डी. ल. न. न. स्यं. न. स्व. स्यं. दृ. का. य. ॥ ॥ थ. डी. कृ. स. का. मा. लि. पु. ज्ञा. ॥ स. म. च. कृ.

॥ कडलायाय ॥ मुकुटपूजायाय ॥ सग्वनय ॥ गानवज्र ॥ धूमांगालि ॥ ॥ अखवलि विचय ॥ दभय निरय ॥ मन. मक
लडाकय ॥ स्वां काय ॥ नाम्बल काय ॥ ० ॥ ॐ वलथ क्रियाय विधिसमाय ॥ ॥ ॐ ॥ ॥ उं नमः जीवजसलायः
॥ ॥ गमा. मदावथ क्रिया विधिमारु ॥ ॥ गथ ॥ धलसा. गोक्रया जायुना. द २० द २ वा २ दू २. धन दन दाडा
कलकि १२०० निस्तल. चनु माखरुया. विधिकर्मः ॥ क्रियायाय ॥ दयक विधि. पूजा कर्म. याय. सकमां हिमवथ
याथं याय इला ॥ ॥ मकुल वाय रुक. उरीष ॥ विजय. यागु मकुल वाय रुल ॥ ॥ रुडीया. र्थ. पूजा कर्म
रुक. रुथ कूकूयां. सनिकूकूयां. कर्म विधिय सकल उं र्थं इल ॥ ॥ मकुल पूजाया. रुक. वाक ध ॥ ॥ अखलष
नदाय ॥ उं ख गुला रुदू रुट् ॥ ॥ वरुनं थिय ॥ उं म द दि वरु रव वरु वं धरु ॥ ॥ थन जाय. धूय. निलां जन. लासाग्नि ॥

॥ मानव क्रिया विधि ॥

[illegible]

१२ यं अत्राया रुगुमी ममु नि ॥ यमि सनाया ॥ विदि नका ॥ वज विंक्र ॥ खग वज ॥ धूय कर्पूव ॥ चट श्रीवकु ॥ वरु ज

जंम मायू ॥ यवखां ॥ रुगु खलिजा ॥ वड मधि ॥ दल पियंगु ॥ मग धल ॥ अर्थ नल दन ॥ दक्र धा नूया नल हाहा ॥ नमि
१७ ॥ १ ॥ भासा अयमर्धनीया ॥ विदि माका ॥ नील वज विंक्र ॥ रुव वज ॥ चट कसुलि ॥ धूय कंकुम ॥ हाक जार
नाटिखान ॥ वरु जज म हाक ॥ रुगु खनजा ॥ वना मधि ॥ दल गुम मसि ॥ मग हा मविकं ॥ अर्थ नल नील ॥ दक्र
धा नूया वज ॥ नमि ॥ १२ ॥ २ ॥ मसामायया ॥ विदि पुडा ॥ विंक्र सखापा ॥ पीन वज ॥ वरु जज म झ मू ॥ धूय भी
ल ॥ चट कर्पू ॥ अहखां ॥ रुगु कलिजा ॥ खल मधि ॥ दल न सि ॥ मग रुका विकं ॥ अर्थ नल कर्क नन ॥ दक्र धा नूया नल हा
हा ॥ नमि ॥ १२ ॥ ३ ॥ भीन वनिया ॥ विदि मग ॥ विंक्र विख वज ॥ म्या म वज ॥ चट उमड ॥ वरु जज म उमड ॥ मखां ॥ रुगु

लुङ्गा ॥ गव. मधि। रुल. वजि ॥ मन. निमि विकं ॥ अर्थ. वल. मल ॥ दक्र. रा. नूया. विस्व. वज ॥ नमि ॥ १२ ॥ ४ ॥ मज्जान्भव
 नीया ॥ विहि. झड. मास ॥ विं. क. पम ॥ चक. वज ॥ चट. वगव. चन ॥ धूय. कसु. लि ॥ वरु. जज. म ॥ झड ॥ झड. यव. स्वात ॥
 ॥ रुगु. साख. जा ॥ या. मधि ॥ खा. जा. मधि ॥ रुल. सुं. ना. सि
 ॥ नमि ॥ १२ ॥ ५ ॥ ॥ १२ ॥ नज. गद. या. रुगु. सुगु. न ॥
 सिज ॥ चट. चक. व. चं ॥ वरु. जज. म ॥ झड ॥ झड. व
 विकं ॥ अर्थ. वल. मधि ॥ १ ॥ साम. या ॥ विहि. राय. हा. मव ॥ यमि. संख ॥ धा. उ. सय. संख ॥ धूय. कूर्य. व ॥ चट. गी. ख. ड ॥ वरु.
 जज. म. ना. यु ॥ सा. रा. स्वां ॥ रुगु. द. ड. जा ॥ ख. ल. मधि ॥ इ. इ. मधि ॥ रुल. अ. वल ॥ मन. राय. हा. म. विकं ॥ अर्थ. वल. मा. मि ॥ २ ॥

४ अह २

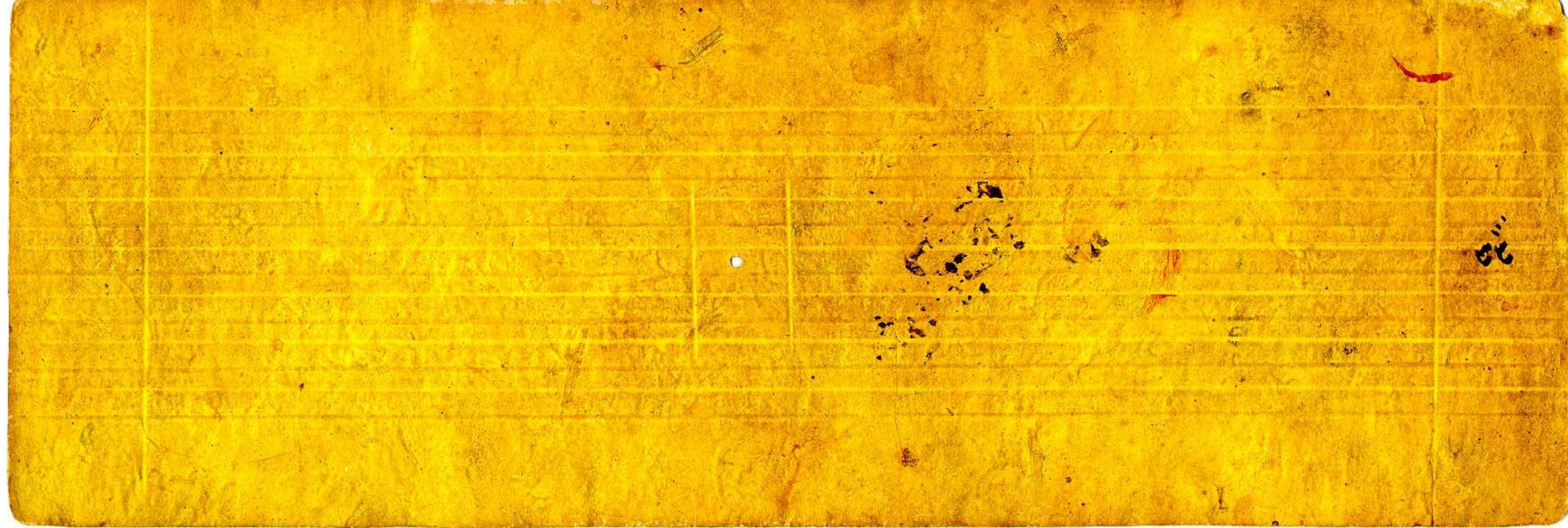
४३

॥ अंगनया ॥ विहि. युका ॥ यनि. थुसा ॥ धातु. नुस्यु ॥ धूय. युगु ॥ रुगुन्. वाकृजा ॥ वलामधि ॥ दल. नसि ॥ वरु. जजम. कउः
॥ जिदालखां ॥ मन. युकाचिकं ॥ अर्थ. नल. विदोल ॥ ३ ॥ वट. नकव. दन ॥ ॥ वृद्धया ॥ विहि. ष्का ॥ यनि. थुसा ॥ धा
तुकं ॥ धूय. सिह्नाय ॥ वट. कलु ॥ वरु. जजम ॥ अ
न. ष्काचिकं ॥ अर्थ. नल. वेदर्य ॥ नू ॥ ४ ॥ वृद्ध
वट. शिखरु ॥ वरु. जजम ॥ अरु ॥ लुमिसखां ॥ अ
॥ अर्थ. नल. नू. युष्यनाग ॥ ५ ॥ अकृया ॥ विहि. कजगु ॥ यनि. गल ॥ धातु. कज कं ॥ धूय. कृगहा ॥ वट. शीखरु ॥ वरु
जजम. मायु ॥ पथखात ॥ रुगुन्. अगु. सायनजा ॥ दिनिसधि ॥ दल. धल ॥ मन. मामाचिकं ॥ अर्थ. नल. नू. गजह ॥ ६ ॥

॥ भतीधरया ॥ विहि मास ॥ यति कप्रगुवासा ॥ धातु काल ॥ धूप गंध वस ॥ वट पच गंध ॥ वरु जजम ॥ उाउ ॥ ज
 लाया निस्वां ॥ रुगुग्मूग्म वृजा ॥ कचउलिमधि ॥ दल कर्वीसि ॥ मिमि ॥ मम ॥ हाम विकं ॥ अर्थ वत् नील ॥ न ॥ १ ॥ वाह्या
 ॥ विहि म्वात ॥ यति ख ड ॥ धातु वायुम ॥ धूप धू
 गुग्म वाटाया ॥ पुमि मधि ॥ दौ गे ॥ दल जम सि ॥ गु
 या ॥ विहि कास ॥ यति वायुम ॥ धातु पच वत् ॥ धू
 गुग्म खिविपिजा ॥ कचउलिमधि ॥ दल कसि ॥ जम सि ॥ कदा गु ॥ मम सर्वमि क विकं ॥ अर्थ वत् कर्क म न म ॥ २ ॥
 ॥ जन्मया ॥ विहि शरव न ॥ यति सिंह सन ॥ धातु हिक्का ॥ धूप श्रीख ॥ वट कस्तु ॥ पच स्वां ॥ वरु जजं नायु ॥ गुग्म धउजा

८१

॥ नाविमधि ॥ दत्त ॥ जम्बव ॥ मन ॥ राय ॥ राम ॥ विकं ॥ अर्थ ॥ वत्त ॥ विस्वमहि ॥ मुन ॥ १० ॥ थूनि ॥ नवग्रह ॥ दया ॥ पूजा ॥ दय ॥ कवि
धि ॥ ॥ थन ॥ कृदान ॥ वृदान ॥ विय ॥ ॥ सादान ॥ विय ॥ ॥ रूक्याम ॥ विय ॥ ॥ किरु ॥ निमवान ॥ विय ॥ थडी ॥ सनैगे ॥ दक्रना
विय ॥ निमकाय ॥ ॥ मंछल ॥ सनयगु ॥ वृचकि ॥ दय ॥ करुमसा ॥ ऊमवमि ॥ पुमान ॥ नयमाल ॥ मरुमसा ॥ गावा ॥ नय
॥ ॥ वृचविम्व ॥ सूर्यविम्व ॥ वृचमाखनया ॥ ल्याख ॥ पुमानंनय ॥ ॥ वृयाख ॥ य ॥ ३ ॥ डाद ॥ नय ॥ हला ॥ ॥ गृहयमि ॥ डा
॥ ज्ञात्मा ॥ विम्व ॥ थडी ॥ सख्य ॥ पुमानं ॥ ज्य ॥ कृदानया ॥ यमाल ॥ हला ॥ ॥ अरु ॥ ॥ १०३ ॥ ॥



नकुच

१

पूजायास्यः कूललयाः क्लायः । दक्षर्षिर्दत्तयः ॥ थनंलिः चालितकः । क्रापाः लाककः पा ला अ कायागुः चापाचः मदाचकः स्या अ कृ मः
दडीधायः धामः रुनकं नयः ॥ थनंलिः कलपूजाथापनायास्यः । मज्जागः थपूजायाय ॥ क्रापाः पा लागुः चापाच काया अ वियः
प अ गधः प अ मरुः प अ गवः न स्यः चा क्राय कः ॥ थनंलिः प अ नत्रः थनाडाः चाधधनयाय ॥ वाकः ॥ ३ नभारु
गवस्य वेलवनपुरुककुत्रजायः । नथागनायासं नः सत्य कं नृदायः । नयथाः ॥ ३ शुक्र २ सम २ समय २ शा न २ दान २
समाशपः जनालस्य कलस्य यस्व वनिः महागज निनालस्यः निनाकूलः निर्वान ॥ ४ सर्ववृक्षा धिष्ठानी धिष्ठि स्वाहा ॥
॥ धाल २१ ॥ चाग्वजसः पचिननीः धिस्थः स्वधनयाय ॥ थनं धूनकाडाः चाग्वजसः प अ पदात्रपूजायाय ॥ थनंलिः कर्मिं का क्र २
दवथाय ॥ प अ पदात्रपूजायाय ॥ ० ॥ थनंलिः त्राकपूजा । मकुलधिलः । किननः । सचनयः । चिनपूजा । आचस का कायः । समयाः

८२

स्यविधिः

९

वक्र॥गनचक्र॥काम्पुत्रदानं॥ ॥ॐ निचात्रियांयाकधरुला॥ ॐ॥ ॥ॐ नमो वृद्धाय॥ धनं विः तपूजायायसः कलमः
पूजाजालनसकमांः दयकाशः मजानर्थः पूजायाय॥ सकमांः क्रापाया॥ थरुला॥ ॐ॥ ॥ॐ नमो श्रीवज्रसत्ताय॥ वचीचयका
विधिकर्ष॥ दवचयकः कथुषुन॥ क्रापांः लसिध्वनः गवाय॥ सचित्रमयास्यः कायलात्रियाय॥ ॥धनं लिः दवमनः
धामः सासपिंः वथिलः सादलपलचायाशः लः पलडादपलः कयाशः वचिदवः काचिन॥ ॥पञ्चविदिः सफविदिपूजा
कुल१ नस्यः उयक॥ साकः सककायक॥ साकगी कयाय॥ ॐ॥ ॥ॐ धनं लिः पादषुनः क्रापांः मलादिपः कायकागुद
नसाः विजंपूजायाय॥ ॥धनं धूनकाशः ऊहं कथुनः पृथक्क्रगः क्रगः नागयाः सयः मरुः गव्यः पातुः मकूटः भिलक्रीः ऊरुऊ
निः किदाः आदाः लिथिसाः सादमाः खामालिवः रुगः रुगः उगः लसिः निः कत्तः त्रिडाक्षिः द्विडाक्षिः रुकुताः जासिः कसिः धपचाः निः

नरुवे
१

(थादक! कूसादक! पञ्चवत्सवः तस्वाचिकं: खपूसाकापः०० साकापः कासूपागः काउपागः पकिन्नन ॥ नृचिकः पूजाञ्जुः यां
खासिः सिजसनाः कयखनाः सिजखना ॥ धर्मसकनाः थापनायास्थं ॥ अचास्यः पूजाशय ॥ गुन्मद्युयाय ॥ गव्यस्वधनयाः
य ॥ कायः विये ॥ सिधयनय ॥ नृनायपूजाछी
नागया! कायकं: सिधमः जकजनिः धर्मसकनां प
दवनाइमिइय ॥ ॥ धनं वि नरुवेकसः सरखा
वना ॥ वाक ॥ उं नगात्रिषां न्नः दवनाः धर्मधाता! दवनाः गले ह्य गइवजधनु मधुलं विहायी ॥ ॥ धनयं वपदात्रपूजाः
॥ ॥ धनधाकाविनः जाकि स्या न जानकः वाक ॥ उं ज्ञा ॥ सर्वमथागतः सूत्रचिकः विहासनेः नमोमिः रुगवर्नः ॥ ५१ द्रुवहा ४ पकिः

विवि
२

विष्णुसं

विष्णुसं
विष्णुसं
विष्णुसं

ककुसुमांशुनाथदाससमयस्त्वं॥ धाल॥ ॥थनखपुमालिकाय॥थनघटःशास्यंधूपकनःवाक॥ॐरुगवंःजम्क
सहजविशात्राजःनमालुन॥ककुमिकाभितानार्थःपुनित्थकवृत्तात्मकःमिषाधमनूकम्यायःपुष्पाकपुनित्थायचःन
नरुकाश्चमरुगवन्पुमादककुमहसिःसमन्ता
दिःनिलांजन॥ॐ३द्वंद्वं॥॥थनदवयास
सावकःकुभनःस्त्रानयातकावाक॥ॐजम्कानि
दाखनहितस्यविःवृद्धवृद्धः॥यस्यगतामन्त्रितस्यःविवरुत्तकस्यःनत्तल्लःशवंतुनःपत्रमाहीषके॥॥थनदोसस्तानः
ककुधन्मरावयाय॥स्वस्तिवाकपदये॥॥रुनस्तानःवाक॥यत्तल्लःसूत्रनत्रासूत्रपुजितस्यःधर्मधननकथितसु

वक्रव
१

निवृत्तवस्य। लोकप्रयं प्रविदिनस्य निवालाकमलं रुक्मकुम्भप्रमासिषके ॥ यथा हि ज्ञातमाशुधा। ह्यादि ५ ॥ ॥ धनविः
जातकृतायाः मायुपातविय ॥ उं वाध्वं इह रुक्मवासस्य स्वाहा ॥ ॥ धनश्चाकापतविय ॥ उं आ ४ दिवा वासस्य स्वाहा ॥ ॥ धनश्च
यहवजासनः रुक्मवाजालः किय ॥ आ ५ दाः उगत्रसिः
सिधः गवचः माह १ दी ४ दाहात्रय ॥ ॥ धनगवच
महाकव ॥ ॥ धनवजाधिष्ठानयाय ॥ उं : मा ५ :
रुक्मथिय ॥ सं : नाहि ॥ ॥ रुक्मिणीजाधिष्ठानविधि ॥ ॥ १ ॥ ॥ धनं स्त्रानः वाक ॥ उं अश्वाद्यादि विज्ञातु ककल (भे ४)
यत्नगलं कुलीभानिः सर्वकवाजः शीवजवाजगवजसाधुसमर्जनः अश्वाद्यादि विज्ञातु ककल (भे ४)
सगलस्यः महासूखस्यः कलकलं रुक्म

धविधिः
३

उपनिषद्
मिनाथिपः

लीमपाधिः सुवज्जवाजः श्रीवज्जवाजः गवत्रसाधुसमकनः अक्रावाजः सुगनस्य महासुखस्यः नलाक लंरुवनुन अयवना
दिरिषकः ॥ **थनसापूजायास्यः** सत्राकाः अजमिनात ज्ञाय ॥ दवयाक मिखाक नक वाक ॥ उं अज्ञनं पन वं सः अ
पनिस्तजिने सुवः गलाकात्र वैय वाजनः यथासा
मक कन ॥ उं दिव्य वक्रुषस्ताहा ॥ उं धर्म वक्रुषस्ता
॥ **थनवजनः** मिखापूया उं आः हानवज्ज
सायः विसामयः कृपा मयं विम्वमावा दया यद्वरः आक सिंद नदीक तां ॥ दार्या विनिगर्तता वमिः सर्वदि (लो कधाउपः
दिव्यवक्रुः सुत्वादृष्टा नागस्य सुवमयक वंरु नं चियत् ॥ **रुमिषपतिः** दद्व न्यधकः गाथधातुसाः विम्वमावाध्याः

न
विम्वमावाध्याः

नामाकर्ष

नामाकर्ष

॥ गताऋत ॥ ॥ भक्तिः जातकर्मविधिः ॥ ॐ ॥ ३ ॥ नमो नामाकर्षविधिः ॥ धनस्नानः कर्षः वाकः ॥ ॐ नमोः स्वहृदि चोदव
नाः नामाकर्षः विहायः ॥ पद्मीपादमित्रस्कंधे चः तदभिनामसर्वाकावधुं पविर्पूज्यविहायः ॥ ॥ पुनरागतः स्वहृदया नामाकर्षः
मनुनिमार्थः ॥ दवताहृदयः पुनरागतः कर्षः ॥ धनस्नानः कर्षः ॥ ॐ नमोः स्वहृदि चोदव
मनुनः पंचामनादिः नस्वाधिकनं रायः ॥ ॐ सर्वतथाग
दिः चिन्ताकिरकतः ॥ यः सत्त्वत्रयवधर्मसक
नामकर्मः तत्सत्त्वं वहुतपत्रमाहिषकः ॥ धनऋकनः कर्षः ॥ ॐ वज्रसत्त्वः ॥ ॥ धनः ॥ लावनं किलकः ॥ ॐ वज्रकिलक
रूपनस्वाहा ॥ ॐ श्री हृदयानामकायः ॥ अमृतनामः कथागतत्वं कुरु वस्वः ॥ ॥ दवयान्गवसः वजनं थियः ॥ भक्तिनामाकर्षविधिः

कनकः
कनकः

कनकः
कनकः

कं ॥ पूर्वम् ॥ यत्कलः सकलसत्त्वादि ॥ ॥ धनपतितनः दिगम्भाय विनमः ॥ स्वस्ति वाक्यदपं विनमः ॥ ॥ धनलाहा
नकायाय ॥ धनजनककृपा ॥ धिष्ठा नयाय वाकं ॥ ॐ नमः समन वृद्धाताः ॥ ॐ आ वलः ॥ नका वलः ॥ नका वलं दद स्वाहा ॥ ॐ नः
दू स्वाहा ॥ ॥ धनदिगम्भायाः ॥ ॐ अस्तु ॥ ॥ अंगुलापचिननं कं ॥ ॐ पादाय न
मः स्वाहा ॥ दधूलाननं कं ॥ ॐ अष्टा नाय नमः स्वा
हा ॥ ॐ आ नाय नमः स्वाहा ॥ कालापचिननं कं ॥ ॐ अष्टा नाय नमः स्वाहा ॥ नकापचिननं
कं ॥ ॐ आ नाय नमः स्वाहा ॥ कालापचिननं कं ॥ ॐ अष्टा नाय नमः स्वाहा ॥ नकापचिननं
पूजायाः ॥ कलं सुय ॥ वपुयकं ॥ नास्वनाय ॥ गवः कालकाय ॥ स्वाकस्वानकाय ॥ ॥ ॐ किञ्चनपुमनवीधिः ॥ ॐ
॥ ॐ ॥ नकाकः ॥ पूयविधिः ॥ रावनाय ॥ ॐ स्वस्ति वाक्यदपं ॥ ॐ उपाय विनमः ॥ श्रीः

मङ्गलार्चनम्

कृष्णार्चनम्

नमः स्वास्ति याया रावयाय ॥ ॥ अचिन्तनी नमः ॥ ॐ वज्रं कुरुष्व (ध्यात्वा) ॥ ॥ नाना कुरु वनविय ॥ ॐ सर्वं कुरु वनवियः
स्वाहा ॥ ॥ धनं वा कुरु नित्यं ॥ ध्याय क ॥ वाक ॥ ॐ कालेन पञ्च वृक्ष मकुटं निष्पाद्य ॥ ॐ दत्तं सर्ववृक्षानां ॥ ॐ धातु कुरु नमः ॥ य
था कं पूजना र्थायः मकुटं पञ्च कुला इव ॥ ॐ सर्वं
वा कुरु हिय क ॥ वाक ॥ ॐ वज्र धातु श्व नी दुं ॥ ॐ व
॥ ॐ विश्व वज्रिः अरिषि च खं ॥ धनः पंः लोघं सु
विधिः ॥ धनं स्वान नमः ॥ रावना ॥ ॐ नरुः स्वदुःखि जनि निष्पाद्य ॥ सर्वका म धातु प्रद वना विक्रय प्रद स्वदं कृत्वा न किं
वमा गत्य ॥ ॥ धनं अधिष्ठान याय क ॥ ॐ वज्रं सत्तुं ॥ ॥ धनः धा का छिनः ॥ जाकि का स्थः ॥ राज लपः वा क ॥ १ ॐ दत्तं क

नक्षत्रे

॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

सर्ववृक्षाणां सनातनकर्मसंज्ञावपुचधर्मेषु चिह्नरावपुषकीर्तनं ॥ सत्त्वार्थचक्रियानिर्णयः कर्तव्यं वसुधासुविद्य
 त्रयनः वृक्षसंस्पृष्टागतः ॥ आस्थाविज्ञपयन् ॥ धनवृक्षसूक्तजमनः कारवायक ॥ अद्वयाज्ञानाविय ॥ उं वज्रधर्मकीः
 ॥ ॥ धनः कयलाविया ॥ उं वज्रसंधिवं ॥ ॥ धनः
 उच्छिः क्रियाविय ॥ उं वज्रराखनं ॥ रवणालाहक
 ॥ ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॥ ॥ ॥ धनः
 जात्रपाडाया न ॥ गाथा ॥ १ उं सर्वकथागतान् पुतिमाकचनिस्वरावः वाधिविह्वपानविज्ञपयन् ॥ ॥ धनपठपासं
 वाक ॥ उं वाधिसत्वरुवा ॥ सर्ववृक्षास्तु धनगतानां वाधिसत्वाः रवणभिर्याश्चकनिने ॥ निःस्वरावनिनात्रवः सर्वसत्त्वः

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

ककावर्षः नथना समना हनः वाधिविरुमिनिस्मृगं ॥ धनः धनः कवनः लिहा विष्का कस्तानपाशः सामवलिकाया ॥
 धनदवसकः वजनं धिसंजापुञ्जापयायामकु ॥ ॐ नमः सर्ववृद्धवाधिसत्त्व आः वीरव दूरे स्थादा ॥ धनज ॥ ५६१ ॥
 ॥ १० ॥ धनः धनकाशः धमषवकपनि ॥ सक संः कमाकलनंगयाडा ॥ वक्रचैत्यः क्रमिंकाक २ धावक ॥ लाहा
 सिय ॥ धनगुनमल्लदनक ॥ मनपूजायाया ॥ धनिवाक्याया ॥ धनमावसाः नत्रमल्लतवायक ॥ दवयास्तदाह
 वप ॥ ॥ धनविथडा २ थासंरुयाडाः रंवेकैनेः साजानपं ॥ वाक ॥ यावदह्यः नमामिः निधिसान्तः विवृद्धास्वयंवृद्धाः
 थावृद्धवाधमार्थः मरुयंजगादिः दधुयध्रुवं ॥ नस्मे हनः कपाभिः वज्रवर्नधकं ॥ दूरेखाकपः वाठिनः नादगगदनापमः नवि
 मनिप्रोकावः विरुनमः ॥ धनः वरवरेकसः स्थातपासलहालक ॥ ॥ धनजाकिकासः सावपंचान ॥ अथरवना ॥ सम

धनसिद्धिर्जन

धनवर्कने

नकुचे
६

चाहं नकुमां पगादिकः सर्ववृद्धवाधिसत्त्वः १ पुत्रः १ सर्वकथागतः वज्रत्रयपद्मविश्वकूलावस्थिताय ॥ ॥ हताथरु
गुनः थनील्ललणालहयीडाः गथिंमधालसाः दागुलिकलमः स्थित्यास्यः विष्ठाकपनिः हनंदगदिगमंः गुत्रिकः वृद्धवाधिस
त्वपनिः दयाडावानः हनंगुत्रिकः जीवात्मापनिः दयाडावानः थथिंपनिसुंः कृपादिस्मिनंस्वयाडाविष्ठाकशेहगुत्रः
जाडाथनिजिपनिसुंः उधालयास्यविष्ठाकयमानः ॥ ॥ सर्वमदाविष्ठाकवतांश्च हंज्मूकः नामाः दगदिक्कः ज्मिना
नागरः प्रत्युत्तः सर्ववृद्धवाधिसत्त्वानां ॥ हसि
ननायानं ॥ थरुधर्मरूपडागथिकः धालसाः सर्ववृद्धवाधिसत्त्वपनिस्यनेः धवलपाडाकपागुः नामननधर्मधयागुः थनी
पागुजकः मपथका १ पुत्रापूर्वकावसंः उत्पलिरुयाडावानथकाः संसात्रयातः महाकडाधनाडावानगुधर्मधायः थगुवृद्ध

६

यविधि
६

याः साहस्रदक्षसंः कृताधनाशानगुः धर्मधायं थुगुखशधकाः धुदलाकसंः पत्रलाकसंः माकृषदः वियाजः महा मृदायाः पुरावलायः
धकंः धानियादीनसः थडी २ नामतंक्रिताशः पथ वृद्ध संपन्नः उरुमरुयाशानगुः नक्रचैलयागुः रुकिरावनं वरुयादूनः
॥ ॥ एतकवृद्धाभा वकासंः भकनस्यप्रतिपत्ताः सर्वसुखनिकायानां सर्वपुंथमनूमादयामि ॥ ॥ हसिष्यप
निः थगुनक्रचैलयागुः धमावरुः रुयडागथिदध
स्यनः उत्पलियादाडातलथकाः थथिगुगुडाधनपुंन
अवेवर्तिकधर्मः चक्रयवरुनायः दशदिक् सर्ववृक्षानां ॥ ॥ हसिष्यपतिः थगुनिधर्मलाययासुः कपनिस्थनंयायः कायवा
कः चिरुः धिनयाकाशः थगुधर्मसः चक्रचिरुयादाडाधनलपीडाः थगुधर्मयापुरावर्तः पापसकलंः नासुरुयडाः गथधालसाः

नक्षत्र

五

दभदिगसं: विष्ठाक: तथा गत: पति स्थनं: धन लपाडा: तथा गु: न क खे लपात: स्वशधका ॥ ॥ रुगवना पति निर्वा नं: का स
नायाम्भ: पति निर्वा नाय: धावयदि कं धर्म ॥ ॥ रुगि क पति थ गु वि धर्म क पति स्थनं: रि न कं धन लपाडा: कान धावसा:
समस्तं: तथा गत पति स्थनं: निर्वा न पद लायया निमि र्ति नं: प्रा पा श्या: तथा गत: पति स्थनं: थ गु न क खे लपात: धर्म
याय गु: दाना डा चान गु: थ थिं गु धमनं: थ नि: क पति स्तं: उ धाल या क रु पाय ॥ ॥ अक्षमना ३ रि वां क्ता: सरु वं: रु या मि ॥
॥ ॥ अक्षमना ३ रि वां क्ता: सरु वं: रु या मि ॥ या यां सारु ल्य रु ला: जा डा डि पति सया: स नी वल स पाप नं: माला
डा डा नं: अ डा डि पति सया: स नी ल सं: भी न ल रु ला डि पति सया: ना वां क्ता पु र्ध रु ला रु र्ध मान या द्वा ॥ ॥ थ न अ र्घ या य: वा क भ:
॥ ॥ नम ४ वृ द्वा य: क नृ शा ला सि रु रु द या य: प ना ला सम चि ला य: रु धा दु कं मन रु ना य: स त्या नां द १ ख क रु की नृ ध्य: दि व्य ग थ न सा

सविधि॥

3

九

अथ विद्याकां

यमाय उपकुक्षमाः सर्वस्वा नां नृणां सत्यं कृत्वा धोः पुनिष्ठापनायः सुगतः वरुणाय साः दानपतिः कस्मै न कवेत्यायः अर्घ्यपति
 कृत्वा सा ॥ संखपूजायाय ॥ ॥ सुति ॥ ॐ नमस्तु सर्वसुपायः जिनधातुकत्रंडकः सर्ववृक्षालयं चैव धर्मधनुतमस्तु न ॥ येन सकि
 नन ॥ ॥ माकिलं खरायक ॥ ॐ नमस्तु सुयदिका नाः सर्वतथागतानां वापि धर्मतावलितानां ॥ ॐ नमस्तु संतुता वापि भास
 निः हव १ स्म २ सविन जाग वृक्ष धर्मत्रयः सत्र २ स मत्र २ समावला दस २ कय गल मलावलः नक्र २ साः कल २ न सागल स्वाहा
 ॥ ॥ धनसिद्धयनिस्तः लाहा गिनत्रकाः वज्रः कायाः मकः दनंताय ॥ सिका दूति द्य ॥ ॥ धनः वरुणिसर्जनयाय ॥ धन २ वक्रवे
 सदा संतय ॥ धनपत्रा सुकु कानं कनकं पुनिष्ठायाय ॥ मकु ॥ ॐ मणिमतदियः कल २ धर्मधनु गुरु स्वाहा ॥ धन १०८ ॥ धनताय अक्र
 सः सिद्धयः स्वानमालानं कारवायक ॥ वजनधिय ॥ ॥ धनं विपत्रिकमनः पूजायाय ॥ दवता दूति द्य ॥ पुष्पन्यास ॥ ऊ धर्मा

सु
 ति
 वि
 यः
 पु
 नि
 ष्ठ
 ॥

नक्रच
१०

सकनसनेऽपि यं न गङ्गा
गङ्गाय ॥ पुनश्चि न गङ्गा

॥ मन्त्र ॥ ॐ नमः सर्ववृद्धवाधिसत्त्वा जावीष दुर्वै स्वाहा ॥ ॥ धनः प्राङ्मुनिविय ॥ वंति विंयं ॥ ॥ धनः प्रतापसः स्नाननस्यं तावनाः
॥ ॐ नथापं का लात्य नं प्रतापः जिनि कांः पताका समय सत्तः नृपा विरायः नत्समय सन सत्तं स्वद्वीज कनक्षानि नः सु
मय सत्तं न विराय ॥ ॥ धनः प्राङ्मुनिविय ॥ वंति विंयं ॥ ॥ धनः प्रतापसः स्नाननस्यं तावनाः
मन्त्र ॥ ॐ वज्रकरुपताकः अधिनिष्ठयं स्वाहा ॥ सिरुं
याय ॥ वाङ्मयजायाय ॥ धनः सकनसने ॥ नक्रच
न (धेव गङ्गा वृक्षान नृक कथायनिः सहंक्रमस्यः स्ववृक्षस्य नृकं प्रा ॥ पत्रा विना द (मधः विकत्तं पंच नस्थानिः विग्नं रुव विष्णु स
सक्रुः रुलंति न संपमना वथार्थमथैव कज्जला न वं जीवशा नम् ॥ धनः ॥ ॥ धनः प्रतापसः स्नाननस्यं तावनाः ॥ ॥ धनः प्रतापसः स्नाननस्यं तावनाः

२८

सविधि ॥
१०

धिवास ॥ मनुकाका नक ॥ लोहमिनलका ॥ वजः कावाः मरुदं मयि ॥ पूर्णरुद्रय ॥ पूर्णरुद्रि ॥ जह नकाकाय ॥ सनाकल ॥ अभिर्वदि ॥
 विसर्ज ॥ सधं मय ॥ यिरुपजा ॥ दक्षविषय ॥ यत्रासुः वस्तुदान ॥ वाधं कुय ॥ निमलो विय ॥ ॥ धनं विम्ववा इति ॥ धनं सकलसनी ॥
 नरुचैत्यधियर्कः वाक ॥ १ अथ श्रीमन्मृगीभाक्कमिंदः ॥ रथागः सत्यकाम्बुवृद्धकः सद्रक्त्यः सल्लभरवः वेवममंकलः
 हिमवरुपा ॥ अश्वाद्युधियः कलिह ॥ गेः अय्यविरुप ॥ धः रूमोहा ॥ गेः नपालय ॥ गेः उपकुचयी ॥ ७ श्रीद्वकः विवपाकुरवगा
 ननाः धिवासिनः श्रीस्वयं रुचैत्यसंनिधान ॥ वागः ॥ मर्षाः पश्चिमकुल ॥ कभा वत्ताः पूर्वकुल ॥ ७ देवनगात्रः अनेगः दवा
 नयस्मान ॥ अथं x दानपतिह्यादि x ऊजमानस्य आयुवावा ॥ गेः कामनार्थः स्वस्वमनावांका पूर्णवासाय ॥ श्रीश्चक्रवर्त्यरुद्रावकस्यः
 वरुपन्या नृणावनः ऊधसास्त्राककरुवसंपदं ॥ ३ अथ दत्रश्चक्रागधुगह स्वाहा ॥ ॥ धनं रमिवाद्यावक ॥ धडाश्वासास्य

वक्रव

११

गोपविना

प्रयोगः

॥ नानावायः गिरः मंगवः गजयास्यः दधजामायादाशः किर्धसंचयकलजाने ॥ ॥ धनं लि किर्धसः रुपाविनाजः आहपलताया
जः गदावः २ गवजानयाशः नागः सावनामय ॥ ॐ जतिटिसूनामकलः विश्वांशजकर्षिकायाः मध्वजवन्धुपर्वदलः अनन
नीलपक्षिः पप्रः पप्रिमनककः उहलवाभुकिं
वह्निम्वसर्वनामनां विचिं ॥ ॥ स्थातवाय ॥ ॐ
स्वाहा ॥ ॐ महापमाय स्वाहा ॥ पप्रपरावपूजा ॥ पप्र
नककः ककाटकः पप्रमहापप्रमंखपात्रः कलिकः वन्धुपालः दवनिः महागामसिखिः दधुधनः अपजालः रुद्रनन्दापनयः साग
वमहासागव ॥ अननकः श्रीकानिः सूत्रपः महासूत्रपः रुद्राहिकः महादविः भिदिमहाभिलि ॥ आगच्छागमहानामधिपनयाः रु

२२

सविधि ॥
११

रुवस्व! दानपत्रं अर्घ्यप्रतिष्ठस्वाहा ॥ ॥ थनः वक्रचैत्यसकलं साकत्रय ॥ नागपत्रस्वाहा ॥ पूजहायः इन्द्रय ॥ कितनेरुति ॥ ॐ
मष्मिन्नाकधनुः सैव कंवर्हिर्गमयाभिषाणः मन्त्रैर्पायः दवनाः पूजयामि ॥ कृत्वा अत्र नन्दयामि सम्पदं चैव ॥ २ ॥ प्रतिष्ठस्व न
नागाधिपतिविग्रं निष्ठुम्भभानलं प्रभादक ॥ ३ ॥ ॐ धि
कृत्वा ॥ दवनापनिष्ठकलं अकाशं धराविष्ठाक
लाहात्रयाय ॥ दिगुसमयकृत्वा ॥ कृत्वा लिङ्गाय ॥ दि
य ॥ समयात्रक ॥ कठला ॥ सग्वनकाय ॥ गनचक्र ॥ कलंकाय ॥ ताम्बूलगमथा ॥ ॥ थनमात्रमा ॥ स्पष्टवलिविय ॥ गीतमात्र
कंयाय ॥ खमामधुलथिल ॥ धंविनिहाला ॥ माह १ ५ ४ दसपतितय ॥ सिधूपान ॥ ज्यलात्रय ॥ मन्त्रकाय ॥ ॐ नित्यं चैव विधिसमाप्तं ॥

वक्रच
१२

मसुपागमपनयाकृतिः

॥ थनंलिः नारुनउनसाः श्रीधर्मधारुस्काः ! कृगपूजायाय ॥ दवयूजायाय ॥ निसत्रारु १ काय ॥ चाकपूजायाय ॥ कितन ॥ गनाक
व ॥ अग्निर्वदि ॥ सघंरय ॥ चिकपूजा ॥ दकृष्णविय ॥ विसर्जनयाय ॥ ० ॥ थनंलिः सानिपत्रस ॥ रुनसाः गाविपूजा ॥ मरुनसाः लससि
आजालंपूजायाय ॥ दवयूजा ॥ कितन ॥ चिकपूजा
पंधिय ॥ थनंलिः आकृसकोकाय ॥ समयः गनचक्र
उय ॥ ॥ स्यगुसः मासवर्कः मासउपागनवा
वलियाक १ नपासनापाक १ विहिसनापाक ३२ निसनापाकः मालकं ॥ सलिरुग्वतः मालकं ॥ ॥ ऊऊऊऊलं ॥ हांसिः सिंकर ॥ विहिसाः
दयकरुक् ॥ हांसिः ऊऊऊ पदि ॥ सर्वउषदि ॥ भुसारु ॥ मधरा ॥ धूत्रन्दगुत्रि ॥ गवतः गवतः बाल ॥ जमसि ॥ सिमारुलदकं ॥ सकिनादकः

उपागः
१२

मम उपासने

ॐ नमः ॥ जजम ॥ पञ्चपञ्चम नमधि ॥ रुः अं कः जः दालः पञ्चपञ्चमः कर्णपाका ॥ अङ्गुल ॥ असंखत्रि ॥ कम् ॥ गम् ॥ पांखातिः सिजसलान ॥
कयखला ॥ सिजखला ॥ नचिह ॥ यज ॥ अङ्गुमालक ॥ जादू कि कूत्र १ वत्रमकुल ॥ वायन ॥ असंखत्रि ॥ सिजसलान ॥ पञ्चपञ्चम ॥ नचिह ॥ यज ॥
ल ॥ गुत्रः मात्राः वस्तुदान ॥ स्वगुणामालाः उपासनान ॥ कः लसिकसुयासुः वस्तु १ वियममात्र ॥ ॥ धनं विः वगुर्दमिष
न ॥ क्रापां लसिधनः सखाय ॥ सुविस्वान ॥ या ॥ कायत्रात्रियाय ॥ किनापुष्टकाः रुकिजदकमाल ॥ ॥
धनं विः सकिषून्ः मलादिपः कायकलशान ॥ क. लक्ष ॥ पूजाजाल ॥ ॥ सांकिपत्रसः लसिसिआजालः थापिरु १
कर्मसः मालकां ॥ खाजसम्रवः साऊनयाय ॥ ताम्रवदान ॥ ० ॥ धनं विः सकिषून्ः क्रापां सगुम्वदशकुशन ॥ ऊरुथा
पनायाय ॥ विहिवाय ॥ पूर्वाक्षिः कलसः सघं मरुः नागपाः गवाः पादः मकट ॥ वत्रियात १ धरुस्थापनायास्यं ॥ ० ॥ अवा

मा स उ पा

सं: कला कायक नमो ४

१२

सो: गु न्म धु ल या य ॥ ग व्म ध न या य ॥ का य ॥ वि य ॥ सि ध न य ॥ म धु ल धि ल ॥ स्ना न वा य ॥ कि न न ॥ वि स र्ज न ॥ लं ख व त्रि क य ॥
स मा धि या य ॥ म ज्जा न र्थ: क स पू ज्ञा या य ॥ अग्नि स्था प णा या य ॥ अग्नि कृ ति इ य ॥ द व पू ज्ञा या य ॥ ॥ ध न लि उ पा श न: चान क
या न ॥ गु न्म धु ल द न क ॥ म न पू ज्ञा या य ॥ प य: ग व्म वि य ॥ ॥ ध न: था व दू स व त्म म धु ल वा य क ॥ प य प रू त्र पू ज्ञा !
॥ ४ द क णा का य ॥ सा ल सा: व त्म म धु ल या र्व न ॥ ॥ व दू न त्म या र्व क न ॥ क मा प ण या य ॥ था ल रू ङो नै क ॥ अ र्घ या य: वा क ॥ १०१
॥ ॐ स न र सि वि र क ल श प व र द व र हं हं: की की दू दू ॥ ॐ वा न व क व र: व ध र धि वि र ध व र न व र म व र व व र न कि
श क स रू ध: पु ति म न्दि क: ॥ लि ल: क ल श न प र र ग वं: सा मा दि ह्य ज म व व र क व र: व क दू स वि द व: ग (श सि रू: च व क म ला
य अ र्घ पु ति क स्ना न ॥ ॥ मं ख पू ज्ञा या न क ॥ कि न न ॥ ॐ आ ता म नि र्म ला रू मा: नि ष प पं वा: गु णा गु य: प य व द्वा म को ना अ रु म

श वि धि ॥
१२

दुष्प्रयत्न नमः॥ ॥ धनं विः मल्लुल विसर्जनया न कं॥ न त्वमल्लुल ज्ञानकाशः दवयास्तः दाह सप॥ धनं लिः आहूति विय॥ द
 शवलिविय॥ ॥ धनं लिचाकपूजायाय॥ शिष्याधिवासनयाय॥ लाहानिलकाः तज्जायाः मरुद नं माय॥ शिष्याहूतिद्वय॥
 सिद्धय॥ मल्लुल धिल॥ स्वाशवाय॥ कितन॥ प
 सधनय॥ चितपूजा॥ दकनाः वस्तः दानविय॥ बाध
 विः धय॥ नागयोः कलश धयः कलश सज्जायाय॥ व
 स्यं जानकं॥ दवचाकडयकं॥ रुतसाज मरुतसाश्चाकडयकं॥ गाथा॥ उं ओकाशधारु रुवयवः तथा गत रुयत रथेव
 गच्छं वक्षान्तरु कथायति॥ सखकमस्तः दवहंसया नृकं पा॥ पूजाचितादशेषः विकल्पेः च न स्यान्निविष्टं रुवविष्णुसहस्रं

मा. स. उ. पा.

१३

निरुसंघमकत्रथा र्थमथैवकजसा नदंडी वसात्रम ॥ धात्र ३ ॥ ॐ ॥ ॥ धनंतिः अतिपुलस ॥ कृमाविपूजा ॥ स
गन ॥ मरुः पाद्र ॥ थापिंश ३ थापत्रपः पूजायायः धूनकाडा ॥ पीअदिपूजायाय ॥ मधुसुधिल ॥ सोननाय ॥ किरुन ॥ क
मापन ॥ आशिर्वदि ॥ विसर्जन ॥ सघंतय ॥ मादनि
यम ॥ ल ॥ पिननंगक ॥ कृकपूजायाय ॥ उपाग
लः खधिसं ॥ रुं सि ॥ पकडा ॥ नः थनं स ॥ उा नग ॥ उ
। दवसक लयातं काय ॥ कृमावियातं काय ॥ सितरु काय ॥ विपंथियक ॥ यलका कगातक ॥ धालः दनसिनक ॥ धविजियकातक ॥ स
कीः कलं काय ॥ ॥ धनआरुसकाकाय ॥ समयाचक ॥ विसर्जन ॥ सघंकाय ॥ गनवक योय ॥ रुमसाउपा समरीन कनेकुगः

१३
अनीधि ॥
१३

विष्णुशाय ॥ कश्याना ॥

ॐ नमः श्री वज्र सत्कार्य ॥ ॥ स्नानः ॥ दूध लक्ष्मी चिह्न कुम्भस्थापनायाय कट ॥ मध्यमः पीतः वज्र चिह्न ॥ श्री स्वस्त्युपेक्षे गंध ॥ १ ॥
॥ पूर्वसः ॥ नील वज्र चिह्न ॥ पश्चिम ॥ २ ॥ दक्षिण ॥ उत्तर चिह्न ॥ नक्षत्र ॥ ३ ॥ पश्चिम ॥ नक्षत्र चिह्न ॥ पश्चिम ॥ ४ ॥
॥ उत्तर ॥ विश्व वज्र चिह्न ॥ पश्चिम ॥ ५ ॥ ॥ ॥ चक्र चिह्न ॥ पश्चिम ॥ ६ ॥ जल ॥ वज्र लाक्ष्मी चिह्न ॥ कंक ॥
॥ १ ॥ नक्षत्र ॥ अंकुश चिह्न ॥ पश्चिम ॥ ७ ॥ वायु ॥ नृप स्वान चिह्न ॥ नक्षत्र चिह्न ॥ ८ ॥ ॥ धन स्नानः कल ॥ पूजा
॥ लावना ॥ ॐ नमः शक्ति विंका यप निनमः नाना वलं मयं कल सा ४ का वज्रं भुक्त धर्मादियात वलं विद्याया ॥ नद नृस्व स्वविज
चिह्नः पविष्टा मेनः स्वस्वय वलं विद्याया ॥ स्वहृदी जमयूषां कल नृस्व स्वस्व मानीयं ॥ संखलं खल्य ॥ धन ज्ञाप धूप निज्ञान ॥
ॐ सर्वतथागत मस्तु यागीश्वरा ईरुद स्वाहा ॥ ॥ धनं लि ॥ ॥ ॥ चक्र चिह्न कल ॥ वज्र नैथिया ॥ ॐ वज्र यक ३ ॥ पायादिः

॥ पञ्चपदावपूजाः स्तुतिः ॥ उं सर्व
 व्यापिमहाकावायः सगताधिपतिजिनः ॥ कंधाकुं मदात्राजः वेलाचनः नमाम्यहं ॥ उं नमस्तु वज्रसुखायः वज्रवत्त्राय नमः ॥
 उं नमस्तु वज्रधर्मायः नमस्तु वज्रकर्माय नमः ॥ थनः अकालमुखः वलिविय ॥ १ ॥ थनः ॥ पूर्वः ॥ नीलवज्रचिंद्रः कलभः
 वज्रनथिय ॥ उं वज्रलक्ष्म ३ ॥ आकर्षणः स्तानवाय ॥ उं अकाल ॥ उं वज्रसुख ॥ उं वज्रवाज ४ ॥ उं वज्रवागदा ४ ॥ उं व
 ज्रसाधुसं ॥ पञ्चपदावपूजाः स्तुतिः ॥ उं नमः श्री अकालायः नमस्तु वज्रसुखायः वज्रवाजाय नमः ॥ नमस्तु वज्रवागायः वज्र
 साधुनमस्तु ॥ थनः अकालमुखविय ॥ २ ॥ वकिः ॥ वलचिंद्रकलभसं वज्रनथिय ॥ उं वज्रलक्ष्म ३ ॥ आकर्षणः ॥ पायादिः
 ॥ स्तानवाय ॥ उं वलवज्रिजं ॥ उं वज्रवत्तु ॥ उं वज्रनज ॥ उं वज्रककुजं ॥ उं वज्रसुखं ॥ पञ्चपदावपूजाः स्तुतिः ॥ उं नमः

श्रीनमो वसुदेवाय ॥ नमस्तु वज्रवत्साय ॥ वज्रकला नमो नमः ॥ वज्रककु नमस्तु ॥ वज्रदास नमो नमः ॥ अकामरव ॥ ३ ॥ पश्चि
म्य ॥ पश्चिमिः कलमसं ॥ वज्रनथिय ॥ उं वज्रयक दुं ३ ॥ आकर्षणः स्वा नवाय ॥ उं अमनां राय नमः स्वाहा ॥ उं वज्रधर्मद्वी ॥ उं
वज्ररुद्रधर्म ॥ उं वज्ररुद्रगं ॥ उं वज्रराख नं ॥ पश्चिमपहा नपूजाः सुनि ॥ उं अं नमो अमनां राय ॥ नमस्तु वज्रधर्माय ॥ वज्ररु
द्राय नमः ॥ नमस्तु वज्ररुद्रवः वज्रराषः नमस्तु ॥ अकामरवविय ॥ ४ ॥ उरु नमः ॥ विम्वज्रचिंक्रकमसं ॥ वज्रनथिय ॥
उं वज्रयक दुं ३ ॥ आकर्षणः स्वा नवाय ॥ उं वज्रधर्म अं नमः स्वाहा ॥ उं वज्रकर्मकं ॥ उं वज्रयक दुं ॥ उं वज्रयक दुं ॥ उं वज्रसं
धिवं नमः स्वाहा ॥ पश्चिमपहा नपूजाः सुनि ॥ उं नमस्तु माघसिद्धय ॥ वज्रकर्म नमस्तु ॥ नमस्तु वज्रयकाय ॥ वज्रसधिनमो नमः
दं ॥ अकालमरवविय ॥ ५ ॥ अग्निमः ॥ वज्रलाया चिंक्रकमसं ॥ वज्रनथिय ॥ उं वज्रयक दुं ३ ॥ आकर्षणः स्वा नवाय ॥ उं वज्र

लाभ्यं नमः स्वाहा ॥ उं वज्रमालां ॥ उं वज्रगीतं ॥ उं वज्रनृत्यं ॥ उं वज्रधूपं ॥ उं वज्रपूजां ॥ उं वज्रद्विपदं ॥ उं
 वज्रगंधं ॥ उं नमः स्वाहा ॥ पञ्चमहावज्रं ॥ सुति ॥ उं नमो भूतनाम ॥ भस्म ॥ अक्षो लाभा मर्षाः सर्वान्कां नरुषिणा ॥ विं
 क्रदस्मा मदा कजाः अक्षो लानमा म्यह ॥ अकालमृषविष ॥ ३ ॥ नैऋत्य ॥ अंकुशविंक्रः कभसः वजनं धिय ॥ उं वज्रयकं
 दूं ॥ अकर्वधः स्नानवाय ॥ उं वजांकुभजः नमः स्वाहा ॥ उं वज्रपाभं ॥ उं वज्रस्फोटवं ॥ उं वजांवभदा ॥ पञ्चमहावज्रं
 जाः सुति ॥ उं वजांकुभकथापाभं ॥ वज्रस्फोटनमो नमः ॥ वजांवभ नमस्तुभ्यः प्रतिष्ठा कुरुतु ना ॥ अकालमृष ॥ १ ॥ वायुव्यं
 स ॥ नृपस्नानः विंक्रकभसं ॥ वजनं धिय ॥ उं वज्रयकं दूं ॥ अकर्वधः स्नानवाय ॥ उं मैत्रीद्वयधाय नमः स्वाहा ॥ उं अमापदमिन
 दूं ॥ उं सर्वपापजहः सर्वपापविग्रहधनं ॥ उं सर्वसाकनमानिर्घान्नमनिदूं ॥ उं गंधद्विपदं ॥ उं सृजगत्सवतिदूं ॥ उं वज्रं वं

२०४

कर्म ॥

चः कान्तिसोह न सस्तिता ॥ लक्ष्मीनीपमास नस्तिताः शुद्धस्फुटिक संनिता ॥ अमृजदप्यंश हस्ताः धनधान्यवप्रपुता ॥ १ ॥ उं वै
 शुवहामहादेवीः जक्राजामहर्षिता ॥ यक्रकाटिः पवित्रायाः यक्रसधनसंरुता ॥ महावेतवसंपन्नः हवपादार्चनवत ॥ यक्रवीः
 यक्रकं न्यासि १ पवित्रात्रिः विग्रहा ॥ महाकाष्ठाः नसंयुक्ताः यक्रदेवप्रसिद्धिनी ॥ २ ॥ उं नागपाशधवदंष्ट्रः वलौघप्रभिम
 दं ॥ भंभां कधवलं ध्यायाः तवदं कमलासनं ॥ आकर्षता ॥ पृथ्व्यास ॥ उं क्रीं क्रीं शीदव्ये नमः ४ स्वाहा ॥ ३ ॥ उं क्रीं क्रीं लक्ष्मीदव्ये नमः १०
 स्वाहा ३ ॥ उं यक्राय नमः ४ स्वाहा ३ ॥ उं यक्रै नमः ४ स्वाहा ३ ॥ उं वनेशं नागनाजाय नमः स्वाहा ॥ उं जननाय स्वाहा ॥ उं वासुकी
 य स्वाहा ॥ उं नक्रकाय स्वाहा ॥ उं कर्कातकाय स्वाहा ॥ उं यमनाय स्वाहा ॥ उं महापमनाय स्वाहा ॥ उं भंखपात्र स्वाहा ॥ उं क्लीक
 नागनाजाय स्वाहा ॥ ॥ पक्षपहात्रपूजा ॥ सुनि ॥ उं श्रीलक्ष्मीमहादेवीः सर्वसंपत्तिदायनी ॥ सर्वकामप्रदा देवीः श्रीलक्ष्मी नमोस्तुते ॥

नः कान्तिसोऽनसस्त्रिगा ॥ लक्ष्मीनीयमासुनस्त्रिगाः शुद्धस्त्रिगसंनिता ॥ अमृजदप्यंशहस्ताः धनधान्यवत्रप्रता ॥ १ ॥ उं वै
 शुवहामहादेवीः जक्राजामहर्षिता ॥ यक्रकाटिः पत्रितात्राः यक्रसद्यनसंरुगा ॥ महावेतुवसंपन्नः हत्रपादाचननन ॥ यक्रहीः
 यक्रकं न्यासि ॥ पत्रितात्रिः विग्रहा ॥ महासाधुः नसंयुक्ताः यक्रदेवप्रसिद्धिनी ॥ २ ॥ उं नागपाशध्वं हस्तं नलोचपूरुषि
 हं ॥ भंभांकधवलं ध्यायाः तवृष्टं कमलासनं ॥ जाकषण ॥ पृथ्व्यास ॥ उं क्रीं क्रीं श्रीं देवीं नमः ॥ स्वाहा ॥ ३ ॥ उं क्रीं क्रीं लक्ष्मीं देवीं नमः ॥ ४
 स्वाहा ॥ ३ ॥ उं यक्राय नमः ॥ स्वाहा ॥ ३ ॥ उं यक्राय नमः ॥ स्वाहा ॥ ३ ॥ उं वृष्टं नागनाजाय नमः ॥ स्वाहा ॥ उं जननाय स्वाहा ॥ उं वासुकी
 य स्वाहा ॥ उं नक्रकाय स्वाहा ॥ उं कर्कशकाय स्वाहा ॥ उं पयनाय स्वाहा ॥ उं महापयनाय स्वाहा ॥ उं भंखपात्र स्वाहा ॥ उं क्लीक
 नागनाजाय स्वाहा ॥ ॥ पक्षपात्रपूजा ॥ सुनि ॥ उं श्रीं लक्ष्मीं महादेवीः सर्वसंपत्तिदायनी ॥ सर्वकामप्रदायनी ॥ श्रीलक्ष्मी नमोस्तुते ॥

॥ १ ॥ ॐ यक्रश्च नो प्रसन्नोऽसौ यक्रधी सहसंयुता ॥ सर्ववेरुवरुणाया नमामि यक्रयक्रधी ॥ ॐ त्रिगुणात्मकानि स्रजं जलमजामला
वत्रः निम्नमश्च निविख्याताः नागवाजा नमानमः ॥ ० ॥ धनं नृनायका नमः सावना ॥ ॐ स्वतर्धमिहादिफिः चक्रमखाचक्ररुजाः
मूर्खिकवानयकः पश्चिमसलजपमाला ॥ आः पाः पूः ॥ ॐ गंगापतयस्वाहा ॥ स्वादि ५ ॥ पूजाः मुक्ति ॥ ॐ नमो यत्रयत्रयः वि
घ्नवाजा विनायकः ॥ गङ्गापतिश्च स्रजम् ॥ गङ्गाधिपं नमो मुक्त ॥ ॐ ॥ ॥ ॐ नमो श्रीवज्रसत्ताय ॥ ॥ द्धमयक्रियाविधिः ॥
गङ्गाः थापलपः मालका ॥ मल्लः किलः स्रजं मतः कुम्भः यक्रगवाः पातुः वज्रघटः मकुटः लोकपालवलिः पञ्चदशः पञ्चपताकाः
चक्रः ध्वजः श्रीथादकः कृष्णदकः पञ्चवल्कः प्रिकमां लिखिः क्रिडास्थिः स्थायतजालः रत्नाताः निवः उगः वसिः रुरुवाजालः कि
जडाः जालिविंवाः लाहमात्राः श्रीलक्ष्मीः जक्रजनीः जयविंः नृनायः धर्मसकताः थापनायास्यं ॥ गुण्यास्तथासां पूजाश्रयः

॥ गुन्मधुलयाय ॥ पञ्चव्यासाधनः कायः वियः ॥ सिधुतयः ॥ ॥ समाधियाय ॥ कलभः सघं मरुनागपाः पूजाः मधुलपूजाः
 ॥ ॥ धनंतिः पुनिस्तु दवः ॥ ॐ हि मवागाः सकलं लस्वया उदयः ॥ कमांकः ॥ उपाध्यायः ॥ किलं पूजाः ॥ किलं नायः ॥ पूजायायः ॥ सुनिः ॥
 ॥ नः कयः ॥ ॥ देवस्तुतायायः ॥ धनज्ञापः धूपः दिपः पञ्चगव्या नंदायः ॥ ॐ कूं जूं जिं खूं ॥ धनः लाहाग्नित्रकाः मरुदुतास्वा
 नः नायः ॥ ॥ धनः मवागा गुन्मधुलदनेकः ॥ मरुपूजाया नकः ॥ पञ्चगव्या वियः ॥ धनंतिः दवप्रमुखनः ॥ मवागा सकसयानंः
 ॥ सकरुदिका उायः ॥ सकरुदिका दस्वाया उः सघं नं नायः ॥ आकर्षधः पाशादिः पूजाः सुनिः ॥ स्रं जयः ॥ ॥ धनचाकपूजायायः दिग
 वविवियः ॥ मधुलथिलः ॥ किकनेः ॥ चिकपूजाः ॥ देकृता वियः ॥ विसर्जनः ॥ इमलरुत्रियायः ॥ ॥ ॐ नि दुभलक्रिया समाफभुतः
 ॥ ॥ ॥ ॥ धनंतिः सनिकूदः ॥ कापाः ॥ कलभः सघं मरु वलिः ॥ नागपाः विसर्जनः ॥ ॥ धनंतिः ॥ ज्ञेयकृधुलः ॥ कलसपूजा ॥ कभनागपाः

१०७

कर्म ॥

विष्णुसूक्तः एवमनंशुः कृष्णः ॥ मास १८४ प्रथमः

ॐ नमः श्री वरुणस्य ॥ ॐ यत्र यं प्रणिमातिष्ठं । कस्य स मातृपत्रं । न कुरु दवता सर्वः । कुरु अग्निः । न वायुः । न वायवः ।
मे नृलिना देवाः । या वरुण मदीकलः ॥ चन्द्राकः । गगः । होया वरुण विह वरुणि निश्चयः । श्री वरुण वरुणः ॥ ॥ न कुरु दवता सर्वः । कुरु
सं प्रणिमातिष्ठं । न कुरु दवता सर्वः । न कथा दानपत्रं सदा ॥ कुरु । दानपत्रं । आत्रा । गमस्तु । विपुत्र । अधर्मः । समावृद्धिः । विपु
कुरुयन्ति । विद्यार्थः । कामासु । न कुरु लक्ष्मीः ॥ सानिस्वस्तिपास्ति सर्वदा भुक्तमस्तु ॥ ॥ वीरानावा । वेद्याः । गुरुकृतावा । देवाः ।
यावाः । मधुलावाः । मधुपावाः । पासादावाः । यूपदवतावाः । अरुधातुदवतावाः । काष्ठादिदवतावाः । पाषाणदवतावाः । मत्स्यदव
तावाः । प्लुकावाः । पलादिदवतावाः । श्री वरुणस्य वृषादीः । दवता स्थापयाम्यदी ॥ ॥ यत्र यं प्रणिमातिष्ठं । कुरु दानपत्रं ।
व ॥ ॥ दानपत्रं । गार्थधातुमाः । कुरुयाः । संपुनः । दानपत्रं । कुरुयाः । आत्रा । न कुरुनः । कुरुयाः । धुगुथायसः । वीरानावाः । वी

९
प्रतिष्ठा
विहास

हृदयकंदुडा। जे हृदयकंदुडा। स्वर्धदवावा। स्वर्धया। नृपया। दवदयकंदुडा। सिया मूर्तिदवदयकंदुडा। हनंश्राहा।
हनंश्राहा। मूर्तिदवदयकंदुडा। पासादधाय। रुलेवा। सतल। दयकंदुडा। मधुपावा। धऊवा। धाय। मधुपदयकंदुडा।
जनगधजादयकंदुडा। गठकूमावा। धाय। गठीदवलदयकंदुडा। कृतावा। जनगस्वर्धनत्रया। कृणुदयकंदुडा। पूष
कावा। नो व्याकर्ध। अदि। जनग। सूर्यदयकंदुडा। गहंता। जनगमाथूनं। कदयकंदुडा। ॥ थुगुधस। कलयादानपकिरुया
डा। वानक। अमूकनाम। थ। कया। मनसास। गहंता। हृदयकंधक। मनस। थडा। चिहंउत्तर। हिरुयाडा। थथिंगुगं। दयकंधक। मन
स। हलपाडा। डाकी। कयाक। दहाडा। दिनवलासतकाडा। थ। गहं। दयकंधक। सिखा। अत्रंरुयाकाडा। श्रीविश्वकमा। अवंताल
याडा। वानक। व्यापाविकनाडा। थनिजिन। थुनिपसन्नश्य। मालधकं। अहंकायाडा। कायायगु। अलंरुयायीडा। ॥ कापांनिग

१०७

कर्मः

कृय काडाः पादस्थापनः आदिं या नाडाः निगस्त नाडाः ठूक लाहाः आदिं थामः मयकः स्वनाडीः छात्र आदि नं रुनाडा ॥ ॥ धयां चासापं
चगिरवाः प्यात्रः ऋषाः प्यात्रः थकः आदिं स्थापनाया काडाः कीथाः चाकः पविमाननंः डालिगं लछियाः पविमाननंः स्थापनाया नाडाः
मलाः वसिः रथेमाः आदिं रुयाडा ॥ थथिंगुथासः आडां मचिस्थंः सिर्धमरुडाधकमनसुता लपाडा ॥ धगुगुदसः सिषत्रालाहनधा
यः आडां चिनाडाः संपूर्णयाडा ॥ ॥ थकः आत्रपायाः पविमाननः रुयडाः गाथधालसाः नवत्रकतात्रायाः पुमाननंः आडा नूचिना
डाकया ॥ ॥ धायीमासिधायः गवयः कृसियाः पुमाननः रुयामोलेगुः कृयापमानधालसाः शीडक्रीषः वरुसत्तयाः पुरावषडा थका ॥
॥ हनंः कलिः काथाः चाकः दयकागुः कृयापरावधालसाः धिरुवधायः स्वर्गः मधः पातालयाः स्वरावषडा थकाः धनडीधायः
स्वरावतीः रुवधयाः पुमाननधायषडा थका ॥ ॥ हनंः मूसिवायागुः कृयापरावधालसाः जषाविंसनिः नक्रुजयापरावषडा

सुनिष्ठा
शिलासु

धृक्काः ॥ हनः सनकासिः नयागुः ऊगयाः पुरावः चयङ्काः वायागुः लासियापरावः ॥ चानः काप्यागुः मघयापरावः ॥ हलिः
धलिः वायागुः रुगवनीदवीधायः ॥ कादापनिः मघनाजायापरावधायः ॥ कृतत्रयनिः द्वादसनासिधायः ॥ रुनात्रधायः सफ
वात्रदवनाधायः ॥ लकांसिः वेनालः ॥ हनः प्रिचकः पुरावर्नः दयकागुः ज्वालयाः पुरावः वृद्धः धर्मः संघयाः स्वरावधायः ॥
॥ हनः पंचषात्रयाः पुरावर्नः दयकागुः ज्वालयाः पुरावः पञ्चवृद्धयाः स्वरावधायः ॥ हनः थखवः धायः पञ्चवकायाः
दवः ॥ हनः ऊडाः खडाः पसिवाहाः श्रीः लङ्गी ॥ ऊडाः खडाः नालसिः सिंवाः धृवाः दानः रूलावः ॥ ऊडाः खापाः चक्षुमधुला
खडाः खापाः सूर्यमधुलः ॥ कयप्वालः कुरुः खापाखनः कचः गः सयाः खलः ॥ हनः खयमसः नागपाभः ॥ थामः महाः
दवः मथः पार्वतिः ॥ कः लाहाः धृगाः ॥ थर्मयापमानः गः थधालसाः ननः कः थहाडनयाकः स्वाहातेः मदयकः मजिअधवः

१००

कर्म॥

५ त्वलक्षः मना मचा ॥ लखाधिः स्थवनागः ३

दयकाऽनयाः सफः सपिराप्रमाननः क्रसत्वाथ दयकाऽनया ॥ ॥ दनः क्रद नया नः वाडाः अरुडाः भिवः भकिः स्वरावश्या
डावानथकाः धनप्ररावनः दयकाऽनयागुः क्रस ॥ वानगुः रुहिः वुफ्रायनीधय ॥ दासाः मादस्वत्रीधय ॥ लादा माः कोमायिः
लादवाः वक्रवि ॥ नृसिः वानाहि ॥ उगः वृद्धायनी ॥ धनयः साम्भ्या ॥ अरुपाः महालक्ष्मी ॥ आसिः महाकाव ॥ कसिः कुमा
न ॥ ॥ थथिंगुः धानसः पाषयायस्तु ॥ दयकाऽनयागुः अग्निकानसः रुगुनिसः शीवऊऊ गिनि ॥ वायुवसः वायुदवेना ॥
उरुसः शीलक्ष्मीयाप्रमाननः धूकनिः जाकि कथ ॥ नेशन कानसः कुलदवना ॥ पूर्वदिगसः वनश्यास्वरावनः जलाघट ॥
दक्षिणसः सुसिः ॥ वृगानसः मनमकलगायाय ॥ ॥ थथिंगुः क्रसः धः कथिसः सलभकिः कथिसः लक्ष्मी ॥ नादसः धर्म
राज ॥ गालचासः अर्धर्मराज ॥ वपासः विक्रविः उमदिसः उगुनावा ॥ रुसः कुबलः कुलसः वसंधाजा ॥ धनप्रमाननोदय

३
कला
धेहले

काशः संपूर्णयादागुः थगुथासः प्रकिष्ठाः कर्ममयास्यः सान्निः मरुताधकः ॥ सियाडाः ज्मिदिनः मिथिनः क्रुः योगा
 नसः आनिकः प्रकिष्ठाः दामः मागिकावलिः पाथयास्यः आनिकः कर्मयादागुः ॥ गदरुलसाः कल्पः समापनः गथधालसाः कल्पः
 प्रमाननः थिनरुयमालः ॥ नक्रुदवतासर्वः थकयाप्रमानगथधालसाः नक्रुप्रमाननः दवतापनिस्थनः नक्रायायमालः
 ॥ ह्रपुज्यानपतिः कुरुदवताधालसाः क्रुतिः ज्मिः जलः वायुवः ॥ थगुक्रुसः ज्मिदवतायाः रुयंगुवलसंमदयमाः ॥ हनः लंखयाक
 यः गववलेसंमदयमात्रः ॥ हनः वायुदवतायाः रुयंगुवलसंमदयमात्रः ॥ हनः राजायाः रुयंगुवलसंमदयमालः ॥ थकदानपतिः
 यातः थकः पेकदवताः प्रमृषनः भयस्वकाटिः दवतापनिस्थनः थगुगदसः सदिष्टिनः स्वयाडाः नक्रायायमालः ॥ हनः
 नाताधालसाः कावकुमन्थिनादवाधायः गथधालसाः समन्पर्वसंभीरुगवान्प्रमृषनः सकलदवलाकपनिस्थनः आवास

१०८

कर्म॥

३

नायाकाऽ। विष्ठाकनलं। धगुगदसमस्तं। स्थिलेयास्यं। विष्ठाया मालः॥ ॥ नावकगंगा। महीतली। गवतनधालसा। धनपथीवी।
मछलस। गंगानं। वदलपाडा। विष्ठाकनलं। धगुगदस। जनधन। सनात। धित्रयास्यं। विष्ठाया मालः॥ ॥ चन्द्राकगंगनडावक।
दनं। ग। थधालसा। आकाससं। वन्दु। सूर्या। दवकापनीस्थनं। समउलाडा। विष्ठाकनलं। धगुगदस। वासयाकपनिक। नवगुद।
दवकापनिसंनं। नक्रकुतात्र। गधपतिस्थनं। सुदिष्टिनं। स्वयाडा। नकायाय मालः॥ ॥ नावकुरुवकुनिश्चित। धाय। धलातं। धगु।
गदसं। थिलयाकाडा। विष्ठाया मालः॥ ॥ कुवदानपति। श्वेव। शान्तिपाकिं। रुवकुसर्वदाह। ग। थधालसा। थगुकुलया। दान।
प्रतिरुयाडा। जानक्रयाहलसां। धगुगदस। दयकायापस्थनं। धक्रऊजमानया। दिर्घायुः। धया। आयुजाला। थरुयाडा। सर्वलाग।
नासनं। लाग्याधिसकलं। नासरुयाडा। त्रिर्मलसत्रिददहय मालः॥ ॥ धान्यादि। चहुषष्टि। पापूवकि। धगुत्रिकुटांगन।

ॐ नमो श्री वज्रहृत्वाय ॥ पुनिष्ठायाय ॥ इ सकृदुपनायाय ॥ गवस्तदवपुनिष्ठायाय हस्त ॥ अदवयापुनिमधुलतय ॥ विहित
उयकः कलसुनंतयक ॥ पूर्वनीलवज्र ॥ विश्ववज्र ॥ दक्षिणसुवतचिद्र ॥ यमिषमः वकायस ॥ उरुय ॥ विश्ववज्र ॥ विदिगसुवाय
नीः मामकिः पाधुला ॥ वक्रविद्रुक्तगुठ ॥ दमलक
लाभ ॥ विद्रुक्तय ॥ कलसुगानंदिनः ॥ अखियतः कृष्ण
पलातयः साइइतयः कृष्णकिसलितय ॥ पूजा
गव्यः पाणः द्रायकः सिम्हा ॥ गुह्यरुलसायं वसालि ॥ अदिः अकवादि ॥ अयनायाय ॥ ॥ थनः अवायः गुह्यमधुल ॥ यंवग
व्यंथाय ॥ सिधुतयक ॥ गुह्यरुलसायं वसालि पूजायाय ॥ ॥ दशरुलसायं पूजाः मरुनिसाधन ॥ अदिकायः गाङ्गाय ॥ ॥

मधुलधिलकिन्न॥ ॥ नदिनमस्कायकाय। कर्मथं विधियाय॥ ॥ मधुलविसर्जनयाय॥ ॥ तिसमाधियाय॥ ॥ उपाध्या
या॥ हवामः किलननयाश। मूलआचार्यया। ऊशसः व्याह्वयमवाय। किवनथायनायाय॥ ॥ किवनस्वानकृष्टाननस्यं तावना
शं। अटितिधूंनयाननकयं। नजाननविहं। दंज॥ विधव
ऊयाकाय वज्रयंजल सलजालविमान। मध्व॥ ऊगइ
यूपात्त। यवावृत्ता। वेलोक्त विजया। यवनामा वज्रहं
कुम्भनकल्याननल वज्रलमविचिसुमयः कवल्लयनिवनिखिलजगविघ्नवृत्तान् नीलपीतहविन मूलसुव्यववक्तुया दंशुकट
ललजिह्वः पुतिमुखं सऊ॥ कटिल वक्तुवदं। जिनजंष मूजामख बाललाट ह्। यक्कयाल गवावलद सुक गिल॥ अगीरुयग

मन्त्रगुमाला खया ध्याधुर्मावलपिगाई कलकपिलकनल ४ कककादिनागनाजा ककक ४ वा वजयधुधवा र्यां वजमृष्टिद्वयं
 एलग्नं कनिष्ठाद्वयं ४ खलिकं कर्जनीद्वयं ४ एहं मिति ४ तैलासवीजयमूडायास्वाह ४ एहमायनं ४ सवाकवा र्यां ४ अं कभाया सो
 वामा र्यां कया लखदाग दधना गार्जुं काल ४ म
 ४ हं कायास्व विनत दधका धवू समर्थयत ॥ ॥
 स्नान १ एक मर १ प्रकानीया बाल चूर्ण कत लेखन
 पत्रिकर्मन पूजायाय ॥ पूष्यनाम ॥ वज्रं नथी स्यं ऊय ॥ मनु ॥ ॐ ज ४ हं ॥ यधर्मा ॥ अका वा मूरव र्या ॥ ॥ थनउ पा ध्याया
 कि न गाय ॥ मनु ॥ ॐ य ध घा टय २ सर्वदृष्टान हं रुद्र ॥ स्वादि ॥ ॐ द्यादि न्यप विवा नान कोलय २ हं रुद्र ॥ ॐ ॐ द्या य स्वा हा

कि न गाय पूजा

[illegible]

लंनमामिदं ॥ ८ ॥ उईउषी ॥ पंलांघं मुक्त ॥ वक्रदक्षादिह नावं महापु तिस नायक ॥ हातं वक्रदक्षः ममास्य वृषीषवकुवलीन ॥ ९ ॥ अई ॥
॥ सुक्रयाजा ॥ पंलांघं मुक्त ॥ हनागसु बह नावं वजाय न क वं गु वि ॥ सुक्रिया लिगितं नीलं सुक्रयाजनमाम्यहं ॥ १० ॥ सिदिगसे धृति
॥ ॥ धनलिः कलसरावना ॥ धूयः नीलाजनः कषद ॥ कापूजायाय पूष्यन्यासः ॥ ला ॥ यथा वादनः सुनिः तर्प्यनः प्रवह ॥
काजा हाडाः कुसुमवज्रदक्षाः जययाय यधर्मा ॥ ॥ अकालमुख्या ॥ ॥ धनमधुलपूजायाय ॥ पूलादजा पूजा ॥
साकललनस्य ॥ आकर्षनः ॥ धूयः नीलाजनः स्नानः प्र ॥ जा पूष्यन्यासः ॥ माहनि साधनः यधर्मा ॥ अकालमुख्यादि ॥ ॥
॥ ॥ धनवलिवियतया वलिः ॥ मसानवलिवियः ॥ काहायक पूजायाय ॥ ॥ धनः कूलदजायातः विजा धिष्ठान निस्थं ॥ जातक
मविधियायः ॥ वज्रादक्षनायाय माल ॥ ॥ सतरुदिकायाय ॥



प्रवेदनयताय

नायूय	१
दाकूय	२
कनूय	३
कडूय	३
आडूय	१
अवूय	१

विका कला लं कुल पालः थुगु थामः वि का नाजः नय पल वः प्राप्ति पति स्था जी प व सः क नूता न या जः न काया स्म वि का य
मालः ॥ धनं (थं) न पतिः ऊजा मानयाः स कलः पति वा न या नः न काया य मा लः ह नः ग रु वा स या का जीः वा न पति स्म न
स्वा या का जीः ऊ न धनः स ना नः ल श्रीः पति प र्थ या का जीः अरु म हा रु यः रु व न या का जीः कु ल पा ल या गुः अरु वि धि नं पति
प र्थ या का जीः श्रु त नं वि का य मा ल ॥ ६ ॥ ॥ थ नं तिः स मा क लः धा ल ३ स्व धा ल प द पः ॥ क मा प न ॥ पति स्म रं १
कु गुं पा य के ॥ पति स्म द क र्माः मा ह १ ५ ४ सु य ॥ थ ज २ स र्वा द क र्मा यः क मा ह न ॥ पति स्म रू जा सु य ॥ ४
थ नं तिः पति क म्म (थं) पू जा य य ॥ ऊ धं मा अ का ल मू ष द क र्मा ॥ द व रु मि ॥ आ हू मि वि यः द स व वि वि य ॥ वा क पू जा ॥
मि ष्या धि वा स न ॥ मि ष्या हू मि ॥ स धु ल धि ल ॥ स्ना न वा य ॥ कि न नः पू षा रु ह य ॥ पू र्ण या य ॥ सि दं नू य ॥ आ मि र्वा दः म धु ल
ध यः स चं न ॥ शि न पू जा ॥ द क र्मा वि य ॥ वा धा न रु य ॥ ॥ स्य वा हू मि ॥ स म या च क ॥ क उ ला ॥ ग श च कः ॥ मां मू लः गु रं ॥

१८६ गुगुका
१८७ सिधत्रंगा
१८८ त्रिषयन
१८९ विवृदिः
१९० नागयथ
१९१ त्रगनसुत्र
१९२ नानावर्ग
१९३ ऋणः
१९४ यत्नाक
१९५ तुमधि
१९६ त्रयज्ज्व
१९७ चयचा
१९८ वानया ४०
१९९ चयचा
२०० रुज्या ३२
२०१ गमाना
२०२ शोः नृगोः खोः
२०३ निस्त्रि
२०४ नमकः ६५
२०५ निस्त्रि

१ ऊ। गधजानं अया. पा ३२ शोमि. का ३२ सिंनधु

२ रु म्रका. पमका. ज्दशाल. ऊर्जं. वृंगा. मान्

हृन्ना. ऊ। गधयानं. नोसावृन्ना. युमिनावृन्ना.

१ मासाऊर्जं. युमिनाऊर्जं. ॥ दिगुयु ४

२ वषथ. गव ५ वषथियान मानक

२ मिथकायन. कोय. कु १४. आसीधदिमाक.

२ स्तवी. पुजाजंगुमाक. नयध. रु २ कर्हिधु.

२ रुदिधु. आलसासाया. कथरवलागव २

२ मिजखलागव २ नशीसिगव. कभुलापु.

२ यांरवासिगव. मिजसमायान. गवव. मासाक

२ ऊधुडमादि. ॥ आलानवय. ॥ वृन्का. ॥ मिध. ॥

२ यधस्वा. ॥ स्वयन्नुयकं. ॥ स्यनु. ॥ गवलाच. ॥ धउ.

२ यन. कथदमासनय. धयनायाथ. ॥

२ यना. वरु. ऊर्जना. कंकुम. कपु. निम. नयनयाय.

२ वुसिध. पुजासिध. क्रु. ससिध. ॥ गालाव. पवर

२ गंध. करुलि. कयु. शोवि. ऊमअयदि. सर्वउ

२ वदि. ॥ सगाना. मधंशो. धुं. च. नुलि. पचप्रक

२ मममधि. वाकु. मधि. ॥ गवल. गवय. माक

२ सकिनादक. सि. मारुदका. पकरवला.

२ जसमल. दयगी. दिग धुज. ४ निवुड.

२ ऊजानासपन. ॥ वरुजाधयन. इदक.

२ सारवय. धसय. जाकि. कु. नलजाल.

२ रु. जाकनह. कयकं. सियम. रु.

२ पा. गवल. ४ वृन्सायान. धनपकायाविधि

२ पानिष्ठाकर्मयादयकविधि. ॥

२ रुड. कभगव ४. गांक्रभगव ३२ नागाप.

२ वृन्नागवय. अयवागव ५. विदिसनायान ३२

२ निसनायान ३० नयासलापा. २ वलिरगव २

२ निसिन्नि. ऊकऊनि. गव ४. ररुवा. जासिकसि

अय. धय. गवय. ॥ धधधध. ॥ धधधध. ॥ धधधध.

२ वषथ. वषथियन. ॥ धधधध. ॥ धधधध. ॥ धधधध.

२ माक. ॥ पअयमा. ॥ धधधध. ॥ धधधध. ॥ धधधध.

२ यग. अयमग. ॥ धधधध. ॥ धधधध. ॥ धधधध.

२ मिथुयि. वाक. रु. ॥ धधधध. ॥ धधधध. ॥ धधधध.

२ स. माकि. पानि. ॥ धधधध. ॥ धधधध. ॥ धधधध.

२ न. असाहयान. काड. ॥ धधधध. ॥ धधधध. ॥ धधधध.

२ पाग. नंदिप. मासि. ॥ धधधध. ॥ धधधध. ॥ धधधध.

२ रुदि. सनो. व्यान. ॥ धधधध. ॥ धधधध. ॥ धधधध.

२ क्रो. उ. नो. लप. रु. ॥ धधधध. ॥ धधधध. ॥ धधधध.

२ वष. धय. रु. ॥ धधधध. ॥ धधधध. ॥ धधधध.

२ वष. धय. रु. ॥ धधधध. ॥ धधधध. ॥ धधधध.

१ समस्तदिक्का॥ मि, कमां निगादिमिवा
 २ शसिमुक्तान् किदाऽमदाः स्वस्त्यमिनिविवा
 ३ वाकले॥ साविकं कल, नस्यं॥ रवागो निवः
 ४ रुगः रोगम॥ उगाः स्वमिः स्वपुसा काप, ॐ वा
 ५ २ नृववाऽदकलः नृमलः साद विविं यमि
 ६ काभाः नृपयऽदपय, नृवि, पुजा अं पु यम
 ७ नत्ति॥ यारयासि, सिउसमा कउरववा सिउ
 ८ रवसा नडा सिउव० कभुमाय
 ९ सउजायथना ककुन० सारवय० यनय०
 १० सादइय० पु० सै जायनसमा ल कं रु नमला
 ११ दि ॐ व्या दिं ना नृनृयुजं नंद यक इ सा ॥
 १२ १ जालसा गाग १ ५ रु थ १ यगायय १ क १ ५
 १३ यालमधि, यवनमधि, वेगोमधि, सि र्वासाः
 १४ मिनुयानृजालं॥ वि, मान् चाक, ॐ म, मिध
 १५ मस्य, यिथि लशं, डिशा, नृला, नृम्या, दालदि
 १६ २ नृमिध, पुजासिधः, मासमिध, यथेनाथः
 १७ सगाथेना, मधं, र्ना, उहाउ मधि, सर्व
 १८ उषधि, द्वावि, जयमसः, भुं, धया, न स्वा
 १९ मया॥ नवल, नवयः, क म, मका, पसका
 २० नवयकं, आसं मनि, मालक, यलक मि,
 २१ नवम, सादइ, आद, कि क १ यलपु

१ मभुलवाय, अमिकासमा, अकिासनमः
 २ दयविधि॥
 ३ २ नृवकि मसं
 ४ २ अरवकि मया
 ५ २ नृपयवदयन
 ६ २ यकनतया ३
 ७ २ मिउ या, जाकिमाया १ ५
 ८ २ कयस्वनायव १
 ९ २ सिउरववा नव १
 १० २ सुमिध, पुजासिध, पचगध, नस्वा, नृउवि
 ११ २ गुका, रुयिसाम, ॐ का, पुका, ॐ ॐ वा र्नासा
 १२ २ रु, ॐ, केदा, सिसारुल, धउमों, कंनोय
 १३ किंनोय धलिवा, कक, निमना, थनि कि थं
 १४ सक किनं ३ १ थिसा यमान्, सानदक १
 १५ दं १४ सक किनं, कदक १ ५ यमा, विथ
 १६ मा, गुनुसकिननं, इसा॥ ॥

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय



विश्वनाथ

१ २ ३ ४ ५ ६ ७ ८ ९ १० ११ १२ १३ १४ १५ १६ १७ १८ १९ २० २१ २२ २३ २४ २५ २६ २७ २८ २९ ३० ३१ ३२ ३३ ३४ ३५ ३६ ३७ ३८ ३९ ४० ४१ ४२ ४३ ४४ ४५ ४६ ४७ ४८ ४९ ५० ५१ ५२ ५३ ५४ ५५ ५६ ५७ ५८ ५९ ६० ६१ ६२ ६३ ६४ ६५ ६६ ६७ ६८ ६९ ७० ७१ ७२ ७३ ७४ ७५ ७६ ७७ ७८ ७९ ८० ८१ ८२ ८३ ८४ ८५ ८६ ८७ ८८ ८९ ९० ९१ ९२ ९३ ९४ ९५ ९६ ९७ ९८ ९९ १००

२ अथ नक्षत्रादयः विधिः ॥

[illegible]

१ जाललासा. पात २ दासा पात ३ झर्ति.
१ लय २ ३. उदि ४ २. सिता भात २ ३.
१ लाह मात ३. बाता भात ३. उगा. नृसिंह.
१ कोसं वदि मात ३. य मात २ ३. कु १ ५.
१ मभुल गा. क १ ७. रवय मात ३. कु १.
१ हंजा कोय कु १. पथर व ३. काय. मात ३.
१ ववयाग. पथर व ३. १ पथर गा ३.
१ वनासि गव ३. मात ३. पात ३. व ३.
१ १ कय वि ३. सेन पात ३.

२ गुन्, माघा, निम्नरु, वरुह २, नवयका
 पसका, कृष्णरुका, माक, ठंगा, ऊडं
 आरुठंगा, माक, वरुह, ऊडं, वरुह, ऊडंग
 वरुह, वरुह, माक ॥ ऊडंग, माक ॥

२ ना सो ऊ ऊं. पु नि स्वा ऊ ऊं पु १०८
२ ना सो ऊं ना. पु नि स्वा ऊं ना. पु १०८
२ दि गु. स्व न ना ना क

१ य च य ना प. मा क. ॥ वृट या न ध उ पु ४
२ य च ल क्ता. ध उ. पु. ५ न व गु ल ध उ पु १०
३ य च द ग प ना प. पु १ ५ गी क अ क उ
पु ४ २ पु क क उ पु ४ य नि क्ता क्ता ना न १
४ क ल भु प को. मा क. व र नि नं द य क
५ नि उ डि. कि उ डि कि वा या न १
६ य च न क्ता या न. व ल क्ता ५ व भु नि
७ न ग गु र या न. व ल क्ता १० व भु नि
८ पु भु क्ता अ या न. क ल अ ग. ना उ क
९ पु भु क्ता ना. ध. व द गु नि. १० ६
१० सां वि ५ १ उ (ग उ व दि दं १ स र्द्ध उ व दि दं १
११ पु गु. भू या. न र्त्ता. व या. उ (ग वा स. मा क.

२ ययः ययसु आसिः सुखाय क्खलु मधंरु
२ रुं कदा सोमिरे सुदेय क्खु को

२ सकिना दय क्खु क्ख ॥ यय क्ख क्ख मम वि
२ ओरु कि क्ख १ व रुजा थ यन पुअम कि
क १ साखव पु २ यल पु २ मुइइ क्खने १
कमि पु १ नयन कि मा कं कि भि यो न जवय

मा कं ॥
२ यकि का जाले ॥ खय पु सा का य क्ख १ रुं चा का
य क्ख १ चा सा खल म क्ख १ पु नि न रु क्ख अण
ऊइ यानः स न रु दि का १ रु हि स ना क्ख य
सं य ना सिः यान अ ना न य न व व वी य
२ रु मि रु नां नि शा छि मि चा मि क मा
१ कि दा अ म ल सु क सि वि वा ॥ सि च य
न जाले ॥ सु ख वा रा क्ख लः न म सु अर
सि धिः स ना का व र्णि च वि जाले

२ यय न का या वि क्ख ॥ नु या न ल का सा ॥
नु या व रु ॥ नु क्ष दो व रु ॥ नु या क्ख स
र वा या ॥ नु या य म ॥ नु या वि भ व ज म
अ म स क म् म १ उ मा न न य मा य ॥ —

२ दान या न गु र प कि मा क म नु या न य १
नु या का य ल्या क्ख १ नु या का दा ला १ १०८
अरु का ला ला १ ०८ ॥ नु या गु रु वि नु ना
अरु या व रु वि नु ना मा २ म अ ल या न
नु व कि म् म १ अरु व कि ना मा १ नु अ रु
या न १ अ र्थ या न नु व कि न नि १ २ दि कि रु
नु य न अरु य न रु १ यय न ल या न १

नु वि नु जा क्ख नु मा क ॥

२ न ज न रु ॥ म नि ॥ क्ख के न न ॥ न ॥ चा शा न ॥
रु न ॥ नी स ॥ पृ ष्ठा ना ग ॥ वि दा ले ॥ वि भ व म
नी ॥ य म ना ग ॥ म ले ॥ ज न न ॥ वे इ र्थ ॥
मा नि ॥ उ वा न ॥ अ म अरु या न न प य न
क्रा या न न रु ला ॥ ॥ अरु या द क्ख ना ॥

२ न १ अरु १ सि रु १ न १ क य क्ख १ क से १

क्रो १ र व पु स ॥ सि ल १ दा म ॥

२ या र वा सि न व १ सि रु स ना या १ क न र व ला
न व २ सि रु र व ना न व ३ का य ना या १ सु र व
न व १ पु ज रु रु १ ना ला य न व १ क य १ रु वि
नि क्ख रु द य क मा ले ॥

१ नडा॥ लिख १ कभुनाय १ ॥ क्रदां॥ वृदां॥ मादां॥
 २ माधना॥ मयमधि॥ वनाधि॥ मान्ना॥ द्दमधि
 ॥ किमथ॥ स्रमधि॥ वयामधि॥ नद्रमधि॥ प्रवि
 मधि॥ रवलमधि॥ रुनीमधि॥ सडमधि॥ चादि
 लगन्ना॥ नममधि॥ चाक्रनामधि॥ लाक्रमधि॥
 कचशालि॥ निसनामधि॥ गवन्ममधि॥ यक्षप
 कशममधि॥ अक्षमममधि॥ वनांमधि॥
 २ पुनयाकवाचक॥ वंनयावय॥ नाक्रम॥ नाग
 या॥ शीलमि॥ ऊर्कजनी॥ नडकअ॥ चाक्रद
 माकिम॥ अक्षमंगान॥ रुयगां॥ वंदिसना॥
 जालसामा॥ वासाख्या॥ विनसादा॥ वैजनासा १६
 २ पुयागुजालं॥ वषथ॥ वषषिय॥ यक्षपना॥
 जालनदन॥ यनासिरुन॥ उमिरन॥ अंवनद
 यनरुन॥ अयमायादन॥ निवृज॥ व्यादा॥
 नागयं॥ कभेसा॥ ऊगयान॥ यंनवन६

१ विदिवनजालं॥ ॥ जगयानविदिना ३२
 १ नउगुदयाजं॥ ॥ यक्षनक्रायानविदि
 २ रुथिदामय २॥ लाकलामय २॥ वंकाय २
 युकाय २॥ सिथिदामय ३॥ मूनय २॥ स्वां
 उमय ३॥ नकय २॥ गुंलामय २॥ कयगु
 य २॥ मायगु २॥ न्वानगु २॥ कोलय २॥ अ
 खनय २॥ पूडमकन॥ ॥ माककन॥ ॥
 १ सिमारुनना॥ थियंयु॥ गुमममि॥ कनव
 मि॥ वयमि॥ किंसि॥ मिमि॥ नमि॥ वसि
 ॥ नांसि॥ मममि॥ विंवसि॥ स्वांमि॥
 सननामि॥ कमलामि॥ रंसि॥ याममि
 रुमि॥ खवर्वजा॥ केदा॥

२ स्वायागा॥ यनस्वां॥ भिकसंस्वां॥ लनाइस्
 मालनिस्वां॥ कांडस्वां॥ मधस्वां॥ कांरपन
 स्वां॥ वडास्वां॥ उरुस्वां॥ चस्वां॥ नृषिस्वां
 काडउरुस्वां॥ अरनामिस्वां॥ असयस्वां॥
 काइनास्वां॥ मस्वां॥ अइस्वां॥ गुननस्वां
 नरुनास्वां॥ मकलस्वां॥ जिलस्वां॥ धडास्
 धकिचापान १५

२ वन ॥ वसिध ॥ पञ्जसिध ॥ कभुसिध ॥
२ पञ्चगव्य ॥ शीतल ॥ नक्त ॥ ककुम
व्यावना ॥ वल्लव ॥ ककुमि ॥ असि ॥
कभसि ॥ शतुनि ॥ ककुमि ॥ मसिध ॥

धृष॥ कर्पूत्र॥ कस्तुत्रि॥ कुंकुम॥ नक्रचन्द्र
रत्नचन्द्र॥ भद्राला॥ धूप॥ सिन्दूर॥ सिक्काय
दवदाल॥ अमृत॥ वान॥ बालदन्त॥

स्नामचिकं ॥ शिष्यस्नामचिकं ॥ गायस्नामचि
कं ॥ ॐ काचिकं ॥ प्रकाचिकं ॥ स्वभाचिकं ॥
शुचिचिकं ॥ निशिचिकं ॥ दधिचिकं ॥
यत्न ॥ साधन ॥ सिध्यन्त ॥

१ रुजा ॥ निरुजा २ ॥ धनिरुजा २ ॥ वाकृजा ३ ॥
यल्लुजा २ ॥ ककुजुजा २ ॥ वनाजा २ ॥ नाटा
का २ ॥ दामका २ ॥ ऊटका २ ॥ मूवका २ ॥
षिवि विजा ३ ॥ ॥ धनी नष्टे ३ का धूम

२ वनिजालं ॥ वकुल ॥ स्वांक्रिया ॥ ज्ञान
साक्षात् ॥ कुलं ॥ गुरुलोक ॥ माया ॥ ज्ञान ॥
जगन्माया ॥ स्वांक्रिया ॥ स्वना जगत् ॥ दि
व्यभक्त ॥ रवाना ॥ वाक् ॥ पान् ॥ वि ॥



२५००. गुरु मन्त्र स्यात्तास
वायुः पञ्चभूतानि भूः भव
गुरु यागुः विद्विष्यदि गुरु
पद्मि वरुः कर्तुं यकापार्थः

१ भूतदुःखमुखात्मा
याह्या कर्मभयना॥





2587